॥ॐ॥
॥श्री परमात्मने नमः ॥
॥श्री गणेशाय नमः॥

॥ अथर्ववेद संहिता ॥

॥ अथर्ववेद ॥

॥ अथ विंश काण्डम् ॥

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

॥ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विषय सूची

सूक्त-१........ 11
सूक्त-२ 13
सूक्त-३ 15
सूक्त-४ 17
सूक्त- ५........ 19
सूक्त- ६........ 22
सूक्त- ७........ 26
सूक्त- ८ 28
सूक्त- ९ 30
सूक्त-१०........ 32
सूक्त-११........ 34
सूक्त- १२ 39
सूक्त- १३ 43
सूक्त- १४ 45
सूक्त- १५........ 47
सूक्त- १६........ 50
सूक्त- १८ 62

सूक्त- १९ 65

सूक्त- २० 68

सूक्त- २१ 71

सूक्त- २२ 77

सूक्त- २३ 79

सूक्त-२४ 83

सूक्त- २५... 87

सूक्त- २६... 91

सूक्त- २७... 94

सूक्त- २८ 97

सूक्त- २९ 99

सूक्त- ३० 101

सूक्त- ३१ 104

सूक्त- ३२ 107

सूक्त- ३३ 109

सूक्त- ३४ 111

सूक्त- ३५... 119

सूक्त- ३६... 126

सूक्त -३७... 131

सूक्त-३८ 136

सूक्त-३९ 139
सूक्त-४० 141
सूक्त-४१ 143
सूक्त-४२ 145
सूक्त-४३ 147
सूक्त- ४४ 149
सूक्त-४५ 151
सूक्त- ४६ 153
सूक्त- ४७ 155
सूक्त- ४८ 162
सूक्त- ४९ 165
सूक्त- ५० 168
सूक्त- ५१ 170
सूक्त- ५२ 172
सूक्त- ५३ 174
सूक्त- ५४ 176
सूक्त- ५५ 178
सूक्त- ५६ 180
सूक्त- ५७ 183
सूक्त- ५८ 189

सूक्त- ५९ 191
सूक्त- ६० 193
सूक्त- ६१ 196
सूक्त-६२ 199
सूक्त- ६३ 203
सूक्त- ६४ 207
सूक्त – ६५ 210
सूक्त-६६ 212
सूक्त – ६७ 214
सूक्त – ६८ 218
सूक्त – ६९ 223
सूक्त-७० 228
सूक्त-७१ 235
सूक्त-७२ 241
सूक्त-७३ 243
सूक्त-७४ 246
सूक्त-७५ 249
सूक्त-७६ 252
सूक्त-७७ 256
सूक्त-७८ 260

सूक्त-७९ 262
सूक्त-८० 263
सूक्त-८१ 264
सूक्त-८२ 265
सूक्त-८३ 266
सूक्त-८४ 267
सूक्त-८५ 269
सूक्त-८६ 271
सूक्त-८७ 272
सूक्त-८८ 275
सूक्त-८९ 278
सूक्त-९० 284
सूक्त-९१ 286
सूक्त-९२ 292
सूक्त-९३ 300
सूक्त-९४ 303
सूक्त-९५ 309
सूक्त-९६ 312
सूक्त-९७ 322
सूक्त-९८ 324

सूक्त-९९ 325
सूक्त-१०० 326
सूक्त-१०१ 328
सूक्त-१०२ 330
सूक्त-१०३ 332
सूक्त-१०४ 333
सूक्त-१०५ 335
सूक्त-१०६ 337
सूक्त-१०७ 339
सूक्त-१०८ 346
सूक्त-१०९ 348
सूक्त-११० 350
सूक्त-१११ 351
सूक्त-११२ 353
सूक्त-११३ 354
सूक्त-११४ 355
सूक्त-११५ 356
सूक्त-११६ 358
सूक्त-११७ 359
सूक्त-११८ 361

सूक्त-११९ 363
सूक्त-१२० 364
सूक्त-१२१.. 365
सूक्त-१२२ 366
सूक्त-१२३ 368
सूक्त-१२४ 369
सूक्त-१२५.. 372
सूक्त-१२६.. 375
सूक्त-१२७.. 385
सूक्त-१२८ 390
सूक्त-१२९ 396
सूक्त-१३० 400
सूक्त-१३१.. 404
सूक्त-१३२ 408
सूक्त-१३३ 411
सूक्त-१३४ 413
सूक्त-१३५.. 414
सूक्त-१३६.. 420
सूक्त-१३७.. 426
सूक्त-१३८ 432

सूक्त-१३९ 434
सूक्त-१४० 436
सूक्त-१४१ 438
सूक्त-१४२ 441
सूक्त-१४३ 444

॥अथर्ववेद – विंश काण्डम्॥

सूक्त-१

विषय इंद्र से सोम पीने का अनुरोध तथा वेद मंत्रों द्वारा अग्नि देव की स्तुति

इन्द्र त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे ।
स पाहि मध्वो अन्धसः ॥२०,१.१॥

हे परम बलशाली इन्द्रदेव ! अभिषुत सोम का पान करने के निमित्त हम आपको आवाहन करते हैं। आप मधुर सोम का पान करें ॥२०,१.१॥

मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः ।
स सुगोपातमो जनः ॥२०,१.२॥

दिव्यलोक के वासी, तेजस्विता- सम्पन्न हे मरुद्गण ! आप जिन यजमानों के यज्ञस्थल (घर) पर सोमपान करते हैं, वे निश्चित ही चिरकाल तक आपके द्वारा संरक्षित रहते हैं ॥२०,१.२॥

उक्षान्नाय वशान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे ।

स्तोमैर्विधेमाग्नये ॥२०,१.३॥

बैलों द्वारा (कृषिकार्य से) उत्पन्न अन्न, गौओं द्वारा उत्पन्न दुग्ध, घृतादि रस तथा सोमरस को हवि के रूप में ग्रहण करने वाले अग्निदेव को महान् स्तोत्रों के द्वारा हम पूजन करते हैं ॥२०,१.३॥

॥अथर्ववेद – विंश काण्डम्॥

सूक्त-२

अग्नि, मरुत एवं इंद्र देव की स्तुति तथा द्रविणोदा से सोमपान करने का अनुरोध

मरुतः पोत्रात्सुष्टुभः स्वर्कादृतुना सोमं पिबन्तु ॥२०,२.१॥

सोमरस को पवित्र करने वाले ऋत्विक् (पोता) द्वारा ऋतु के अनुरूप श्रेष्ठ स्तुतियों के साथ समर्पित सोमरस का वीर मरुद्गण पान करें ॥२०,२.१॥

अग्निराग्नीध्रात्सुष्टुभः स्वर्कादृतुना सोमं पिबतु ॥२०,२.२॥

यज्ञाग्नि को प्रज्वलित रखने वाले ऋत्विक् (आग्नीध) द्वारा ऋतु के अनुरूप श्रेष्ठ स्तुतियों के साथ समर्पित सोमरस का अग्निदेव पान करें ॥२०,२.२॥

इन्द्रो ब्रह्मा ब्राह्मणात्सुष्टुभः स्वर्कादृतुना सोमं पिबतु ॥२०,२.३॥

यज्ञ का संचालन करने वाले ऋत्विक् (ब्राह्मणाच्छंसी) द्वारा ऋतु के अनुरूप श्रेष्ठ स्तुतियों के साथ समर्पित सोमरस का यज्ञ के ब्रह्मा (संगठक) इन्द्रदेव पान करें ॥२०,२.३॥

देवो द्रविणोदाः पोत्रात्सुष्टुभः स्वर्कादृतुना सोमं पिबतु ॥२०,२.४॥

सोमरस को पवित्र करने वाले ऋत्विक् (पोता) द्वारा पान ऋतु के अनुरूप श्रेष्ठ स्तुतियों के साथ समर्पित सोमरस का धनप्रदाता द्रविणोदा देवता करें ॥२०,२.४॥

॥अथर्ववेद – विंश काण्डम्॥

सूक्त-३

इंद्र की स्तुति

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम् ।
एदं बर्हिः सदो मम ॥२०,३.१॥

हे इन्द्रदेव ! आप हमारे इस यज्ञ में पधारें । यह सोमरस आपको समर्पित है, इसका पान करके इस श्रेष्ठ आसन पर विराजमान हों ॥२०,३.१॥

आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना ।
उप ब्रह्माणि नः शृणु ॥२०,३.२॥

हे इन्द्रदेव ! मन्त्र सुनते ही (संकेत मात्र से) रथ में जुड़ जाने वाले श्रेष्ठ अधों के माध्यम से, आप निकट आकर हमारी प्रार्थनाओं पर ध्यान दें ॥२०,३.२॥

ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः ।
सुतावन्तो हवामहे ॥२०,३.३॥

हे इन्द्रदेव ! हम ब्रह्मनिष्ठ सोम- यज्ञकर्ता साधक, सोमपान के लिए आपका आवाहन करते हैं ॥२०,३.३॥

सूक्त-४

इंद्र से सोमरस पीने का अनुरोध

आ नो याहि सुतावतोऽस्माकं सुष्टुतीरुप ।
पिबा सु शिप्रिन्न् अन्धसः ॥२०,४.१॥

श्रेष्ठ मुकुट धारण करने वाले है इन्द्रदेव ! सोमयज्ञ करने वाले हम याजकगण, अपनी श्रेष्ठ प्रार्थनाओं के द्वारा आपको अपने निकट बुलाते हैं । अत: आप यहाँ आकर सोमरस का पान करें ॥२०,४.१॥

आ ते सिञ्चामि कुक्ष्योरनु गात्रा वि धावतु ।
गृभाय जिह्वया मधु ॥२०,४.२॥

हे इन्द्रदेव ! हम आपके उदर को सोमरस से पूर्ण करते हैं। वह रस आपके सम्पूर्ण शरीर में संचरित हो और आप इस मधुर सोमरस का जिह्वा द्वारा स्वादपूर्वक सेवन करें ॥२०,४.२॥

स्वादुष्टे अस्तु संसुदे मधुमान् तन्वे तव ।
सोमः शमस्तु ते हृदे ॥२०,४.३॥

हे इन्द्रदेव ! मधुयुक्त सोम आपको सुस्वादिष्ट लगे । आपके शरीर, हृदय के लिए यह आनन्द उत्पन्न करे ॥२०,४.३॥

सूक्त- ५

इंद्र से सोम प्राप्त करने का अनुरोध तथा यज्ञ में आने का आग्रह

अयमु त्वा विचर्षणे जनीरिवाभि संवृतः ।
प्र सोम इन्द्र सर्पतु ॥२०,५.१॥

हे दूरदर्शी इन्द्रदेव ! जिस प्रकार श्वेत वस्त्र धारण करने वाली स्त्री सात्त्विकता की अभिव्यक्ति करती है, उसी प्रकार गोदुग्ध में मिला हुआ सोमरस तेजोयुक्त होकर आपको प्राप्त हो ॥२०,५.१॥

तुविग्रीवो वपोदरः सुबाहुरन्धसो सदे ।
इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते ॥२०,५.२॥

सुन्दर ग्रीवा वाले, विशाल उदर वाले तथा सुदृढ़ भुजाओं वाले इन्द्रदेव, सोम रस-पान से प्राप्त उत्साह द्वारा शत्रुओं का वध करते हैं ॥२०,५.२॥

इन्द्र प्रेहि पुरस्त्वं विश्वस्येशान ओजसा ।
वृत्राणि वृत्रहं जहि ॥२०,५.३॥

हे जगत् पर शासन करने वाले ओजस्वी इन्द्रदेव ! आप अग्रणी होकर गमन करें । हे वृत्रहन्ता इन्द्रदेव ! आप शत्रुओं का संहार करने वाले हैं ॥२०,५.३॥

दीर्घस्ते अस्त्वङ्कुशो येना वसु प्रयच्छसि ।
यजमानाय सुन्वते ॥२०,५.४॥

हे इन्द्रदेव ! आप जिसके द्वारा सोमयाग करने वाले याजकों को ऐश्वर्य अथवा आवास प्रदान करते हैं, आपका वह अंकुश (आयुर्धा) अत्यधिक विशाल है ॥२०,५.४॥

अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि ।
एहीमस्य द्रवा पिब ॥२०,५.५॥

हे इन्द्रदेव ! वेदिका पर सुशोभित, आसन पर स्थापित, शोधित सोमरस आपके लिए प्रस्तुत है । आप शीघ्र आकर इसका पान करें ॥२०,५.५॥

शाचिगो शाचिपूजनायं रणाय ते सुतः ।
आखण्डल प्र हूयसे ॥२०,५.६॥

शक्तियुक्त गो (किरणों) वाले शत्रुनाशक, सामर्थ्यवान् , तेजस्वी हे पूज्य इन्द्रदेव ! आपके आनन्दवर्द्धन हेतु सोमरस तैयार किया गया है, (उसके पान हेतु) हम आपका आवाहन करते हैं ॥२०,५.६॥

यस्ते शृङ्गवृषो नपात्प्रणपात्कुण्डपाय्यः ।
न्यस्मिन् दध्र आ मनः ॥२०,५.७॥

हे इन्द्रदेव ! आपका जो न गिरने वाला, न गिरने देने वाला शृंग के समान बल है, उसके लिए हम कुण्डपायीं यज्ञ में अपना मन स्थिर करते हैं ॥२०,५.७॥

सूक्त- ६

कामनाओं की वर्षा करने वाले इंद्र से मधुर सोम पान करने का आग्रह तथा मरुतों के स्वामी इंद्र की स्तुति

इन्द्र त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे ।
स पाहि मध्वो अन्धसः ॥२०,६.१॥

हे इन्द्रदेव ! अभिषुत सोम का पान करने के निमित्त हम आपका आवाहन करते हैं। आप मधुर सोम का पान करें ॥२०,६.१॥

इन्द्र क्रतुविदं सुतं सोमं हर्य पुरुष्टुत ।
पिबा वृषस्व तातृपिम् ॥२०,६.२॥

हे बहुतों द्वारा प्रशंसित इन्द्रदेव ! आप कर्म (या यज्ञ) के ज्ञाता हैं। इस अभिषुत सोम की कामना करें, इसका पान करें और बलवान् बनें ॥२०,६.२॥

इन्द्र प्र णो धितावानं यज्ञं विश्वेभिर्देवेभिर्।
तिर स्तवान विश्पते ॥२०,६.३॥

हे स्तुत्य और प्रजापालक इन्द्रदेव ! आप समस्त पूजनीय देवों के साथ हमारे इस हव्यादि द्रव्यों से पूर्ण यज्ञ को संवर्धित करें ॥२०,६.३॥

इन्द्र सोमाः सुता इमे तव प्र यन्ति सत्पते ।
क्षयं चन्द्रास इन्दवः ॥२०,६.४॥

हे सत्यव्रतियों के अधिपति इन्द्रदेव ! यह दीप्तियुक्त, आह्लादक और अभिषुत सोम आपके लिए प्रेषित है॥२०,६.४॥

दधिष्वा जठरे सुतं सोममिन्द्र वरेण्यम् ।
तव द्युक्षास इन्दवः ॥२०,६.५॥

हे इन्द्रदेव ! यह अभिषुत सोम आपके द्वारा वरण करने योग्य है; क्योंकि यह दीप्तिमान् और आपके पास स्वर्ग में रहने योग्य है। आप इसे अपने उदर में धारण करें ॥२०,६.५॥

गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे ।
इन्द्र त्वादातमिद्यशः ॥२०,६.६॥

हे स्तुत्य इन्द्रदेव ! हमारे द्वारा शोधित सोमरस का आप पान करें; क्योंकि इस आनन्ददायी सोमरस की धाराओं से आप सिंचित होते हैं । हे इन्द्रदेव ! आपकी कृपा से ही हमें यश मिलता है ॥२०,६.६॥

अभि द्युम्नानि वनिन इन्द्रं सचन्ते अक्षिता ।
पीत्वी सोमस्य वावृधे ॥२०,६.७॥

देवपूजक यजमान के द्वारा समर्पित दीप्तिमान् और अक्षय सोमादियुक्त हवियाँ इन्द्रदेव की ओर जाती हैं। इस सोम को पीकर इन्द्रदेव उत्फुल्ल होते हैं ॥२०,६.७॥

अर्वावतो न आ गहि परावतश्च वृत्रहन् ।
इमा जुषस्व नो गिरः ॥२०,६.८॥

हे वृत्रहन्ता ! आप समीपस्थ स्थान से हमारे पास आएँ । दूरस्थ स्थान से भी हमारे पास आएँ । हमारे द्वारा समर्पित इन स्तुतियों को ग्रहण करें ॥२०,६.८॥

यदन्तरा परावतमर्वावतं च हूयसे ।
इन्द्रेह तत आ गहि ॥२०,६.९॥

है इन्द्रदेव ! आप दूरस्थ देश से, समीपस्थ देश से तथा मध्य के प्रदेशों से बुलाये जाते हैं, उन स्थानों से आप हमारे यज्ञ में आएँ ॥२०,६.९॥

सूक्त- ७

इंद्र की स्तुति

उद्घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम् ।
अस्तारमेषि सूर्य ॥२०,७.१॥

जगद् विख्यात, ऐश्वर्य-सम्पन्न, शक्तिशाली, मानव मात्र के हितैषी और (दुष्टों पर) अस्त्रों से प्रहार करने वाले (इन्द्रदेव ही सूर्य रूप में) उदित होते हैं ॥२०,७.१॥

नव यो नवतिं पुरो बिभेद बाह्वोजसा ।
अहिं च वृत्रहावधीत्॥२०,७.२॥

अपने बाहुबल से शत्रु के निन्यानबे निवास केन्द्रों को विध्वंस करने वाले और वृत्रनामक दुष्ट का नाश करने वाले (इन्द्रदेव ने) अहि का भी वध किया ॥२०,७.२॥

स न इन्द्रः शिवः सखाश्वावद्गोमद्यवमत्।
उरुधारेव दोहते ॥२०,७.३॥

हमारे लिए कल्याणकारी, मित्ररूप इन्द्र, गौओं की असंख्य दुग्ध-धाराओं के समान हमें प्रचुर धन प्रदान करें॥२०,७.३॥

इन्द्र क्रतुविदं सुतं सोमं हर्य पुरुष्टुत ।
पिबा वृषस्व तातृपिम् ॥२०,७.४॥

हे बहुतों द्वारा प्रशंसित इन्द्रदेव ! आप कर्म (या यज्ञ) के ज्ञाता हैं । इस अभिषुत सोम की कामना करें, इसका पनि करें और बलवान् बनें ॥२०,७.४॥

सूक्त- ८

इंद्र से सोम पीने का आग्रह

एवा पाहि प्रत्नथा मन्दतु त्वा श्रुधि ब्रह्म वावृधस्वोत गीर्भिः ।
आविः सूर्यं कृणुहि पीपिहीषो जहि शत्रूंरभि गा इन्द्र तृन्धि
॥२०,८.१॥

हे इन्द्रदेव ! आप स्तुति सुनकर हमारी वृद्धि करें। आपने जैसे पहले सोमपान किया था, वैसे ही सोमरस का पान करें। यह रस आपको पुष्ट करे । आप सूर्यदेव को प्रकट करके हमें अन्न प्रदान करें । पणियों द्वारा चुरायी गयी गौओं (किरणों) को बाहर निकालें एवं शत्रुओं का विनाश करें ॥२०,८.१॥

अर्वाङेहि सोमकामं त्वाहुरयं सुतस्तस्य पिबा मदाय ।
उरुव्यचा जठर आ वृषस्व पितेव नः शृणुहि हूयमानः
॥२०,८.२॥

हे सोमाभिलाषी इन्द्रदेव ! आप हमारे सम्मुख पधारें । यह अभिषुत सोम आपके निमित्त है । इसे अपने उदर में

स्थापित करें तथा आवाहन किये जाने पर हमारी प्रार्थनाओं को पिता के समान ही सुनने की कृपा करें ॥२०,८.२॥

आपूर्णो अस्य कलशः स्वाहा सेक्तेव कोशं सिषिचे पिबध्यै ।
समु प्रिया आववृत्रन् मदाय प्रदक्षिणिदभि सोमास इन्द्रम् ॥२०,८.३॥

यह सोमरस से परिपूर्ण कलश इन्द्रदेव के पीने के लिए है । जैसे सिंचनकर्ता क्षेत्र को सिंचित करते हैं, वैसे ही हम इन्द्रदेव को सोमरस से सींचते हैं। प्रिय सौम इन्द्रदेव के मन को प्रमुदित करने के लिए प्रदक्षिणा गति करता हुआ उनके समीप पहुँचे ॥२०,८.३॥

सूक्त- ९

दर्शनीय और दुःख विनाशक इंद्र की स्तुति तथा उत्तम अन्न की याचना

तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः ।
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ॥२०,९.१॥

हे ऋत्विजो ! शत्रुओं से रक्षा करने वाले, तेजस्वी सोमरस से तृप्त होने वाले इन्द्रदेव की हम उसी प्रकार स्तुति करते हैं, जैसे गोशाला में अपने बछड़ों के पास जाने के लिए गौएँ उल्लसित होकर भाती हैं ॥२०,९.१॥

द्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं गिरिं न पुरुभोजसम् ।
क्षुमन्तं वाजं शतिनं सहस्रिणं मक्षू गोमन्तमीमहे ॥२०,९.२॥

देवलोकवासी, उत्तम दानदाता, सामर्थ्यवान् , बहुत प्रकार के पोषण देने वाले पर्वत के समान अन्न और गौओं से सम्पन्न इन्द्रदेव से हम सैकड़ों-सहस्रों (सम्पत्तियाँ) माँगते हैं ॥२०,९.२॥

तत्त्वा यामि सुवीर्यं तद्ब्रह्म पूर्वचित्तये ।
येना यतिभ्यो भृगवे धने हिते येन प्रस्कण्वमाविथ
॥२०,९.३॥

हे इन्द्रदेव ! आपने जिस शक्ति से यतियों तथा भृगु ऋषि को धन प्रदान किया था तथा जिस ज्ञान से ज्ञानियों (प्रस्कण्व) की रक्षा की थी, उस ज्ञान तथा बल की प्राप्ति के लिए सबसे पहले हम आपसे प्रार्थना करते हैं ॥२०,९.३॥

येना समुद्रमसृजो महीरपस्तदिन्द्र वृष्णि ते शवः ।
सद्यः सो अस्य महिमा न संनशे यं क्षोणीरनुचक्रदे
॥२०,९.४॥

हे इन्द्रदेव ! जिस शक्ति से आपने समुद्र तथा विशाल नदियों का निर्माण किया है, वह शक्ति हमारे अभीष्ट को पूर्ण करने वाली है। आपकी जिस महिमा का अनुगमन द्यावा- पृथिवी करते हैं, उसका कोई पारावार नहीं ॥२०,९.४॥

॥अथर्ववेद – विंश काण्डम्॥

सूक्त-१०

इंद्र की स्तुति

उदु ते मधुमत्तमा गिर स्तोमास ईरते ।
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथा इव ॥२०,१०.१॥

(जीवन-संग्राम में) वास्तविक विजय दिलाने वाले, ऐश्वर्य प्राप्ति के माध्यम, सतत रक्षा करने वाले मधुर स्तोत्र, युद्ध के उपकरण रथ के समान महत्त्वपूर्ण कहे जाते हैं ॥२०,१०.१॥

कण्वा इव भृगवः सूर्या इव विश्वमिद्धीतमानशुः ।
इन्द्रं स्तोमेभिर्महयन्त आयवः प्रियमेधासो अस्वरन् ॥२०,१०.२॥

कण्व गोत्रोत्पन्न ऋषियों की भाँति स्तुति करते हुए भृगुगोत्रोत्पन्न ऋषयों ने इन्द्रदेव को चारों ओर से उसी प्रकार घेर लिया, जिस प्रकार सूर्य – रश्मियाँ इस संसार में

चारों ओर फैल जाती हैं। प्रियमेध ने ऐसे महान् इन्द्रदेवकी स्तुति करते हुए उनका पूजन किया ॥२०,१०.२॥

सूक्त-११

इंद्र के कार्यों का वर्णन, इंद्र द्वारा स्वर्ग प्राप्त कराने शत्रुओं का विनाश तथा स्तुति कर्ताओं को धन देने वाले इंद्र द्वारा वनस्पतियों एवं दिवसों की रचना

इन्द्रः पूर्भिदातिरद्दासमर्कैर्विदद्वसुर्दयमानो वि शत्रून् ।
ब्रह्मजूतस्तन्वा वावृधानो भूरिदात्र आपृणद्रोदसी उभे ॥२०,११.१॥

शत्रुओं के गढ़ को ध्वस्त करने वाले महिमावान्, धनवान् इन्द्रदेव ने शत्रुओं को मारते हुए अपनी तेजस्विता से उन्हें भस्म कर दिया। स्तुतियों से प्रेरित और शरीर से वर्द्धित होते हुए विविध अस्त्रधारक इन्द्रदेव ने द्यावा पृथिवी दोनों को पूर्ण किया ॥२०,११.१॥

मखस्य ते तविषस्य प्र जूतिमियर्मि वाचममृताय भूषन् ।
इन्द्र क्षितीनामसि मानुषीणां विशां दैवीनामुत पूर्वयावा ॥२०,११.२॥

हे इन्द्रदेव ! आप पूजनीय और बलशाली हैं। आपको विभूषित करते हुए हम अमरत्व प्राप्ति के लिए प्रेरक स्तोत्रों का उच्चारण करते हैं। आप हम मनुष्यों और देवों के अग्रगामी हों ॥२०,११.२॥

इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः प्र मायिनाममिनाद्वर्पणीतिः ।
अहन् व्यंसमुशधग्वनेष्वाविर्धेना अकृणोद्राम्याणाम् ॥२०,११.३॥

प्रसिद्ध नीतिज्ञ इन्द्रदेव ने वृत्रासुर को रोका, शत्रुवध की इच्छा करके मायावी असुरों को मारा तथा वन में छिपे स्कन्धविहीन असुर को नष्ट करके अन्धकार में छिपायी गयीं गौओं (किरणों) को प्रकट किया ॥२०,११.३॥

इन्द्रः स्वर्षा जनयन्न् अहानि जिगायोशिग्भिः पृतना अभिष्टिः ।
प्रारोचयन् मनवे केतुमह्नामविन्दज्ज्योतिर्बृहते रणाय ॥२०,११.४॥

स्वर्ग-सुख-प्रेरक इन्द्रदेव ने दिवस को प्रकट करके युद्धाभिलाषी मरुतों के साथ शत्रु सेना का पराभव कर उन्हें जीता। तदनंतर मनुष्यों के लिए दिन के प्रज्ञापक (बोधक)

सूर्यदेव को प्रकाशित किया तथा महान् युद्धों में विजय प्राप्ति के निमित्त दिव्य ज्योति (तेजस्विता) को प्राप्त किया ॥२०,११.४॥

इन्द्रस्तुजो बर्हणा आ विवेश नृवद्दधानो नर्या पुरूणि ।
अचेतयद्धिय इमा जरित्रे प्रेमं वर्णमतिरच्छुक्रमासाम् ॥२०,११.५॥

विपुल सामर्थ्यशाली इन्द्रदेव ने नेतृत्वकर्ता की भाँति अवरोधक शत्रु- सेना में प्रविष्ट होकर उसे छिन्न – भिन्न किया, स्तुतिकर्ताओं के लिए उषा को चैतन्य किया और उनके शुभवर्ण को और भी दीप्तिमान् किया ॥२०,११.५॥

महो महानि पनयन्त्यस्येन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि ।
वृजनेन वृजिनान्त्सं पिपेष मायाभिर्दस्यूंरभिभूत्योजाः ॥२०,११. २०,११.६॥

स्तोतागण महान् पराक्रमी इन्द्रदेव के श्रेष्ठ कर्मों का गुणगान करते हैं। वे इन्द्रदेव ने अपनी सामर्थ्यों से शत्रुओं के पराभवकर्ता हैं । उन्होंने अपनी माया द्वारा बलवान् दस्युओं को पूरी तरह से नष्ट किया ॥२०,११.६॥

युधेन्द्रो मह्ना वरिवश्चकार देवेभ्यः सत्पतिश्चर्षणिप्राः ।

विवस्वतः सदने अस्य तानि विप्रा उक्थेभिः कवयो गृणन्ति ॥७॥

सज्जनों के अधिपति और उनके मनोरथों की पूर्ति करने वाले इन्द्रदेव अपनी महत्ता से युद्धों में देवों की श्रेष्ठता प्रमाणित की । बुद्धिमान् स्तोतागण यजमान के घर में इन्द्रदेव के उन श्रेष्ठ कर्मों की प्रशंसा करते हैं ॥२०,११.७॥

सत्रासाहं वरेण्यं सहोदां ससवांसं स्वरपश्च देवीः ।
ससान यः पृथिवीं द्यामुतेमामिन्द्रं मदन्त्यनु धीरणासः ॥२०,११.८॥

स्तोतागण शत्रु-विजेता, वरणीय, बलप्रदाता, स्वर्ग-सुख और दीप्तिमान् जल के अधिपति इन्द्रदेव की उत्तम स्तुतियों से वन्दना करते हैं, उन्होंने इस द्युलोक और पृथ्वी लोक को अपने ऐश्वर्यों के बल पर धारण किया ॥२०,११.८॥

ससानात्यामुत सूर्यं ससानेन्द्रः ससान पुरुभोजसं गाम् ।
हिरण्ययमुत भोगं ससान हत्वी दस्यून् प्रार्यं वर्णमावत्॥२०,११.९॥

इन्द्रदेव ने अत्यों (लाँध जाने वाले अश्वों या शक्ति प्रवाहों) का, सूर्य एवं पर्याप्त भोजन प्रदान करने वाली गौओं का, स्वर्णिम अलंकारों एवं भोग्य पदार्थों का दान किया तथा दस्युओं को मारकर आर्यों की रक्षा की ॥२०,११.९॥

इन्द्र ओषधीरसनोदहानि वनस्पतींरसनोदन्तरिक्षम् ।
बिभेद बलं नुनुदे विवाचोऽथाभवद्दमिताभिक्रतूनाम् ॥२०,११.१०॥

इन्द्र ने प्राणियों के कल्याण के लिए ओषधियाँ, दिन (प्रकाश) का अनुदान तथा वनस्पति और अन्तरिक्ष प्रदान किया ।वलासुर का मर्दन किया, प्रतिवादियों को दूर किया और युद्धाभिमुख हुए शत्रुओं का दमन किया है॥२०,११.१०॥

शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ॥२०,११.११॥

हम अपने जीवन-संग्राम में संरक्षण प्राप्ति के लिए इन्द्रदेव का आवाहन करते हैं। वे इन्द्रदेव पवित्रकर्ता, मनुष्यों के नियन्ता, स्तुतियों के श्रवणकर्ता, उग्र, युद्धों में शत्रु-विनाशकर्ता, धन-विजेता और ऐश्वर्यवान् हैं ॥२०,११.११॥

सूक्त- १२

इंद्र की स्तुति

उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्येन्द्रं समर्ये महया वसिष्ठ ।
आ यो विश्वानि शवसा ततानोपश्रोता म ईवतो वचांसि ॥२०,१२.१॥

हे वसिष्ठ ! (साधना के बल पर विशिष्ट पद प्राप्त नंष) अन्न (पोषक आहार) प्राप्ति की कामना से किये जाने वाले यज्ञ में अपनी शक्ति से सम्पूर्ण भुवनों को विस्तृत करने वाले यश के संवर्द्धक, उपासकों की प्रार्थना सुनने वाले इन्द्रदेव की महिमा का वर्णन करें । उनके लिए उत्तम स्तोत्रों का पाठ करें ॥२०,१२.१॥

अयामि घोष इन्द्र देवजामिरिरज्यन्त यच्छुरुधो विवाचि ।
नहि स्वमायुश्चिकिते जनेषु तानीदंहांस्यति पर्ष्यस्मान् ॥२०,१२.२॥

उस समय शोक को रोकने वाली (ओषधियाँ या शक्तियाँ) बढ़ती हैं, जिस समय देवों की स्तुति की जाती है । हे इन्द्र ! मनुष्यों में अपनी आयु को जानने वाला कोई नहीं है । आप हमें सारे पापों से पार ले जाएँ ॥२०,१२.२॥

युजे रथं गवेषणं हरिभ्यामुप ब्रह्माणि जुजुषाणमस्थुः ।
वि बाधिष्ट स्य रोदसी महित्वेन्द्रो वृत्राण्यप्रती जघन्वान्
॥२०,१२.३॥

गौ(किरणों अथवा इन्द्रियों) के आविष्कर्ता इन्द्रदेव के रथ में हरितवर्ण के दोनों अच्वों को स्तोत्रों द्वारा हम (वसिष्ठ) नियोजित करते हैं। स्तोत्र उन इन्द्रदेव की सेवा करते हैं, जो हमारे उपास्य हैं । ये इन्द्रदेव अपनी महिमासे द्यावा-पृथिवीं को व्याप्त किए हुए हैं। इन्द्रदेव ने अनुपम ढंग से वृत्र का वध किया ॥२०,१२.३॥

आपश्चित्पिप्यु स्तर्यो न गावो नक्षन्न् ऋतं जरितारस्त इन्द्र ।
याहि वायुर्न नियुतो नो अछा त्वं हि धीभिर्दयसे वि वाजान्
॥२०,१२.४॥

हे इन्द्रदेव ! आपकी कृपा से अप्रसूता (बन्ध्या) गौ की पुष्टि की तरह जल प्रवाह बढ़ते जाएँ। आपके स्तोतागण यज्ञ करते रहें । अश्व वायु के समान हमारे पास (आपको लेकर)

आएँ। आप स्तोतागणों को बुद्धिबल और अन्न प्रदान करते हैं ॥२०,१२.४॥

ते त्वा मदा इन्द्र मादयन्तु शुष्मिणं तुविराधसं जरित्रे ।
एको देवत्रा दयसे हि मर्तान् अस्मिन् छूर सवने मादयस्व ॥२०,१२.५॥

हे इन्द्रदेव ! देवों में एकमात्र आप ही हम मानवों पर बड़ी दया करते हैं। आप इस यज्ञ में सोमरस पीकर आनन्दित हों । शूरवीर हे देव ! प्रचुर सम्पदा देने वाले आपको साधकों की स्तुतियाँ आनन्दित करें ॥२०,१२.५॥

एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
स न स्तुतो वीरवद्धातु गोमद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥२०,१२.६॥

वसिष्ठ गोत्रीय बलवान्, वज्रधारी इन्द्रदेव की स्तोत्रों द्वारा पूजा करते हैं । वे स्तुति द्वारा प्रसन्न होकर स्तोताओं को वीरों और गौओं सहित धन प्रदान करते हैं । वे कल्याणकारी साधनों से हमारी रक्षा करें ॥२०,१२.६॥

ऋजीषी वज्री वृषभस्तुराषाट्छुष्मी राजा वृत्रहा सोमपावा ।

युक्त्वा हरिभ्यामुप यासदर्वाङ्गाध्यंदिने सवने मत्सदिन्द्रः ॥२०,१२.७॥

इन्द्रदेव सोम-धारणकर्ता, वज्रधारी, अभीष्टवर्धक, शत्रु-संहारक, बलवान्, शासक, वृत्रहन्ता और सोमपान कर्ता हैं वे अपने अश्वों को रथ से युक्त करके हमारे समीप आएँ और माध्यन्दिन सवन में सोमपान कर हर्षित हों॥२०,१२.७॥

सूक्त- १३

बहस्पति देव, इंद्र सेऔर अग्नि से यज्ञशाला में आने के लिए आग्रह

इन्द्रश्च सोमं पिबतं बृहस्पतेऽस्मिन् यज्ञे मन्दसाना वृषण्वसू।
आ वां विशन्त्विन्दवः स्वाभुवोऽस्मे रयिं सर्ववीरं नि यछतम्
॥२०,१३.१॥

हे बृहस्पतिदेव !आप तथा इन्द्रदेव इस यज्ञ में सोमपान से हर्षित होकर, याजकों को ऐश्वर्य प्रदान करें। सर्वत्र विद्यमान रहने वाला सोम आप दोनों के अन्दर प्रवेश करे ।आप हमें पराक्रमी सन्तान एवं ऐश्वर्य प्रदान करें॥२०,१३.१॥

आ वो वहन्तु सप्तयो रघुष्यदो रघुपत्वानः प्र जिगात बाहुभिः
।
सीदता बर्हिरुरु वः सदस्कृतं मादयध्वं मरुतो मध्वो अन्धसः
॥२०,१३.२॥

हे मरुद्गणों ! वेगवान् अश्व आपको इस यज्ञ स्थल पर ले आएँ । आप शीघ्रतापूर्वक दोनों हाथों में धन को धारण कर

इधर आएँ । आपके निमित्त यहाँ बड़ा स्थान विनिर्मित किया गया है । यहाँ कुश के आसनों पर अधिष्ठित होकर, मधुर हविरूप अन्न का सेवन कर हर्षित हों ॥२०,१३.२॥

इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया ।
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसद्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव
॥२०,१३.३॥

पूजनीय जातवेदा (अग्नि) को यज्ञ में प्रकट करने के लिए, स्तुतियों को विचारपूर्वक रथ की तरह प्रयुक्त करते हैं । इस यज्ञाग्नि के सान्निध्य से हमारी बुद्धि कल्याणकारी बनती है । हे अग्निदेव ! हम आपकी मित्रता से सन्तापरहित रहें ॥२०,१३.३॥

ऐभिरग्ने सरथं याह्यर्वाङ्नानारथं वा विभवो ह्यश्वाः ।
पत्नीवतस्त्रिंशतं त्रींश्च देवान् अनुष्वधमा वह मादयस्व
॥२०,१३.४॥

हे अग्ने ! आप उन सभी देवों के साथ एक ही रथ पर या विविध रथों से हमारे पास आएँ । आपके अश्व वहन करने में समर्थ हैं, तैंतीस देवों को उनकी पत्नियों सहित सोमपान के लिए लाएँ और इससे उन्हें प्रमुदित करें ॥२०,१३.४॥

सूक्त- १४

रक्षा की कामना से इंद्र का आह्वान

वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद्भरन्तोऽवस्यवः ।
वाजे चित्रं हवामहे ॥२०,१४.१॥

है अद्वितीय इन्द्रदेव ! जिस प्रकार सांसारिक गुण-सम्पन्न, शक्तिशाली मनुष्यों को लोग बुलाते हैं, उसी प्रकार अपनी रक्षा की कामना से विशिष्ट सोमरस द्वारा तृप्त करते हुए, हम आपकी स्तुति करते हैं ॥२०,१४.१॥

उप त्वा कर्मन्न् ऊतये स नो युवोग्रश्चक्राम यो धृषत्।
त्वामिद्ध्यवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सानसिम् ॥२०,१४.२॥

है शत्रुसंहारक देवेन्द्र ! कर्मशील रहते हुए हम अपनी सहायता के लिए तरुण और शूरवीर रूप में विद्यमान आपका ही आश्रय लेते हैं। मित्रवत् सहायता के लिए हमें आपका स्मरण करते हैं ॥२०,१४.२॥

यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य आनिनाय तमु व स्तुषे ।
सखाय इन्द्रमूतये ॥२०,१४.३॥

हे मित्रो ! पूर्वकाल से ही जो, धन – वैभव प्रदान करने वाले हैं, उन इन्द्रदेव की हम आपके कल्याण के लिए स्तुति करते हैं ॥२०,१४.३॥

हर्यश्वं सत्पतिं चर्षणीसहं स हि ष्मा यो अमन्दत ।
आ तु नः स वयति गव्यमश्व्यं स्तोतृभ्यो मघवा शतम् ॥२०,१४.४॥

जो साधक, हरिसंज्ञक अश्वों वाले, भद्रजनों का पालन करने वाले तथा रिपुओं को परास्त करने वाले इन्द्रदेव की प्रार्थना करते हैं; उन्हें इन्द्रदेव सैकड़ों गौओं तथा अश्वों से भरपूर ऐश्वर्य प्रदान करें ॥२०,१४.४॥

॥अथर्ववेद – विंश काण्डम्॥

सूक्त- १५

इंद्र की स्तुति तथा इंद्र के यज्ञ का स्थान सारा जगत

प्र मंहिष्ठाय बृहते बृहद्रये सत्यशुष्माय तवसे मतिं भरे ।
अपामिव प्रवणे यस्य दुर्धरं राधो विश्वायु शवसे अपावृतम्
॥२०,१५.१॥

उदार दानी, महान् ऐश्वर्यशाली, सत्यस्वरूप, पराक्रमी इन्द्रदेव की हम बुद्धिपूर्वक स्तुति करते हैं। नीचे की ओर बहने वाले दुर्धर्ष जल-प्रवाहों के समान, विश्व के प्राणियों के लिए प्रवाहित, इनके शक्ति अनुदान प्रसिद्ध हैं ॥२०,१५.१॥

अध ते विश्वमनु हासदिष्टय आपो निम्नेव सवना हविष्मतः ।
यत्पर्वते न समशीत हर्यत इन्द्रस्य वज्रः श्नथिता हिरण्ययः
॥२०,१५.२॥

हे इन्द्रदेव ! जब आपका स्वर्ण सदृश दीप्तिमान् मारक वज्र मेघों को विदीर्ण करने में तत्पर हुआ, तब हे इन्द्रदेव ! सारा जगत् आपके लिए यज्ञ-कर्मों में संलग्न हुआ। जल के नीचे

की ओर प्रवाहित होने के समान याजकों के द्वारा समर्पित सोम आपकी ओर प्रवाहित हुआ ॥२०,१५.२॥

अस्मै भीमाय नमसा समध्वर उषो न शुभ्र आ भरा पनीयसे ।
यस्य धाम श्रवसे नामेन्द्रियं ज्योतिरकारि हरितो नायसे ॥२०,१५.३॥

हे दीप्तिमती उषा देवि ! शत्रुओं के प्रति विकराल और प्रशंसनीय उन इन्द्रदेव के लिए नमस्कार के साथ यज्ञ सम्पादन करें, जिनका धाम (स्थान) अन्नादि दान के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध है; जिनकी सामर्थ्य और कीर्ति, अश्व के सदृश सर्वत्र संचरित होती है ॥२०,१५.३॥

इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो ।
नहि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सधत्क्षोणीरिव प्रति नो हर्य तद्वचः ॥२०,१५.४॥

हे सम्पत्तिवान् एवं बहु प्रशंसित इन्द्रदेव ! आपके संरक्षण में कार्य करते हुए, निष्ठापूर्वक रहते हुए, हम आपकी स्तुति करते हैं। सभी पदार्थों को स्वीकार करने वाली पृथ्वी के समान आप भी हमारे स्तोत्रों को स्वीकार करें । आपके अतिरिक्त कोई अन्य इस योग्य नहीं है ॥२०,१५.४॥

भूरि त इन्द्र वीर्यं तव स्मस्यस्य स्तोतुर्मघवन् काममा पृण ।
अनु ते द्यौर्बृहती वीर्यं मम इयं च ते पृथिवी नेम ओजसे
॥२०,१५.५॥

हे ऐश्वर्यशाली इन्द्रदेव ! स्तुति करने वाले इन साधकों की कामनाएँ पूर्ण करें। आपका पराक्रम महान् है। यह महान् द्युलोक भी आपके बल पर ही स्थित है और यह पृथ्वी भी आपके बल के आगे झुकती है ॥२०,१५.५॥

त्वं तमिन्द्र पर्वतं महामुरुं वज्रेण वज्रिन् पर्वशश्चकर्तिथ ।
अवासृजो निवृताः सर्तवा अपः सत्रा विश्वं दधिषे केवलं सहः
॥२०,१५.६॥

हे वज्रधारी इन्द्रदेव ! आपने महान् बलशाली मेघों को अपने वज्र से खण्ड-खण्ड किया और रुके जल-प्रवाहों को बहने के लिए मुक्त किया । केवल आप हीं सब संघर्षक शक्तियों को धारण करते हैं ॥२०,१५.६॥

सूक्त- १६

बृहस्पति देव की प्रशंसा

उदप्रुतो न वयो रक्षमाणा वावदतो अभ्रियस्येव घोषाः ।
गिरिभ्रजो नोर्मयो मदन्तो बृहस्पतिमभ्यर्का अनावन्
॥२०,१६.१॥

पानी के समीप पक्षी (जल क्रीड़ा के समय तथा रक्षक समुदाय जिस प्रकार निरन्तर शब्द करते हैं। जैसे मेघों का गर्जन बार- बार होता है, जैसे पर्वतों से गिरने वाले झरने तथा मेघों से गिरने वाली जल – धाराएँ शब्द करती हैं, उसी प्रकार ऋत्विग्गण बृहस्पतिदेव की निरन्तर स्तुति करते हैं ॥२०,१६.१॥

सं गोभिरङ्गिरसो नक्षमाणो भग इवेदर्यमणं निनाय ।
जने मित्रो न दम्पती अनक्ति बृहस्पते वाजयाशूंरिवाजौ
॥२०,१६.२॥

अंगिरस् (बृहस्पति) ने गुप्त स्थान में रहने वाली गौओं (वाणियों या किरणों) को प्रकाशित किया। वे देव भग (ऐश्वर्य) की तरह अर्यमा (आदित्य या सृजेता) को लाकर प्रजाजनों में मित्र की तरह रहने वाले दम्पत्ती (नर-मादा) को सुसज्जित करते हैं। हे बृहस्पते! आप हमें युद्ध के अश्वों की तरह शक्तिसम्पन्न बनाएँ ॥२०,१६.२॥

साध्वर्या अतिथिनीरिषिरा स्पार्हाः सुवर्णा अनवद्यरूपाः ।
बृहस्पतिः पर्वतेभ्यो वितूर्या निर्गा ऊपे यवमिव स्थिविभ्यः ॥२०,१६.३॥

कल्याणकारी दूध देने वाली, निरन्तर गतिशील, काम्य स्पृहायुक्त, श्रेष्ठ वर्णयुक्त, निन्दारहित, रूपवती गौओं को बृहस्पतिदेव उसी प्रकार पर्वतों (गुप्त स्थानों) से शीघ्रतापूर्वक बाहर निकालें, जिस प्रकार कृषक संगृहीत धान्य से जौ को बाहर निकाल कर बोते हैं ॥२०,१६.३॥

आप्रुषायन् मधुना ऋतस्य योनिमवक्षिपन्न् अर्क उल्कामिव द्योः ।
बृहस्पतिरुद्धरन्न् अश्मनो गा भूम्या उद्नेव वि त्वचं बिभेद ॥२०,१६.४॥

जैसे आकाश में उल्काएँ प्रकट होती हैं, उसी प्रकार पूज्य बृहस्पतिदेव ऋत (सत्य या यज्ञों के योनि (उद्भव स्थलों में मधुर रसों को गिराते हैं। उन्होंने मेघों से गौओं (किरणों) को मुक्त किया तथा पृथ्वी की त्वचा को इस प्रकार भेदा, जैसे वर्षा की बूंदें भेदती हैं ॥२०,१६.४॥

अप ज्योतिषा तमो अन्तरिक्षदुद्रः शीपालमिव वात आजत्। बृहस्पतिरनुमृश्या वलस्याभ्रमिव वात आ चक्र आ गाः ॥२०,१६.५॥

जैसे वायु प्रवाह जल की पीठ पर स्थित शैवाल (काई) को दूर हटाते हैं, मेघों को दूर हटाते हैं, वैसे बृहस्पति देव ने विचारपूर्वक वलासुर (अज्ञान) के आवरण को हटाकर गौओं (ज्ञानयुक्त वाणियों) को बाहर निकाला ॥२०,१६.५॥

यदा वलस्य पीयतो जसुं भेद्बृहस्पतिरग्नितपोभिरर्कैः । दद्भिर्न जिह्वा परिविष्टमाददाविर्निधींरकृणोदुस्रियाणाम् ॥२०,१६.६॥

बृहस्पतिदेव के अग्नितुल्य, प्रतप्त और उज्ज्वल आयुधों ने, जिस समय 'वल' के अस्त्रों को छिन्न-भिन्न किया, उसी प्रकार उन्होंने उन गौओं (दिव्य वाणियों) को अपने अधिकार क्षेत्र में ले लिया । जैसे दाँतों द्वारा चबाये गये अन्न

को जीभ प्राप्त करती है, वैसे ही पणियों का वध करके बृहस्पतिदेव ने गौओंको प्राप्त किया ॥२०,१६.६॥

बृहस्पतिरमत हि त्यदासां नाम स्वरीणां सदने गुहा यत्। आण्डेव भित्वा शकुनस्य गर्भमुदुस्रियाः पर्वतस्य त्मनाजत्॥२०,१६.७॥

गुफा में छिपाकर रखी गई गौओं के इँभाने की आवाज को सुनकर बृहस्पतिदेव को गौओं की उपस्थिति का आभास हुआ। जिस प्रकार अण्डों को फोड़कर पक्षियों के बच्चे बाहर आते हैं, वैसे ही बृहस्पतिदेव पर्वत (मेघों-अवरोधों) को तोड़कर गौओं (किरणों) को बाहर निकाल लाए ॥२०,१६.७॥

अश्नापिनद्धं मधु पर्यपश्यन् मत्स्यं न दीन उदनि क्षियन्तम् । निष्टज्जभार चमसं न वृक्षाद्बृहस्पतिर्विरवेणा विकृत्य ॥२०,१६.८॥

बृहस्पतिदेव ने पर्वतीय गुफा में बँधी हुई सुन्दर गौओं को उसी दयनीय अवस्था में देखा, जिस प्रकार जल की अल्प मात्रा में मछलियाँ व्यथित होती हैं, जैसे वृक्ष से सोमपात्र के निर्माण हेतु काष्ठ निकाला जाता है। वैसे ही बृहस्पतिदेव ने

विभिन्न प्रकार के बन्धनों को तोड़कर गौओं को मुक्त किया ॥२०,१६.८॥

सोषामविन्दत्स स्वः सो अग्निं सो अर्केण वि बबाधे तमांसि ।
बृहस्पतिर्गोवपुषो वलस्य निर्मज्जानं न पर्वणो जभार ॥२०,१६.९॥

बृहस्पतिदेव ने गौओं की मुक्ति के लिए उषा को प्राप्त किया। उन्होंने सूर्य और अग्नि के माध्यम से अन्धकार को विनष्ट किया। जैसे अस्थि को भेदकर मज्जा प्राप्त की जाती है, वैसे ही वल (असुर) को भेदकर (बृहस्पतिदेव न) गौओं (किरणों) को बाहर निकाला ॥२०,१६.९॥

हिमेव पर्णा मुषिता वनानि बृहस्पतिनाकृपयद्वलो गाः ।
अनानुकृत्यमपुनश्चकार यात्सूर्यामासा मिथ उच्चरातः ॥२०,१६.१०॥

जिस प्रकार हिमपात पद्मपत्रों का हरण (नाश करता है, उसी प्रकार गौओं का वलासुर द्वारा अपहरण किया गया। बृहस्पतिदेव के द्वारा वलासुर से उनको मुक्त कराया गया। ऐसा कार्य किसी दूसरे द्वारा किया जाना सम्भव नहीं । सूर्य और चन्द्र दोनों ही इसका प्रमाण प्रस्तुत करते हैं ॥२०,१६.१०॥

अभि श्यावं न कृशनेभिरश्वं नक्षत्रेभिः पितरो द्यामपिंशन् ।
रात्र्यां तमो अदधुर्ज्योतिरहन् बृहस्पतिर्भिनदद्रिं विदद्गाः ॥२०,१६.११॥

जिस प्रकार कृष्णवर्ण घोड़े को स्वर्ण के आभूषणों से सुशोभित किया जाता है, वैसे ही देवताओं ने द्युलोक को नक्षत्रों से विभूषित किया है। उन्होंने रात्रिकाल में अन्धकार तथा दिवस में प्रकाश को स्थापित किया। उसी समय बृहस्पतिदेव ने पर्वत (मेघ) को तोड़कर गौओं (किरणों) को प्राप्त किया ॥२०,१६.११॥

इदमकर्म नमो अभ्रियाय यः पूर्वीरन्वानोनवीति ।
बृहस्पतिः स हि गोभिः सो अश्वैः स वीरेभिः स नृभिर्नो वयो धात्॥२०,१६.१२॥

आकाश में उत्पन्न हुए बृहस्पतिदेव के निमित्त ये स्तुतिगान किये गये हैं। हम उन्हें सादर प्रणाम करते हैं। जिनके लिए नानाविध चिरपुरातन ऋचाओं को बार-बार उच्चारित किया गया है, वे बृहस्पतिदेव हमें गौएँ, घोड़े, वीर सन्ताने तथा सेवकों सहित अन्नादि प्रदान करें ॥२०,१६.१२॥

॥अथर्ववेद – विंश काण्डम्॥

सूक्त- १७

इंद्र की स्तुति, इंद्र से सोमरस पीने का आग्रह तथा बहस्पति देव की प्रशंसा

अछा म इन्द्रं मतयः स्वर्विदः सध्रीचीर्विश्वा उशतीरनूषत ।
परि ष्वजन्ते जनयो यथा पतिं मर्यं न शुन्ध्युं मघवानमूतये ॥२०,१७.१॥

पवित्र, आत्मशक्ति की वृद्धि करने वाली, एक साथ रहने वाली तथा उन्नति की कामना करने वाली हमारी स्तुतियाँ इन्द्रदेव को वैसे ही आवृत करती हैं, जैसे स्त्रियाँ आश्रय पाने के लिए अपने पति का आलिंगन करती हैं। ॥२०,१७.१॥

न घा त्वद्रिगप वेति मे मनस्त्वे इत्कामं पुरुहूत शिश्रय ।
राजेव दस्म नि षदोऽधि बर्हिष्यस्मिन्त्सु सोमेऽवपानमस्तु ते ॥२०,१७.२॥

हे असंख्यों द्वारा स्तुतियोग्य इन्द्रदेव ! आपको त्यागकर हमारा मन दूसरी ओर नहीं जाता । आप में ही हम अपनी आकांक्षाओं को केन्द्रित करते हैं। जैसे राजा राजसिंहासन पर विराजमान होते हैं, वैसे ही आप कुशा के आसन पर प्रतिष्ठित हों । इस श्रेष्ठ सोमरस से आपके, पान करने की इच्छा की पूर्ति हो ॥२०,१७.२॥

विषूवृदिन्द्रो अमुतेरुत क्षुधः स इद्रायो मघवा वस्व ईशते ।
तस्येदिमे प्रवणे सप्त सिन्धवो वयो वर्धन्ति वृषभस्य शुष्मिणः
॥२०,१७.३॥

हमें दुर्दशायुक्त कुमति तथा अन्नाभाव से संरक्षण प्रदान करने के लिए इन्द्रदेव हमारे चारों ओर विराजमान रहें । ऐश्वर्यवान् इन्द्रदेव ही सभी सम्पदाओं और धनों के अधिपति हैं । अभीष्टवर्धक और तेजस्वी इन्द्रदेव के निर्देशन में ही सप्त सरिताएँ (स्थूल नदियाँ एवं सूक्ष्म धाराएँ) प्रवाहित होकर उस बलवान् उत्साही योद्धा (इन्द्र) की शक्ति को बढ़ाती हैं ॥२०,१७.३॥

वयो न वृक्षं सुपलाशमासदन्त्सोमास इन्द्रं मन्दिनश्चमूषदः ।
प्रैषामनीकं शवसा दविद्युतद्विदत्स्वर्मनवे ज्योतिरार्यम्
॥२०,१७.४॥

जिस प्रकार पक्षी सुन्दर पत्तेदार वृक्ष का अवलम्बन लेते हैं, उसी प्रकार पात्रों में विद्यमान हर्षदायक सोमरस इन्द्रदेव का आश्रय लेते हैं। सोमरस के प्रभाव एवं तेज से उनका मुख तेजोमय हो जाता है । वे अपनी सर्वोत्तम तेजस्विता मनुष्यों को प्रदान करें ॥२०,१७.४॥

कृतं न श्वघ्नी वि चिनोति देवने संवर्गं यन् मघवा सूर्यं जयत्।
न तत्ते अन्यो अनु वीर्यं शकन् न पुराणो मघवन् नोत नूतनः ॥२०,१७.५॥

जैसे जुआरी जुए के अड्डे पर विजेता को खोजकर पराजित करता है, वैसे ही वैभवशाली इन्द्रदेव ने सूर्य को जीता (प्रेरित किया) । हे ऐश्वर्यवान् इन्द्रदेव ! कोई भी पुरातन या नवीन मनुष्य आपके पराक्रम की बराबरी करने में सक्षम नहीं है ॥२०,१७.५॥

विशंविशं मघवा पर्यशायत जनानां धेना अवचाकशद्वृषा ।
यस्याह शक्रः सवनेषु रण्यति स तीव्रैः सोमैः सहते पृतन्यतः ॥२०,१७.६॥

अभीष्टदाता इन्द्रदेव सभी मनुष्यों तक सहज पहुँच जाते हैं। वे स्तोताओं की स्तुतियों को ध्यानपूर्वक सुनते हैं । इन्द्रदेव जिस यजमान के सोमयाग में हर्षित होते हैं, वे यजमान

तीक्ष्ण सोमरस द्वारा युद्धाभिलाषी रिपुओं को पराभूत करने में सक्षम होते हैं ॥२०,१७.६॥

आपो न सिन्धुमभि यत्समक्षरन्त्सोमास इन्द्रं कुल्या इव ह्रदम् ।
वर्धन्ति विप्रा महो अस्य सादने यवं न वृष्टिर्दिव्येन दानुना ॥२०,१७.७॥

जिस प्रकार नदियाँ सागर की ओर स्वाभाविक रूप में प्रवाहित होती हैं तथा छोटे-छोटे नाले सरोवर की ओर बहते हैं, वैसे ही सोमरस भी सहज क्रभ से इन्द्रदेव को ही प्राप्त होता है। जैसे दिव्य वृष्टि करने वाले पर्जन्य जौ की कृषि को संवर्द्धित करते हैं, वैसे ही इन्द्रदेव की महिमा को यज्ञस्थल में ज्ञानी लोग बढ़ाते हैं ॥२०,१७.७॥

वृषा न क्रुद्धः पतयद्रजःस्वा यो अर्यपत्नीरकृणोदिमा अपः ।
स सुन्वते मघवा जीरदानवेऽविन्दज्ज्योतिर्मनवे हविष्मते ॥२०,१७.८॥

जिस प्रकार क्रोधित बैल दूसरे बैल की ओर दौड़ता है, उसी प्रकार इन्द्रदेव क्रोधित होकर मेघ की ओर दौड़ते हैं। उसे तोड़कर जल को हमारे लिए विमुक्त करते हैं। वे ऐश्वर्यवान् इन्द्रदेव सोम-अभिषवणकर्ता, दानीऔर हविष्यान्न समर्पित

करने वाले यजमानों को तेजस्विता प्रदान करते हैं ॥२०,१७.८॥

उज्जायतां परशु ज्योतिषा सह भूया ऋतस्य सुदुघा पुराणवत्।
वि रोचतामरुषो भानुना शुचिः स्वर्न शुक्रं शुशुचीत सत्पतिः ॥२०,१७.९॥

इन्द्रदेव का वज्रास्त्र तेजस्विता के साथ प्रकट हो, पुरातनकाल के समान ही यज्ञ में स्तोत्रों का प्रादुर्भाव हो । स्वयं देदीप्यमान इन्द्रदेव तेजस्विता से शोभायुक्त और पवित्र हों । सज्जनों के पालक वे सूर्य के समान ही शुभज्योति से प्रकाशमान हों ॥२०,१७.९॥

गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।
वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम ॥२०,१७.१०॥

हे अनेकों द्वारा आवाहनीय इन्द्रदेव ! आपकी कृपा दृष्टि से हम गोधन द्वारा दुःख-दारियों से निवृत्त हों। जौ आदि अन्नों से हम क्षुधा की आपूर्ति करें। शासनाध्यक्षों के अनुशासन में अपनी सामर्थ्य से विपुल सम्पदाओं को हम जीत सकें ॥२०,१७.१०॥

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः ।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यः वरिवः कृणोतु
॥२०,१७.११॥

दुष्कर्मी पापियों से बृहस्पतिदेव हमें पश्चिम से, उत्तर से तथा दक्षिण से संरक्षित करें । इन्द्रदेव पूर्व दिशा और मध्य भाग से आने वाले शत्रुओं से हमें बचाएँ। वे इन्द्रदेव सबके सखा हैं । हम भी उनके प्रति मित्रभावना को सुदृढ़ करें । वे इन्द्रदेव हमारे अभीष्टों को पूर्ण करें ॥२०,१७.११॥

बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य ।
धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः
॥२०,१७.१२॥

हे बृहस्पति और इन्द्रदेव ! आप दोनों पृथ्वी और द्युलोक के ऐश्वर्य के स्वामी हैं, इसलिए स्तोताओं को ऐश्वर्य प्रदान करें तथा कल्याणकारी साधनों से हमारी सुरक्षा करें ॥२०,१७.१२॥

सूक्त- १८

वज्रधारी इंद्र की स्तुति

वयमु त्वा तदितर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः ।
कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते ॥२०,१८.१॥

हे इन्द्रदेव ! आपसे मित्रता करने के इच्छुक हम याजकगण (आपके स्तोता) तथा सभी कण्ववंशीय साधक स्तोत्रों द्वारा आपकी स्तुति करते हैं ॥२०,१८.१॥

न घेमन्यदा पपन वज्रिन्न् अपसो नविष्टौ ।
तवेदु स्तोमं चिकेत ॥२०,१८.२॥

हे वज्रधारी इन्द्रदेव ! यज्ञ कर्म में आपकी स्तुति करने के अतिरिक्त हम अन्य दूसरे की स्तुति नहीं करेंगे। हम स्तोत्रों द्वारा आपकी ही स्तुति करना जानते हैं ॥२०,१८.२॥

इछन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति ।
यन्ति प्रमादमतन्द्राः ॥२०,१८.३॥

यज्ञ के निमित्त सदैव सोमरस तैयार करने वाले साधकों से देवगण प्रसन्न रहते हैं, उन्हीं की कामना करते हैं । आलस्यरहित देवगण आनन्द प्रदान करने वाले सोमरस का सदा पान करते हैं ॥२०,१८.३॥

वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्र णोनुमो वृषन् ।
विद्धि त्वस्य नो वसो ॥२०,१८.४॥

हे श्रेष्ठ वीर इन्द्रदेव ! हम आपकी कामना करते हुए बारम्बार नमन करते हैं। सबको आश्रय देने वाले आप हमारी प्रार्थनाएँ सुनें और उन पर ध्यान देने की कृपा करें ॥२०,१८.४॥

मा नो निदे च वक्तवेऽर्यो रन्धीरराव्णे ।
त्वे अपि क्रतुर्मम ॥२०,१८.५॥

हे इन्द्रदेव ! आप हमारे स्वामी हैं। आपसे हम लोग प्रार्थना करते हैं कि हमें कटुभाषी, निंदक और कंजूस के वश में न रहना पड़े ॥२०,१८.५॥

त्वं वर्मासि सप्रथः पुरोयोधश्च वृत्रहन् ।
त्वया प्रति ब्रुवे युजा ॥२०,१८.६॥

हे इन्द्रदेव ! युद्ध क्षेत्र में शत्रुओं के सम्मुख पहुँचकर उनका नाश करने के लिए आप विश्व-विख्यात हैं। आप कवच के समान रक्षा करने वाले हैं। आपकी सहायता पाकर हम शत्रुओं का वध करने में समर्थ होते है ॥२०,१८.६॥

सूक्त- १९

इंद्र की स्तुति

वार्त्रहत्याय शवसे पृतनाषाह्याय च ।
इन्द्र त्वा वर्तयामसि ॥२०,१९.१॥

है इन्द्रदेव ! वृत्र नामक असुर का हनन करने के लिए तथा शत्रु सेना को पराजित करने की शक्ति प्राप्त करने के लिए हम आपका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं ॥२०,१९.१॥

अर्वाचीनं सु ते मन उत चक्षुः शतक्रतो ।
इन्द्र कृण्वन्तु वाघतः ॥२०,१९.२॥

सैकड़ों कर्म या यज्ञ सम्पन्न करने वाले हे इन्द्रदेव ! स्तोतागण स्तुति करते हुए आपकी प्रसन्नता, अनुग्रह और कृपा- दृष्टि को हमारी ओर प्रेरित करें ॥२०,१९.२॥

नामानि ते शतक्रतो विश्वाभिर्गीर्भिरीमहे ।

इन्द्राभिमातिषाह्ये ॥२०,१९.३॥

हे शतकर्मा इन्द्रदेव ! युद्ध में विजय प्राप्ति के लिए हम आपके यश एवं वैभव का बखान करते हैं ॥२०,१९.३॥

पुरुष्टुतस्य धामभिः शतेन महयामसि ।
इन्द्रस्य चर्षणीधृतः ॥२०,१९.४॥

बहुतों द्वारा स्तुत्य, महान् तेजस्वी, मनुष्यों को धारण करने वाले इन्द्रदेव की हम स्तुति करते हैं ॥२०,१९.४॥

इन्द्रं वृत्राय हन्तवे पुरुहूतमुप ब्रुवे ।
भरेषु वाजसातये ॥२०,१९.५॥

बहुतों द्वारा आवाहनीय, वृत्रहन्ता इन्द्रदेव को हम भरण-पोषण के लिए बुलाते हैं ॥२०,१९.५॥

वाजेषु सासहिर्भव त्वामीमहे शतक्रतो ।
इन्द्र वृत्राय हन्तवे ॥२०,१९.६॥

हे शतकर्मा इन्द्रदेव ! आप युद्धों में शत्रुओं का विनाश करने वाले हैं। वृत्र का हनन करने के लिए हम आपसे प्रार्थना करते हैं ॥२०,१९.६॥

द्युम्नेषु पृतनाज्ये पृत्सुतूर्षु श्रवःसु च ।
इन्द्र साक्ष्वाभिमातिषु ॥२०,१९.७॥

हे इन्द्रदेव ! धन प्राप्ति के समय, युद्ध में और शत्रु पराभव के समय, यश प्राप्ति तथा अवरोधों का सामना करते समय आप हमारे साथ रहें ॥२०,१९.७॥

सूक्त- २०

इंद्र की स्तुति तथा पांच वर्णों में व्याप्त बल की कामना

शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युम्निनं पाहि जागृविम् ।
इन्द्र सोमं शतक्रतो ॥२०,२०.१॥

हे शतकर्मा इन्द्रदेव ! हम याजकों को संरक्षण प्रदान करने के लिए आप अत्यन्त बल-प्रदायक, दीप्तिमान् चेतनता लाने वाले सोमरस का पान करें ॥२०,२०.१॥

इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु ।
इन्द्र तानि त आ वृणे ॥२०,२०.२॥

हे शतकर्मा इन्द्रदेव ! पाँच जनों (समाज के पाँचों वर्गों) में जो इन्द्रियाँ (विशेष सामर्थ्य) हैं, उन्हें आपकी शक्तियों के रूप में हम वरण करते हैं ॥२०,२०.२॥

अगन्न् इन्द्र श्रवो बृहद्द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम् ।
उत्ते शुष्मं तिरामसि ॥२०,२०.३॥

हे इन्द्रदेव ! यह महान् हविष्यान्न आपके पास जाए। आप शत्रुओं के लिए दुर्लभ, तेजस्वी सोमरस ग्रहण करें । हम आपके बल को प्रवृद्ध करते हैं ॥२०,२०.३॥

अर्वावतो न आ गह्यथो शक्र परावतः ।
उ लोको यस्ते अद्रिव इन्द्रेह तत आ गहि ॥२०,२०.४॥

हे वज्रधारक इन्द्रदेव ! आप समीपस्थ प्रदेश से हमारे पास आएँ । दूरस्थ देश से भी आएँ। आपका जो उत्कृष्ट लोक है, वहाँ से भी आप यहाँ पधारें ॥२०,२०.४॥

इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभि षदप चुच्यवत्।
स हि स्थिरो विचर्षणिः ॥२०,२०.५॥

युद्ध में स्थिर रहने वाले विश्वद्रष्टा इन्द्रदेव महान् पराभवकारी तथा भय को शीघ्र ही दूर करते हैं ॥२०,२०.५॥

इन्द्रश्च मृलयाति नो न नः पश्चादघं नशत्।
भद्रं भवाति नः पुरः ॥२०,२०.६॥

यदि इन्द्रदेव हमें सुख प्रदान करें, तो पाप हमें नष्ट नहीं कर सकते, वे हर प्रकार से हमारा कल्याण हीं करेंगे ॥२०,२०.६॥

इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत्।
जेता शत्रून् विचर्षणिः ॥२०,२०.७॥

शत्रु विजेता, प्रज्ञावान् इन्द्रदेव सभी दिशाओं से हमें निर्भय बनाएँ ॥२०,२०.७॥

॥अथर्ववेद – विंश काण्डम्॥

सूक्त- २१

इंद्र की स्तुति

न्यू षु वाचं प्र महे भरामहे गिर इन्द्राय सदने विवस्वतः ।
नू चिद्धि रत्नं ससतामिवाविदन् न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते
॥२०,२१.१॥

हम विवस्वान् के यज्ञ में महान् इन्द्रदेव की उत्तम वचनों से स्तुति करते हैं । जिस प्रकार सोने वालों का धन चोर सहजता से ले जाते हैं, उसी प्रकार इन्द्रदेव ने (असुरों के) रत्नों को प्राप्त किया। धन दान करने वालों की निन्दा करना उचित नहीं है ॥२०,२१.१॥

दुरो अश्वस्य दुर इन्द्र गोरसि दुरो यवस्य वसुन इनस्पतिः ।
शिक्षानरः प्रदिवो अकामकर्शनः सखा सखिभ्यस्तमिदं गृणीमसि ॥२०,२१.२॥

हे इन्द्रदेव ! आप अश्वों, गौओं तथा धन-धान्य के देने वाले हैं। आप सबका पालन-पोषण करते हुए उन्हें उत्तम कर्म

की प्रेरणा प्रदान करने वाले तेजस्वी वीर हैं। आप संकल्पों को नष्ट न करने वाले तथा मित्रों के भी मित्र हैं। इस प्रकार हम आपकी स्तुति करते हैं ॥२०,२१.२॥

शचीव इन्द्र पुरुकृद्द्युमत्तम तवेदिदमभितश्चेकिते वसु ।
अतः संगृभ्याभिभूत आ भर मा त्वायतो जरितुः काममूनयीः ॥२०,२१.३॥

शक्तिशाली, बहु-कर्मा, दीप्तिमान् हे इन्द्रदेव ! सम्पूर्ण धन आपका ही है- यह सर्वज्ञात है । हे विजेता ! उस धन को एकत्रित करके (उपयुक्त स्थानों पर पहुँचा दें। आप अपने प्रशंसकों की कामना पूरी करने में कृपणता न करें ॥२०,२१.३॥

एभिर्द्युभिर्सुमना एभिरिन्दुभिर्निरुन्धानो अमतिं गोभिरश्विना ।
इन्द्रेण दस्युं दरयन्त इन्दुभिर्युतद्वेषसः समिषा रभेमहि ॥२०,२१.४॥

तेजस्वी हवियों और तेजस्वी सोमरस द्वारा तृप्त होकर हे इन्द्रदेव ! हमें गौओं और घोड़ों (पोषण और प्रगति) से युक्त धन को देकर हमारी दरिद्रता का निवारण करें । सोमरस से तृप्त होने वाले, उत्तम मन वाले इन्द्रदेव के द्वारा हम

शत्रुओं को नष्ट करते हुए द्वेषरहित होकर अन्न से सम्यक् रूप से हर्षित हों ॥२०,२१.४॥

समिन्द्र राया समिषा रभेमहि सं वाजेभिः पुरुश्चन्द्रैरभिद्युभिः ।
सं देव्या प्रमत्या वीरशुष्मया गोअग्रयाश्वावत्या रभेमहि ॥२०,२१.५॥

हे इन्द्रदेव ! हम धन-धान्य से सम्पन्न हों, बहुतों को हर्ष प्रदान करने वाली सम्पूर्ण तेजस्विता तथा बल से सम्पन्न हों । हम वीर पुत्रों, श्रेष्ठ गौओं एवं अश्वों को प्राप्त करने की उत्तम बुद्धि से युक्त हों ॥२०,२१.५॥

ते त्वा मदा अमदन् तानि वृष्ण्या ते सोमासो वृत्रहत्येषु सत्पते ।
यत्कारवे दश वृत्राण्यप्रति बर्हिष्मते नि सहस्राणि बर्हयः ॥२०,२१.६॥

है सज्जनों के पालक इन्द्रदेव ! वृत्र को मारने वाले संग्राम में आपने बलवर्द्धक सोमरस का पान करके आनन्द एवं उत्साह को प्राप्त किया और तब आपने याजकों के निमित्त दस हजार असुरों का संहार किया ॥२०,२१.६॥

युधा युधमुप घेदेषि धृष्णुया पुरा पुरं समिदं हंस्योजसा ।
नम्या यदिन्द्र सख्या परावति निबर्हयो नमुचिं नाम मायिनम्
॥२०,२१.७॥

हे संघर्षशील शक्ति-सम्पन्न इन्द्रदेव ! आप शत्रु योद्धाओं से युद्ध करते रहे हैं। उनके अनेक नगरों को आपने अपने बल से ध्वस्त किया है। उन नमनशील, योग्य मित्र, मरुतों के सहयोग से आपने प्रपंची असुर'नमुचि' (मुक्त न करने वाले) को मार दिया है ॥२०,२१.७॥

त्वं करञ्जमुत पर्णयं वधीस्तेजिष्ठयातिथिग्वस्य वर्तनी ।
त्वं शता वङ्गृदस्याभिनत्पुरोऽनानुदः परिषूता ऋजिश्वना
॥२०,२१.८॥

हे इन्द्रदेव ! आपने 'अतिथिग्व' को प्रताड़ित करने वाले 'करंज' (कुत्सित स्वभावयुक्त) और 'पर्णय' (गतिशील) नामक असुरों का तेजस्वी अस्त्रों से वध किया। सहायकों के बिना ही 'वंगृद' (मर्यादा तोड़ने वाले) के सैकड़ों नगरों को गिराकर घिरे हुए 'जिश्वा(ऋजु-सरल मार्ग का अनुसरण करने वालों) को मुक्त किया ॥२०,२१.८॥

त्वमेतां जनराज्ञो द्विर्दशाबन्धुना सुश्रवसोपजग्मुषः ।

षष्टिं सहस्रा नवतिं नव श्रुतो नि चक्रेण रथ्या दुष्पदावृणक् ॥२०,२१.९॥

हे प्रसिद्ध इन्द्रदेव ! आपने बन्धुरहित 'सुश्रवस' (श्रेष्ठ कीर्ति वाले) राजा के सम्मुख लड़ने के लिए खड़े हुए बीस राजाओं को तथा उनके साठ हजार निन्यानबे सैनिकों को अपने दुष्प्राप्य चक्रव्यूह (अथवा गतिशील प्रक्रिया) द्वारा नष्ट कर दिया ॥२०,२१.९॥

त्वमाविथ सुश्रवसं तवोतिभिस्तव त्रामभिरिन्द्र तूर्वयाणम् ।
त्व अस्मै कुत्समतिथिग्वमायुं महे राज्ञे यूने अरन्धनायः ॥२०,२१.१०॥

हे इन्द्रदेव ! आपने अपने रक्षण-साधनों से 'सुश्रवस' की और पोषण साधनों से 'तूर्वयाण की रक्षा की। आपने इस महान् तरुण राजा के लिए 'कुत्स', 'अतिथिग्व' और 'आयु' नामक राजाओं को वश में किया ॥२०,२१.१०॥

य उदृचीन्द्र देवगोपाः सखायस्ते शिवतमा असाम ।
त्वां स्तोषाम त्वया सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ॥२०,२१.११॥

यज्ञ में स्तुत्य हे इन्द्रदेव ! देवों द्वारा रक्षित, हम आपके मित्र हैं । हम सर्वदा सुखी रहें । आपकी कृपा से हम उत्तम बल से युक्त, दीर्घायु को भली प्रकार धारण करते हैं तथा आपकी स्तुति करते हैं ॥२०,२१.११॥

सूक्त- २२

<u>वर्षा करने वाले इंद्र की प्रशंसा</u>

अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये ।
तृम्पा व्यश्नुही मदम् ॥२०,२२.१॥

हे बलशाली इन्द्रदेव ! इस यज्ञ में आपके लिए सोमरस समर्पित है ।आप इस तृप्तिकारक रस का पान करें॥२०,२२.१॥

मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन् ।
माकीं ब्रह्मद्विषो वनः ॥२०,२२.२॥

हे इन्द्रदेव ! आपसे रक्षण की कामना करने वाले मूख तथा उपहास करने वाले धूर्ती का आप पर कोई प्रभाव न पड़े। ज्ञान-द्वेषियों की आप कोई भी सहायता न करें ॥२०,२२.२॥

इह त्वा गोपरीणसा महे मन्दन्तु राधसे ।
सरो गौरो यथा पिब ॥२०,२२.३॥

हे इन्द्रदेव ! गौ-दुग्ध मिश्रित सोमरस को हवि देकर होता ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए आपकी प्रार्थना करते हैं। तालाब में जल पीने वाले मृग की भाँति आप सोमरस का पान करें ॥२०,२२.३॥

अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे ।
सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ॥२०,२२.४॥

हे याजको ! गोपालक, सत्यनिष्ठ सज्जनों के संरक्षक इन्द्रदेव की मन्त्रोच्चारण सहित प्रार्थना करें, जिससे उनकी शक्तियों का आभास हो सके ॥२०,२२.४॥

आ हरयः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि ।
यत्राभि संनवामहे ॥२०,२२.५॥

जिन इन्द्रदेव की हम अपने यज्ञ मण्डप में प्रार्थना करते हैं, उत्तम अश्व उनको यज्ञशाला में ले आएँ ॥२०,२२.५॥

इन्द्राय गाव आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु ।
यत्सीमुपह्वरे विदत्॥२०,२२.६॥

जब यज्ञस्थल के पास इन्द्रदेव मधुर रस का पान करते हैं, तब गौएँ उन्हें मधुर दुग्ध प्रदान करती हैं ॥२०,२२.६॥

सूक्त- २३

इंद्र से यज्ञ में आने का आग्रह

आ तू न इन्द्र मद्र्यग्घुवानः सोमपीतये ।
हरिभ्यां याह्यद्रिवः ॥२०,२३.१॥

हे इन्द्रदेव ! सोमपान के लिए हम आपका आवाहन करते हैं, आप हर संज्ञक अश्वों के साथ आएँ ॥२०,२३.१॥

सत्तो होता न ऋत्वियस्तिस्तिरे बर्हिरानुषक्।
अयुज्रन् प्रातरद्रयः ॥२०,२३.२॥

हमारे यज्ञ में ऋतु के अनुसार यज्ञकर्ता होता बैठे हैं। उन्होंने कुश के आसन बिछाएँ हैं और सोम-अभिषव के लिए पाषाण खण्ड को संयुक्त (तैयार) किया है । हे इन्द्रदेव ! आप सोमपान के निमित्त आएँ ॥२०,२३.२॥

इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः क्रियन्त आ बर्हिः सीद ।
वीहि शूर पुरोलाशम् ॥२०,२३.३॥

हे शूरवीर इन्द्रदेव ! स्तोतागण इन स्तुतियों को सम्पादित करते हैं । अतएव आप इस आसन पर बैठे और पुरोड़ाश का सेवन करें ॥२०,२३.३॥

रारन्धि सवनेषु ण एषु स्तोमेषु वृत्रहन् ।
उक्थेष्विन्द्र गिर्वणः ॥२०,२३.४॥

हे स्तुति-योग्य, वृत्रहन्ता इन्द्रदेव ! आप यज्ञ में तीनों सवनों में किये गये स्तोत्रों और मन्त्रों में रमण करें ॥२०,२३.४॥

मतयः सोमपामुरुं रिहन्ति शवसस्पतिम् ।
इन्द्रं वत्सं न मातरः ॥२०,२३.५॥

हमारी ये स्तुतियाँ महान् सोमपायी और बलों के अधिपति इन्द्रदेव को उसी प्रकार प्राप्त होती हैं, जिस प्रकार गौएँ अपने बछड़ों को प्राप्त होती हैं ॥२०,२३.५॥

स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे ।
न स्तोतारं निदे करः ॥२०,२३.६॥

हे इन्द्रदेव ! विपुल धनराशि दान देने के लिए आप सोमयुक्त हविष्यान्न से अपने शरीर को प्रसन्न करें । हम स्तोताओं को निन्दित न होने दें ॥२०,२३.६॥

वयमिन्द्र त्वायवो हविष्मन्तो जरामहे ।
उत त्वमस्मयुर्वसो ॥२०,२३.७॥

हे सबके आश्रय प्रदाता इन्द्रदेव ! आपकी अभिलाषा करते हुए हम हवियों से युक्त होकर आपकी स्तुति करते हैं। आप हमारी रक्षा करें ॥२०,२३.७॥

मारे अस्मद्वि मुमुचो हरिप्रियार्वाङ्याहि ।
इन्द्र स्वधावो मत्स्वेह ॥२०,२३.८॥

हे हरि संज्ञक अश्वों के प्रिय स्वामी इन्द्रदेव ! आप अपने घोड़ों को हमसे दूर जाकर न खोलें । हमारे पास आएँ। इस यज्ञ में आकर हर्षित हों ॥२०,२३.८॥

अर्वाञ्चं त्वा सुखे रथे वहतामिन्द्र केशिना ।
घृतस्नू बर्हिरासदे ॥२०,२३.९॥

हे इन्द्रदेव ! दीप्तिमान् (स्निग्ध) केशवाले अश्व आपको सुखकर रथ द्वारा हमारे निकट ले आएँ। आप यहाँ यज्ञस्थल पर कुश के पवित्र आसन पर सुशोभित हों ॥२०,२३.९॥

सूक्त-२४

इंद्र की स्तुति इंद्र को सोमपान के लिए बुलावा

उप नः सुतमा गहि सोममिन्द्र गवाशिरम् ।
हरिभ्यां यस्ते अस्मयुः ॥२०,२४.१॥

हे इन्द्रदेव ! याजकों की अभिलाषा करते हुए आप अश्वों से योजित अपने रथ द्वारा हमारे पास आएँ । हमारे द्वारा अभिषुत गोदुग्धादि मिश्रित सोम का पान करें ॥२०,२४.१॥

तमिन्द्र मदमा गहि बर्हिष्ठां ग्रावभिः सुतम् ।
कुविन् न्वस्य तृष्णवः ॥२०,२४.२॥

हे इन्द्रदेव ! आप पाषाणों से निष्पन्न कुश के आसन पर सुसज्जित तथा हर्षप्रदायक सोम के निकट आएँ। प्रचुर मात्रा में इसका पान करके तृप्त हों ॥२०,२४.२॥

इन्द्रमित्था गिरो ममाछागुरिषिता इतः ।
आवृते सोमपीतये ॥२०,२४.३॥

इन्द्रदेव के आवाहन के लिए की गई स्तुतियाँ, उनको सोमपान के लिए इस यज्ञस्थल पर भली-भाँति लाएँ ॥२०,२४.३॥

इन्द्रं सोमस्य पीतये स्तोमैरिह हवामहे ।
उक्थेभिः कुविदागमत्॥२०,२४.४॥

हम इन्द्रदेव को सोमपान करने के लिए यहाँ – इस यज्ञ में स्तुति गान करते हुए बुलाते हैं। स्तोत्रों द्वारा वे अनेक बार विभिन्न यज्ञों में आ चुके हैं ॥२०,२४.४॥

इन्द्र सोमाः सुता इमे तान् दधिष्व शतक्रतो ।
जथरे वाजिनीवसो ॥२०,२४.५॥

हे अन्न-धन के अधीश्वर, शतकर्मा इन्द्रदेव ! आपके लिए अभिषुत सोम प्रस्तुत है, इसे उदरस्थ करें ॥२०,२४.५॥

विद्मा हि त्वा धनंजयं वाजेषु दधृषं कवे ।
अधा ते सुम्नमीमहे ॥२०,२४.६॥

हे क्रान्तदर्शी इन्द्रदेव ! हम आपको शत्रुओं के पराभवकर्ता और धनों के विजेता के रूप में जानते हैं; अतएव हम आपसे धन की याचना करते हैं ॥२०,२४.६॥

इममिन्द्र गवाशिरं यवाशिरं च नः पिब ।
आगत्या वृषभिः सुतम् ॥२०,२४.७॥

हे इन्द्र !आप अपने बलवान् अश्वों द्वारा आकर हमारे अभिषुत, गो-दुग्ध तथा जौ मिश्रित सोम का पान करें॥२०,२४.७॥

तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्ये सोमं चोदामि पीतये ।
एष रारन्तु ते हृदि ॥२०,२४.८॥

हे इन्द्रदेव ! हम यज्ञस्थल पर आपके निमित्त सोमरस प्रस्तुत करते हैं । यह सोम आपके हृदय में रमण करे॥२०,२४.८॥

त्वां सुतस्य पीतये प्रत्नमिन्द्र हवामहे ।
कुशिकासो अवस्यवः ॥२०,२४.९॥

हे पुरातन इन्द्रदेव ! हम कुशिक वंशज आपकी संरक्षणकारी सामर्थ्यों की अभिलाषा करते हैं। सोमपान के

लिए यज्ञस्थल पर हम आपका आवाहन करते हैं ॥२०,२४.९॥

सूक्त- २५

इंद्र की महिमा का गान तथा अविनाशी इंद्र का पूजन

अश्वावति प्रथमो गोषु गछति सुप्रावीरिन्द्र मर्त्यस्तवोतिभिः ।
तमित्पृणक्षि वसुना भवीयसा सिन्धुमापो यथाभितो विचेतसः
॥२०,२५.१॥

हे इन्द्रदेव ! आपकी सामर्थ्य से रक्षित हुआ आपका उपासक अश्वों और गौओं से युक्त धन को पाकर अग्रणी होता है। जैसे जल सब ओर से समुद्र को प्राप्त होता है, वैसे ही आपके सम्पूर्ण धन उस उपासक को पूर्ण करके उसे भली प्रकार सन्तुष्ट करते हैं ॥२०,२५.१॥

आपो न देवीरुप यन्ति होत्रियमवः पश्यन्ति विततं यथा रजः
।
प्राचैर्देवासः प्र णयन्ति देवयुं ब्रह्मप्रियं जोषयन्ते वरा इव
॥२०,२५.२॥

होता (चमस पात्र) को जिस प्रकार जल धाराएँ प्राप्त होती हैं, उसी प्रकार देवगण अन्तरिक्ष से यज्ञ को देखकर अपने प्रिय स्तोताओं के निकट पहुँचकर उनकी मंत्रयुक्त प्रिय स्तुतियों को ग्रहण करते हैं। वे उन स्तोताओंको पूर्व की ओर श्रेष्ठ मार्गों से ले जाते हैं ॥२०,२५.२॥

अधि द्वयोरदधा उक्थ्यं वचो यतस्रुचा मिथुना या सपर्यतः ।
असंयत्तो व्रते ते क्षेति पुष्यति भद्रा शक्तिर्यजमानाय सुन्वते ॥२०,२५.३॥

हे इन्द्रदेव ! परस्पर संयुक्त दो अन्न पात्र आपके निमित्त समर्पित हैं। आपने उन पात्रों को स्तुति वचनों के साथ स्वीकार किया है । जो स्तोता आपके नियमों के अनुसार रहता है, उसकी आप रक्षा करते हैं और पुष्टि प्रदान करते हैं। सोमयाग करने वाले यजमान को आप कल्याणकारी शक्ति देते हैं ॥२०,२५.३॥

आदङ्गिराः प्रथमं दधिरे वय इद्धाग्नयः शम्या ये सुकृत्यया ।
सर्वं पणेः समविन्दन्त भोजनमश्वावन्तं गोमन्तमा पशुं नरः ॥२०,२५.४॥

हे इन्द्रदेव ! अंगिराओं ने अपने उत्तम कर्मों से अग्नि को प्रज्वलित करके सर्वप्रथम हविष्यान्न प्रदान किया है ।

अनन्तर उन श्रेष्ठ पुरुषों ने सभी अश्वों, गौओं से युक्त पशुरूप धन और भोज्य पदार्थों को प्राप्त किया ॥२०,२५.४॥

यज्ञैरथर्वा प्रथमः पथस्तते ततः सूर्यो व्रतपा वेन आजनि ।
आ गा आजदुशना काव्यः सचा यमस्य जातममृतं यजामहे ॥२०,२५.५॥

सर्वप्रथम 'अथर्वा' ने 'यज्ञ' के सम्पूर्ण मार्गों को विस्तृत किया। तदनन्तर व्रतपालक सूर्यदेव का प्राकट्य हुआ। पुन: उशना' (तेजस्वी ने समस्त गौओं (किरणों या वाणियों) को बाहर निकाला। हम सब इस जगत् के नियामक अविनाशी इन्द्रदेव की पूजा करते हैं ॥२०,२५.५॥

बर्हिर्वा यत्स्वपत्याय वृज्यतेऽर्को वा श्लोकमाघोषते दिवि ।
ग्रावा यत्र वदति कारुरुक्थ्यस्तस्येदिन्द्रो अभिपित्वेषु रण्यति ॥२०,२५.६॥

जिसके घर में उत्तम यज्ञादि कर्मों के निमित्त कुश काटे जाते हैं। सूर्योदय के पश्चात् आकाश में जहाँ स्तोत्रपाठ मुंजरित होते हैं । जहाँ उक्थ (स्तोत्र) वचनों सहित सोम कूटने के पाषाणों को शब्द गूंजता है; इन्द्रदेव उनके यहाँ

ही हविद्रव (सोमरस) का पान करके आनन्द पाते हैं ॥२०,२५.६॥

प्रोग्रां पीतिं वृष्ण इयर्मि सत्यां प्रयै सुतस्य हर्यश्व तुभ्यम् ।
इन्द्र धेनाभिरिह मादयस्व धीभिर्विश्वाभिः शच्या गृणानः ॥२०,२५.७॥

हरितवर्ण के अश्वाधिपति हे इन्द्रदेव ! आपके लिए सोम अभिषुत किया गया है। सुख- ऐश्वर्यों के वर्षक आप यज्ञ की ओर सुनिश्चित रूप से आयेंगे, ऐसा जानते हुए आपके पानार्थ सोम प्रस्तुत करते हैं। हे देव ! आप स्तोत्रों को सुन करके आनन्दित हों। आप सत्कर्म सम्पादित करें तथा नानाविध स्तोत्रों से परितृप्त हों ॥२०,२५.७॥

सूक्त- २६

इंद्र की स्तुति तथा अज्ञानी को ज्ञान देने वाले सूर्य का उदय

योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे ।
सखाय इन्द्रमूतये ॥२०,२६.१॥

सत्कर्मों के शुभारम्भ में एवं हर प्रकार के संग्राम में बलशाली इन्द्रदेव का हम अपने संरक्षण के लिए मित्रवत् आवाहन करते हैं ॥२०,२६.१॥

आ घा गमद्यदि श्रवत्सहस्रिणीभिरूतिभिः ।
वाजेभिरुप नो हवम् ॥२०,२६.२॥

वे इन्द्रदेव प्रार्थना से प्रसन्न होकर निश्चित ही सहस्रों रक्षा-साधनों तथा अन्न, ऐश्वर्य सहित हमारे पास आयेंगे ॥२०,२६.२॥

अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम् ।
यं ते पूर्वं पिता हुवे ॥२०,२६.३॥

हमें अपनी सहायता के लिए स्वर्गधाम के वासी, बहुतों के पास पहुँचकर, उन्हें नेतृत्व प्रदान करने वाले इन्द्रदेव का आवाहन करते हैं। हमारे पिता ने भी ऐसा ही किया था ॥२०,२६.३॥

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः ।
रोचन्ते रोचना दिवि ॥२०,२६.४॥

वे(इन्द्रदेव) द्युलोक में आदित्य रूप में, भूमि पर अहिंसक अग्नि के रूप में, अन्तरिक्ष में सर्वत्र प्रसरणशील वायु के रूप में उपस्थित हैं। उन्हें उक्त तीनों लोकों के प्राणी अपने कार्यों में देवत्वरूप से सम्बद्ध मानते हैं। द्युलोक में प्रकाशित होने वाले नक्षत्र-ग्रह आदि उन्हीं (इन्द्रदेव) के ही स्वरूपांश हैं (अर्थात् तीनों लोकों की प्रकाशमयी, प्राणमयी शक्तियों के वे ही एक मात्र संगठक हैं) ॥२०,२६.४॥

युञ्जन्ति अस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे ।
शोणा धृष्णू नृवाहसा ॥२०,२६.५॥

इन्द्रदेव के रथ में दोनों ओर रक्तवर्ण, संघर्षशील, मनुष्यों को गति देने वाले दो घोड़े नियोजित रहते हैं ॥२०,२६.५॥

केतुं कृण्वन्न् अकेतवे पेशो मर्या अपेशसे ।

समुषद्भिरजायथाः ॥२०,२६.६॥

हे मनुष्यो ! तुम रात्रि में निद्राभिभूत होकर, संज्ञा शून्य निश्चेष्ट होकर, प्रातः पुनः सचेत एवं सचेष्ट होकर मानो प्रतिदिन नवजीवन प्राप्त करते हो (प्रति- दिन जन्म लेते हो) ॥२०,२६.६॥

सूक्त- २७

इंद्र की स्तुति

यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत्।
स्तोता मे गोषखा स्यात्॥२०,२७.१॥

हे इन्द्रदेव ! जिस प्रकार आप समस्त ऐश्वर्यों के स्वामी हैं, वैसा ही यदि मैं बन जाऊँ, तो मेरे स्तोता भी गौओं के साथी (वाणी का धनी अथवा इन्द्रियों का मित्र) हो जाएँ ॥२०,२७.१॥

शिक्षेयमस्मै दित्सेयं शचीपते मनीषिणे ।
यदहं गोपतिः स्याम् ॥२०,२७.२॥

है इन्द्रदेव ! यदि मैं गौओं (वाणी या इन्द्रियों) का स्वामी बन जाऊँ, तो मनीषियों को दान देने वाला एवं उन्हें शिक्षा, सहायता देने वाला बनूं ॥२०,२७.२॥

धेनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते ।

गामश्वं पिप्युषी दुहे ॥२०,२७.३॥

हे इन्द्रदेव ! सोमयाजी (सोम यज्ञकर्ता) के लिए आपकी सत्यनिष्ठ धेनु (वाणी) पुष्टि प्रदायिनी है । वह गौ (पोषक प्रवाहों) तथा अश्वों (शक्ति प्रवाहों) का दोहन करती है ॥२०,२७.३॥

न ते वर्तास्ति राधस इन्द्र देवो न मर्त्यः ।
यद्दित्ससि स्तुतो मघम् ॥२०,२७.४॥

हे इन्द्रदेव ! जब आप स्तुत्य होकर याजक को धन प्रदान करना चाहते हैं, तब आपको धन देने से देवता या मानव कोई रोक नहीं सकता ॥२०,२७.४॥

यज्ञ इन्द्रमवर्धयद्यद्भूमिं व्यवर्तयत्।
चक्राण ओपशं दिवि ॥२०,२७.५॥

जब यज्ञ ने इन्द्र (की शक्ति) को बढ़ाया, (तो) इन्द्रदेव ने द्युलोक में आवास बनाकर भूमि का विस्तार किया॥२०,२७.५॥

वावृधानस्य ते वयं विश्वा धनानि जिग्युषः ।
ऊतिमिन्द्रा वृणीमहे ॥२०,२७.६॥

हे इन्द्रदेव ! हम आपके उस दिव्य संरक्षण को प्राप्त करना चाहते हैं, जिससे हम समृद्ध हों तथा शत्रुओं के समस्त ऐश्वर्यों को जीत सकें ॥२०,२७.६॥

सूक्त- २८

इंद्र के कार्यों का वर्णन

व्यन्तरिक्षमतिरन् मदे सोमस्य रोचना ।
इन्द्रो यदभिनद्वलम् ॥२०,२८.१॥

सोमपान से उत्पन्न उमंग में जब इन्द्रदेव ने बलवान् मेघों को विदीर्ण किया, तो (प्रकारान्तर से) उन्होंने प्रकाशवान् आकाश का भी विस्तार किया ॥२०,२८.१॥

उद्गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन् गुहा सतीः ।
अर्वाञ्चं नुनुदे वलम् ॥२०,२८.२॥

सूर्यरूप हे इन्द्रदेव ! आपने गुफा में स्थित (अप्रकट) किरणों (गौओं) को प्रकटकर, उन्हें देहधारियों (अंगिराओं) तक पहुँचाया। उन्हें रोके रखने वाला असुर (बल) नीचा मुँह करके पलायन कर गया ॥२०,२८.२॥

इन्द्रेण रोचना दिवो दृल्हानि दृंहितानि च ।

स्थिराणि न पराणुदे ॥२०,२८.३॥

अन्तरिक्ष में स्थित सभी प्रकाशवान् नक्षत्रों को इन्द्रदेव ने सुदृढ़ तथा समृद्ध किया। उन नक्षत्रों को कोई भी उनके स्थान से च्युत नहीं कर सकता ॥२०,२८.३॥

अपामूर्मिर्मदन्न् इव स्तोम इन्द्राजिरायते ।
वि ते मदा अराजिषुः ॥२०,२८.४॥

हे इन्द्रदेव ! जिस प्रकार समुद्र की लहरें उछलती चलती हैं, उसी प्रकार आपके लिए की गई प्रार्थनाएँ शीघ्रता से पहुँचकर, आपके उत्साह को बढ़ाती हैं ॥२०,२८.४॥

सूक्त- २९

इंद्र की स्तुति तथा वर्णन

त्वं हि स्तोमवर्धन इन्द्रास्युक्थवर्धनः ।
स्तोतृणामुत भद्रकृत्॥२०,२९.१॥

हे इन्द्रदेव ! आप स्तोत्रों तथा स्तुतियों से सन्तुष्ट, समृद्ध होते हैं । आप स्तुतिकर्ताओं के लिए हितकारी हैं॥२०,२९.१॥

इन्द्रमित्केशिना हरी सोमपेयाय वक्षतः ।
उप यज्ञं सुराधसम् ॥२०,२९.२॥

बालों से युक्त दोनों अश्व, श्रेष्ठ ऐश्वर्य सम्पन्न इन्द्रदेव को सोम पीने के लिए यज्ञ मण्डप के समीप ले जाते हैं॥२॥

अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः ।
विश्वा यदजय स्पृधः ॥२०,२९.३॥

इन्द्रदेव ने नमुचि (मुक्त न करने वाले असुर या आसुरी प्रवृत्ति के सिर को अप्(जल या प्राण प्रवाह) के फेन (उफान-शक्ति) से नष्ट कर दिया ॥२०,२९.३॥

मायाभिरुत्सिसृप्सत इन्द्र द्यामारुरुक्षतः ।
अव दस्यूंरधूनुथाः ॥२०,२९.४॥

हे इन्द्रदेव ! आप अपनी माया के द्वारा सर्वत्र विद्यमान हैं। आपने द्युलोक में बढ़ने वाले दस्युओं (वृत्र, अहि आदि) को नीचे धकेल दिया ॥२०,२९.४॥

असुन्वामिन्द्र संसदं विषूचीं व्यनाशयः ।
सोमपा उत्तरो भवन् ॥२०,२९.५॥

हे इन्द्रदेव ! आप सोमपान करने वाले तथा महान् हैं । सोमयज्ञ न करने वाले (स्वार्थी) मनुष्यों के संगठन को आपस में लड़ाकर, आपने विनष्ट कर दिया ॥२०,२९.५॥

सूक्त- ३०

इंद्र के अश्वों, सुंदर शरीर व शस्त्रों का वर्णन

प्र ते महे विदथे शंसिषं हरी प्र ते वन्वे वनुषो हर्यतं मदम् ।
घृतं न यो हरिभिश्चारु सेचत आ त्वा विशन्तु हरिवर्पसं गिरः ॥२०,३०.१॥

हे इन्द्रदेव ! आपके दोनों घोड़ों की, इस महायज्ञ में हम अर्चना करते हैं। आपके सेवनीय, प्रशंसा- योग्य उत्साह की हम कामना करते हैं । जो हरि (हरणशील सूर्यादि) के माध्यम से घृत (तेज अथवा जल सिंचित करते हैं, ऐसे मनोहारी इन्द्रदेव के समीप हमारे स्तोत्र पहुँचें ॥२०,३०.१॥

हरिं हि योनिमभि ये समस्वरन् हिन्वन्तो हरी दिव्यं यथा सदः ।
आ यं पृणन्ति हरिभिर्न धेनव इन्द्राय शूषं हरिवन्तमर्चत ॥२०,३०.२॥

हे विग्गण ! जो अश्व द्रुतगति से इन्द्रदेव को दिव्य धामों में पहुँचाते हैं। इन्द्रदेव के उन दोनों अश्वों की स्तुति करें । अश्वों सहित इन्द्रदेव की कल्याणप्रद सामर्थ्य की स्तुति करें । जैसे गौएँ दूध देती हैं, उसी प्रकार आप भी हरिताभ सोम एवं स्तुतियों से इन्द्रदेव को तृप्त करें ॥२०,३०.२॥

सो अस्य वज्रो हरितो य आयसो हरिर्निकामो हरिरा गभस्त्योः ।
द्युम्नी सुशिप्रो हरिमन्युसायक इन्द्रे नि रूपा हरिता मिमिक्षिरे ॥२०,३०.३॥

इन्द्रदेव का जो वज्र हरित (हरणशील) और लौह धातु का है, उस शत्रुनाशक वज्र को दोनों हाथों से धारण किया जाता है । इन्द्रदेव वैभवशाली, सुन्दर हनुयुक्त हैं और क्रोधित होकर दुष्टजनों को बाणों द्वारा विनष्ट करने वाले हैं। हरिताभ सोम द्वारा इन्द्रदेव को अभिषिंचित किया जा रहा है ॥२०,३०.३॥

दिवि न केतुरधि धायि हर्यतो विव्यचद्वज्रो हरितो न रंह्या ।
तुददहिं हरिशिप्रो य आयसः सहस्रशोका अभवद्धरिम्भरः ॥२०,३०.४॥

अन्तरिक्ष में सूर्य के सदृश कान्तिमान् वज्र, प्रशंसनीय होकर सबको संव्याप्त करता है, मानो उसने अपनी गति से रथ के वहनकर्ता अश्वों के सदृश ही सम्पूर्ण दिशाओं को संव्याप्त किया है । सुन्दर हनु से युक्त और सोमरस पानकर्ता इन्द्रदेव, लोहे से विनिर्मित वज्रास्त्र के द्वारा वृत्रासुर के हननकाल में असाधारण आभायुक्त हुए ॥२०,३०.४॥

त्वंत्वमहर्यथा उपस्तुतः पूर्वेभिरिन्द्र हरिकेश यज्वभिः ।
त्वं हर्यसि तव विश्वमुक्थ्यमसामि राधो हरिजात हर्यतम् ॥२०,३०.५॥

हे हरिकेश इन्द्रदेव ! पुरातन कालीन ऋषियों द्वारा आपकी ही यज्ञ में प्रार्थना की जाती थी तथा आप यज्ञ में उपस्थित होते थे। आप सबके लिए प्रशंसा योग्य हैं । हे इन्द्रदेव ! आपके सभी प्रकार के अन्न प्रशंसनीय हैं, आप कान्तिमान् और असाधारण विशेषताओं से सम्पन्न हैं ॥२०,३०.५॥

सूक्त- ३१

अश्वों द्वारा इंद्र को यज्ञ में लाया जाना तथा इंद्र का निवास

ता वज्रिणं मन्दिनं स्तोम्यं मद इन्द्रं रथे वहतो हर्यता हरी ।
पुरूण्यस्मै सवनानि हर्यत इन्द्राय सोमा हरयो दधन्विरे
॥२०,३१.१॥

स्तुतियोग्य और वज्रधारी इन्द्रदेव जब सोमरस के पान हेतु हर्षित होकर सन्नद्ध होते हैं, तो उस समय दो सुन्दर हरितवर्ण घोड़े उनके रथ में जोते जाकर उनको वहन करते हैं । वहाँ (हमारे यज्ञस्थल में) सोम की कामना करने वाले इन्द्रदेव के निमित्त अनेक बार सोमरस को अभिषवण किया जाता है ॥२०,३१.१॥

अरं कामाय हरयो दधमिरे स्थिराय हिन्वन् हरयो हरी तुरा
।
अर्वद्भिर्यो हरिभिर्जोषमीयते सो अस्य कामं हरिवन्तमानशे
॥२०,३१.२॥

इन्द्रदेव के निमित्त यथोचित मात्रा में सोमरस रखा गया है, उसी सोमरस द्वारा इन्द्रदेव के अविचल घोड़ों को यज्ञ की ओर वेगशील किया जाता है। गतिशील घोड़े जिस रथ को युद्ध- भूमि की ओर वहन करते हैं, वही रथ इन्द्रदेव को कमनीय और सोमरस- सम्पन्न यज्ञ में प्रतिष्ठित करता है ॥२०,३१.२॥

हरिश्मशारुर्हरिकेश आयसस्तुरस्पेये यो हरिपा अवर्धत ।
अर्वद्भिर्यो हरिभिर्वाजिनीवसुरति विश्वा दुरिता पारिषद्धरी
॥२०,३१.३॥

हरि (किरणों) को श्मश्रु (दाढ़ी-मूंछ) एवं केशों के समान धारणकर्ता, लोहे के समान सुदृढ़ शरीरधारी इन्द्रदेव, तीव्रता से हर्षित करने वाले सोमरस का पान करके उत्साहित होते हैं। वे गतिशील अश्वों से यज्ञों तक पहुँचते हैं। दोनों अश्वों को जोतकर वे हमारे सभी प्रकार के विघ्नों का निवारण करें ॥२०,३१.३॥

श्रुवेव यस्य हरिणी विपेततुः शिप्रे वाजाय हरिणी दविध्वतः ।
प्र यत्कृते चमसे मर्मृजद्धरी पीत्वा मदस्य हर्यतस्यान्धसः
॥२०,३१.४॥

बलशाली इन्द्रदेव के दो हरितवर्ण अथवा दीप्तिमान् नेत्र यज्ञवेदी में दो सुवों के समान ही विशिष्ट ढंग से सोमरस पर केन्द्रित रहते हैं। उनके हरणशील दोनों जबड़े सोमपान हेतु कम्पायमान होते हैं। शोधित चमस-पात्र में जो अति सुखप्रद, उज्ज्वल सोमरस था, उसे पीकर वे अपने दोनों अश्वों के शरीरों को परिमार्जित करते हैं ॥२०,३१.४॥

उत स्म सद्म हर्यतस्य पस्त्योरत्यो न वाजं हरिवामचिक्रदत्।
मही चिद्धि धिषणाहर्यदोजसा बृहद्वयो दधिषे हर्यतस्चिदा
॥२०,३१.५॥

कान्तिमान् इन्द्रदेव का आवास द्यावा-पृथिवी पर ही है। वे रथारूढ़ होकर घोड़े के समान ही अतिवेग से समर क्षेत्र में गमन करते हैं। हे इन्द्रदेव ! उत्कृष्ट स्तोत्र आपको प्रशंसित करते हैं। आप अपनी सामर्थ्यानुसार विपुल अन्न को धारण करते हैं ॥२०,३१.५॥

सूक्त- ३२

इंद्र की महिमा

आ रोदसी हर्यमाणो महित्वा नव्यंनव्यं हर्यसि मन्म नु प्रियम्
।
प्र पस्त्यमसुर हर्यतं गोराविष्कृधि हरये सूर्याय ॥२०,३२.१॥

हे इन्द्रदेव ! आप अपनी महत्ता से द्यावा-पृथिवी को संव्याप्त करते हैं और नवीन प्रिय स्तोत्रों की कामना करते हैं । हे बल- सम्पन्न इन्द्रदेव ! आप गो (पृथ्वी) को हर्षित करने के लिए प्रेरक सूर्यदेव के लिए घर की तरहआकाश को प्रकट करते हैं ॥२०,३२.१॥

आ त्वा हर्यन्तं प्रयुजो जनानां रथे वहन्तु हरिशिप्रमिन्द्र ।
पिबा यथा प्रतिभृतस्य मध्वो हर्यन् यज्ञं सधमादे दशोणिम्
॥२०,३२.२॥

है सुन्दर हनुयुक्त इन्द्रदेव ! आपके अश्व, रथ में जोते जाकर मनुष्यों द्वारा सम्पादित यज्ञ में आपको पहुँचाएँ। आपके निमित्त प्रेमपूर्वक तैयार किया गया मधुर सोमरसे प्रस्तुत है,

उसे आप पिएँ । दस अँगुलियों से अभिषवित सोमरस, जो यज्ञ का साधनरूप है, आप युद्ध में विजय हेतु उसे पीने की कामना करें ॥२०,३२.२॥

अपाः पूर्वेषां हरिवः सुतानामथो इदं सवनं केवलं ते ।
ममद्धि सोमं मधुमन्तमिन्द्र सत्रा वृषं जथर आ वृषस्व ॥२०,३२.३॥

हे अश्वयुक्त इन्द्रदेव ! पहले प्रातः सवन में सोमरस दिया गया है, उसको आपने ग्रहण किया। इस समय (माध्यन्दिन सवन में) जो सोम प्रस्तुत है, वह मात्र आपके निमित्त ही हैं। आप इस मीठे सोमरस से आनन्द प्राप्तकरें । हे विपुल वृष्टिकर्ता इन्द्रदेव ! आप अपने उदर को सोमरस से परिपूर्ण करें ॥२०,३२.३॥

सूक्त- ३३

इंद्र के लिए सोम रस का संस्कार

अप्सु धूतस्य हरिवः पिबेह नृभिः सुतस्य जठरं पृणस्व ।
मिमिक्षुर्यमद्रय इन्द्र तुभ्यं तेभिर्वर्धस्व मदमुक्थवाहः ॥२०,३३.१॥

अश्वों के अधिपति हे इन्द्रदेव ! जल में शोधित, इस यज्ञ में लाये गये सोमरस का पान करें। इससे अपनी उदरपूर्ति करें । हे प्रशंसनीय इन्द्रदेव ! पाषाणों द्वारा जिसका अभिषवण किया गया है, आप उसे पीकर उत्साहित होकर हमारी स्तुतियों को ग्रहण करें ॥२०,३३.१॥

प्रोग्रां पीतिं वृष्ण इयर्मि सत्यां प्रयै सुतस्य हर्यश्व तुभ्यम् ।
इन्द्र धेनाभिरिह मादयस्व धीभिर्विश्वाभिः शच्या गृणानः ॥२०,३३.२॥

हरिताश्वपति हे इन्द्र ! आपके लिए सोम अभिषवित किया गया है। सुख-ऐश्वर्यों के वर्षक आप यज्ञ की ओर सुनिश्चित रूप से आयेंगे, ऐसा जानते हुए आपके पानार्थ सोम प्रस्तुत

करते हैं । हे देव ! आप स्तोत्रों को ग्रहण करके आनन्दित हों । आप समस्त बुद्धियों और शक्तियों के सहित स्तुत्य हैं ॥२०,३३.२॥

ऊती शचीवस्तव वीर्येण वयो दधाना उशिज ऋतज्ञाः । प्रजावदिन्द्र मंसो दुरोणे तस्थुर्गृणन्तः सधमाद्यासः ॥२०,३३.३॥

हे इन्द्रदेव ! उशिजू वंशज यज्ञ कर्म के विशेषज्ञ हैं। वे आपके आश्रित होकर आपके प्रभाव से अन्न और सन्तान प्राप्त करके यजमान के यज्ञगृह में रहने लगे। वे सभी आनन्द विभोर होकर आपकी प्रार्थना करने लगे ॥२०,३३.३॥

सूक्त- ३४

इंद्र के बल की महिमा तथा शंबर असुर का वध

यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यमूषत्।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः
॥२०,३४.१॥

हे मनुष्यो ! अपने पराक्रम के प्रभाव से ख्याति प्राप्त उन मनस्वी इन्द्रदेव ने उत्पन्न होते ही अपने श्रेष्ठ कर्मों से देवताओं को अलंकृत कर दिया था, जिनकी शक्ति से आकाश और पृथिवी दोनों लोक भयभीत हो गये ॥२०,३४.१॥

यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्यः पर्वतान् प्रकुपितामरम्णात्।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात्स जनास इन्द्रः
॥२०,३४.२॥

हे मनुष्यो ! उन इन्द्रदेव ने विशाल आकाश को मापा, द्युलोक को धारण किया तथा काँपती हुई पृथिवी को

मजबूत आधार प्रदान करके क्रुद्ध पर्वतों को स्थिर किया ॥२०,३४.२॥

यो हत्वाहिमरिणात्सप्त सिन्धून् यो गा उदाजदपधा वलस्य ।
यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान संवृक्समत्सु स जनास इन्द्रः ॥२०,३४.३॥

हे मनुष्यो ! जिन्होंने वृत्र राक्षस को मारकर (जल वृष्टि द्वारा) सात नदियों को प्रवाहित किया, जिन्होंने बल (राक्षसों द्वारा अपहृत की गयीं गौओं को मुक्त कराया, जिन्होंने पाषाणों के बीच अग्निदेव को उत्पन्न किया, जिन्होंनेशत्रुओं का संहार किया, वे ही इन्द्रदेव हैं ॥२०,३४.३॥

येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि यो दासं वर्णमधरं गुहाकः ।
श्वघ्नीव यो जिगीवां लक्षमाददर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः ॥२०,३४.४॥

हे मनुष्यो ! जिन्होंने समस्त गतिशील लोकों का निर्माण किया, जिन्होंने दास वर्ण (अमानवीय आचरण करने वालों) को निम्न स्थान प्रदान किया; जिन्होंने अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया और व्याध द्वारा पशुओं के समान शत्रुओं की

समृद्धि को अपने अधिकार में ले लिया, वे ही इन्द्रदेव हैं ॥२०,३४.४॥

यं स्मा पृछन्ति कुह सेति घोरमुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम् ।
सो अर्यः पुष्टीर्विज इवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः ॥२०,३४.५॥

जिन इन्द्रदेव के बारे में लोग पूछा करते हैं कि वे कहाँ हैं? कुछ लोग कहते हैं कि वे हैं ही नहीं । इन्द्रदेव (उन न मानने वाले शत्रुओं की पोषणकारी सम्पत्ति को वीरता के साथ नष्ट कर देते हैं। हे मनुष्यो ! इन इन्द्रदेवके प्रति श्रद्धा व्यक्त करो, ये सबसे महान् देव इन्द्र ही हैं ॥२०,३४.५॥

यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः ।
युक्तग्राव्णो योऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः ॥२०,३४.६॥

हे मनुष्यो ! जो दरिद्रों, ज्ञानियों तथा स्तुति करने वालों को धन प्रदान करते हैं। सोमरस निकालने के लिए पत्थर रखकर (कूटने के लिए जो यजमान तैयार हैं, उस यजमान की जो रक्षा करते हैं, वे ही इन्द्रदेव हैं ॥२०,३४.६॥

यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः ।
यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः ॥२०,३४.७॥

हे मनुष्यो ! जिनके अधीन समस्त ग्राम, घोड़े तथा रथ हैं, जिनने सूर्य तथा उषा को उत्पन्न किया, जो समस्त प्रकृति के संचालक हैं, वे ही इन्द्रदेव हैं ॥२०,३४.७॥

यं क्रन्दसी संयती विह्वयेते परेऽवरे उभया अमित्राः ।
समानं चिद्रथमातस्थिवांसा नाना हवेते स जनास इन्द्रः ॥२०,३४.८॥

हे मनुष्यो ! परस्पर साथ चलने वाले द्युलोक तथा पृथिवीं लोक जिन्हें सहायता के लिए बुलाते हैं, महान् तथा निम्न स्तरीय शत्रु भी जिन्हें युद्ध में मदद के लिए बुलाते हैं, एकरथ पर आरूढ़ दो वीर साथ- साथ जिन्हें मदद के लिए बुलाते हैं, वे ही इन्द्रदेव हैं ॥२०,३४.८॥

यस्मान् न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते ।
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत्स जनास इन्द्रः ॥२०,३४.९॥

हे मनुष्यो ! जिनकी सहायता के बिना शूरवीर युद्ध में विजयी नहीं होते, युद्धरत वीर पुरुष अपने संरक्षण के लिए जिन्हें पुकारते हैं, जो समस्त संसार को यथाविधि जानते हुए अपरिमित शक्तिवाले शत्रुओं का संहार कर देते हैं, वे ही इन्द्रदेव हैं ॥२०,३४.९॥

यः शस्वतो मह्येनो दधानान् अमन्यमानां छर्वा जघान ।
यः शर्धते नानुददाति शृध्यां यो दस्योर्हन्ता स जनास इन्द्रः ॥२०,३४.१०॥

हे मनुष्यो ! जिनने अपने वज्र से महान् पापी शत्रुओं का हनन किया, जो अहंकारी मनुष्यों का गर्व नष्ट कर देते हैं, जो दूसरे के पदार्थों का हरण करने वाले दुष्टों के नाशक हैं, वे ही इन्द्रदेव हैं ॥२०,३४.१०॥

यः शम्भरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत्।
ओजायमानं यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इन्द्रः ॥२०,३४.११॥

हे मनुष्यो ! जिनने चालीसवें वर्ष पर्वत में छिपे हुए शंबर राक्षस को ढूंढ निकाला, जिनने जल को रोककर रखने

वाले सोये हुए असुर वृत्र को मारा, वे ही इन्द्रदेव हैं ॥२०,३४.११॥

यः शम्भरं पर्यतरत्कसीभिर्योऽचारुकास्नापिबत्सुतस्य ।
अन्तर्गिरौ यजमानं बहुं जनं यस्मिन्न् आमूर्छत्स जनास इन्द्रः ॥२०,३४.१२॥

हे मनुष्यो ! जिन्होंने अपने वज्र से मेघों को विदीर्ण किया, जो सुरुचिपूर्वक सोमरस का पान करते हैं, जो यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म करने वालों को पर्वत शिखर की भाँति ऊँचा उठा देते हैं, वे ही इन्द्रदेव हैं ॥२०,३४.१२॥

यः सप्तरश्मिर्वृषभस्तुविष्मान् अवासृजत्सर्तवे सप्त सिन्धून् ।
यो रौहिणमस्फुरद्वज्रबाहुर्द्यामारोहन्तं स जनास इन्द्रः ॥२०,३४.१३॥

हे मनुष्यो ! जो सात किरणों वाले बलशाली और ओजस्वी देव सात नदियों (धाराओं) को प्रवाहित करते हैं। जिनने धुलोक की ओर चढ़ती रोहिणी को अपने हाथ के वज्र से रोक लिया, वे ही इन्द्रदेव हैं ॥२०,३४.१३॥

द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते ।

यः सोमपा निचितो वज्रबाहुर्यो वज्रहस्तः स जनास इन्द्रः ॥२०,३४.१४॥

हे मनुष्यों ! जिनके प्रति झुलोक तथा पृथिवी लोक नमनशील हैं, जिनके बल से पर्वत भयभीत रहते हैं, जो सोमपान करने वाले, वज्र के समान भुजाओं वाले तथा शरीर से महान् बलशाली हैं, वे ही इन्द्रदेव हैं ॥२०,३४.१४॥

यः सुन्वन्तमवति यः पचन्तं यः शंसन्तं यः शशमानमूती ।
यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य सोमो यस्येदं राधः स जनास इन्द्रः ॥२०,३४.१५॥

हे मनुष्यो !जो सोम शोधित करने वालों तथा स्तुतियाँ करने वालों की रक्षा करते हैं। सोम जिनके बल को, ज्ञान जिनके यश को तथा आहुतियाँ जिनकी सामर्थ्य को बढ़ाती हैं, वे ही इन्द्रदेव हैं ॥२०,३४.१५॥

जातो व्यख्यत्पित्रोरुपस्थे भुवो न वेद जनितुः परस्य ।
स्तविष्यमाणो नो यो अस्मद्व्रता देवानां स जनास इन्द्रः ॥२०,३४.१६॥

हे मनुष्यो ! जो उत्पन्न होते ही द्युलोक की गोद में प्रकाशित हुए। जो मातृरूपा पृथ्वी तथा पितृरूप द्युलोक

को भी नहीं जानते और जो हमारे द्वारा स्तुति किये जाने पर दिव्य व्रतों को पूर्ण करते हैं, वे ही इन्द्रदेव हैं ॥२०,३४.१६॥

यः सोमकामो हर्यश्वः सूरिर्यस्माद्रेजन्ते भुवनानि विश्वा ।
यो जघान शम्बरं यश्च शुष्णं य एकवीरः स जनास इन्द्रः ॥२०,३४.१७॥

हे मनुष्यो ! सोमरस की कामना करते हुए जो हरि नामक घोड़ों को अच्छी प्रकार चलाते हैं। जिनके द्वारा शम्बर और शुष्ण असुरों का संहार किया गया है । जो पराक्रमी कार्यों में असाधारण शौर्य दिखाते हैं, जिनसे सभी प्राणी भयभीत रहते हैं, वे ही इन्द्रदेव हैं ॥२०,३४.१७॥

यः सुन्वते पचते दुध्र आ चिद्वाजं दर्दर्षि स किलासि सत्यः ।
वयं त इन्द्र विश्वह प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम ॥२०,३४.१८॥

जो सोमयज्ञ करने वाले तथा सोमरस को शोधित करने वाले याजकों को धन प्रदान करते हैं, वे निश्चित रूप से सत्यरूप इन्द्रदेव हैं। हे इन्द्रदेव ! हम सन्ततियुक्त प्रियजनों के साथ सदैव आपका यशोगान करें ॥२०,३४.१८॥

सूक्त- ३५

इंद्र की स्तुति तथा महान इंद्र के असाधारण कर्म का वर्णन

अस्मा इदु प्र तवसे तुराय प्रयो न हर्मि स्तोमं माहिनाय ।
ऋचीषमायाध्रिगव ओहमिन्द्राय ब्रह्माणि राततमा ॥२०,३५.१॥

शीघ्र कार्य करने वाले मंत्रों द्वारा वर्णनीय महान् कीर्ति वाले, अबाध गति वाले इन्द्रदेव के लिए हम प्रशंसात्मक मंत्रों का गान करते हुए हविष्यान्न अर्पित करते हैं ॥२०,३५.१॥

अस्मा इदु प्रय इव प्र यंसि भराम्यान्गूषं बाधे सुवृक्ति ।
इन्द्राय हृदा मनसा मनीषा प्रत्नाय पत्ये धियो मर्जयन्त ॥२०,३५.२॥

हम उन इन्द्रदेव के निमित्त हविष्य के समान स्तोत्र अर्पित करते हैं; उन शत्रुनाशक, इन्द्रदेव के लिए उत्तम स्तुति-गान करते हैं ।षिगण उन पुरातन इन्द्रदेव के लिए हृदय, मन और बुद्धि के द्वारा पवित्र स्तुतियाँ करते हैं ॥२०,३५.२॥

अस्मा इदु त्यमुपमं स्वर्षां भराम्याङ्गूषमास्येन ।
मंहिष्ठमच्छोक्तिभिर्मतीनां सुवृक्तिभिः सूरिं वावृधध्यै ॥२०,३५.३॥

हम महान् विद्वान् इन्द्रदेव को आकृष्ट करने वाली उनकी महिमा के अनुरूप उत्तम स्तुतियों को निर्मल बुद्धि से नादपूर्वक उच्चारित करते हैं ॥२०,३५.३॥

अस्मा इदु स्तोमं सं हिनोमि रथं न तष्टेव तत्सिनाय ।
गिरश्च गिर्वाहसे सुवृक्तीन्द्राय विश्वमिन्वं मेधिराय ॥२०,३५.४॥

जैसे त्वष्टादेव रथ का निर्माण करके इन्द्रदेव को प्रदान करते हैं, वैसे ही हम समस्त कामनाओं को सिद्ध करने वाले, स्तुत्य, मेधावी इन्द्रदेव के लिए अपनी वाणियों से सर्वप्रसिद्ध श्रेष्ठ स्तोत्रों का गान करते हैं ॥२०,३५.४॥

अस्मा इदु सप्तिमिव श्रवस्येन्द्रायार्कं जुह्वा समञ्जे ।
वीरं दानौकसं वन्दध्यै पुरां गूर्तश्रवसं दर्माणम् ॥२०,३५.५॥

अश्व को रथ से नियोजित करने के समान हम धन की कामना से इन्द्रदेव के निमित्त स्तोत्रों को वाणी से युक्त

करते हैं। ये स्तोत्र हम उन वीर, दानशील, विपुल यशस्वी, शत्रु के नगरों को ध्वस्त करने वाले इन्द्रदेव की वन्दना के रूप में उच्चारित कर रहे हैं ॥२०,३५.५॥

अस्मा इदु त्वष्टा तक्षद्वज्रं स्वपस्तमं स्वर्यं रणाय ।
वृत्रस्य चिद्विदद्येन मर्म तुजन्न् ईशानस्तुजता कियेधाः ॥२०,३५.६॥

लक्ष्य को भली प्रकार बेधने वाले शक्तिशाली वज्र को त्वष्टादेव ने युद्ध के निमित्त इन्द्रदेव के लिए तैयार किया। उसी वज्र से शत्रुनाशक, अति बलवान् इन्द्रदेव ने वृत्र के मर्म स्थान पर प्रहार करके उसे मारी ॥२०,३५.६॥

अस्येदु मातुः सवनेषु सद्यो महः पितुं पपिवां चार्वन्ना ।
मुषायद्विष्णुः पचतं सहीयान् विध्यद्वराहं तिरो अद्रिमस्ता ॥२०,३५.७॥

वृष्टि के द्वारा माता की भाँति जगत् का श्रेष्ठ निर्माण करने वाले महान् इन्द्रदेव ने यज्ञों में हवि का सेवन किया और सोम का शीघ्र पान किया। उन सर्वव्यापक इन्द्रदेव ने शत्रुओं के धन को जीता और वज्र का प्रहारकरके मेघों का भेदन किया ॥२०,३५.७॥

अस्मा इदु ग्नाश्चिद्देवपत्नीरिन्द्रायार्कमहिहत्य ऊवुः ।
परि द्यावापृथिवी जभ्र उर्वी नास्य ते महिमानं परि ष्टः ॥२०,३५.८॥

'अहि' (गतिहीनों) का हनन करने पर देव-पत्नियों ने इन्द्रदेव की स्तुतियाँ की । इन्द्रदेव ने फिर पृथ्वी लोक और द्युलोक को वश में किया । दोनों लोकों में उनकी सामर्थ्य के सामने कोई ठहर नहीं सकता ॥२०,३५.८॥

अस्येदेव प्र रिरिचे महित्वं दिवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात्।
स्वरालिन्द्रो दम आ विश्वगूर्तः स्वरिरमत्रो ववक्षे रणाय ॥२०,३५.९॥

इन्द्रदेव की महत्ता आकाश, पृथ्वी और अन्तरिक्ष से भी विस्तृत हैं । स्वयं प्रकाशित, सर्वप्रिय, उत्तम योद्धा, असीमित बल वाले इन्द्रदेव युद्ध के लिए अपने वीरों को प्रेरित करते हैं ॥२०,३५.९॥

अस्येदेव शवसा शुशन्तं वि वृश्चद्वज्रेण वृत्रमिन्द्रः ।
गा न व्राणा अवनीरमुञ्चदभि श्रवो दावने सचेताः ॥२०,३५.१०॥

इन्द्रदेव ने अपने बल से शोषक वृत्र को वज्र से काट दिया और अपहृत गौओं के समान रोके हुए जल को मुक्त किया। हविदाताओं को अन्न से पूर्ण किया ॥२०,३५.१०॥

अस्येदु त्वेषसा रन्त सिन्धवः परि यद्वज्रेण सीमयछत्।
ईशानकृद्दाशुषे दशस्यन् तुर्वीतये गाधं तुर्वणिः कः ॥२०,३५.११॥

इन्द्रदेव के बल से ही नदियाँ प्रवाहित हुईं; क्योंकि इन्होंने ही वज्र से इन्हें नियन्त्रित कर दिया है। शत्रुओं को मारकर सभी पर शासन करने वाले इन्द्रदेव हविदाता को धन देते हुए 'तुर्वणि' (शत्रुओं) से मोर्चा लेने वाले की सहायता करते हैं ॥२०,३५.११॥

अस्मा इदु प्र भरा तूतुजानो वृत्राय वज्रमीशानः कियेधाः ।
गोर्न पर्व वि रदा तिरश्चेष्यन्न् अर्णांस्यपां चरध्यै ॥२०,३५.१२॥

अति वेगवान्, सबके स्वामी महाबली हे इन्द्रदेव !आप इस वृत्र पर वज्र का प्रहार करें और इसके जोड़ों को (वज्र के) तिरछे प्रहार से भूमि के समान (समतल) काट दें। इस प्रकार जल को मुक्त करके प्रवाहित करें ॥२०,३५.१२॥

अस्येदु प्र ब्रूहि पूर्व्याणि तुरस्य कर्माणि नव्य उक्थैः ।

युधे यदिष्णान आयुधान्यृघायमाणो निरिणाति शत्रून् ॥२०,३५.१३॥

हे मनुष्य ! इन स्फूर्तिवान् इन्द्रदेव के पुरातन कर्मों की प्रशंसा करें । वे स्तुति योग्य हैं । युद्ध में वे शीघ्रता से शस्त्रों का प्रहार करके समाज को हानि पहुँचाने वाले शत्रुओं को विनष्ट करते हैं ॥२०,३५.१३॥

अस्येदु भिया गिरयश्च दृल्हा द्यावा च भूमा जनुषस्तुजेते ।
उपो वेनस्य जोगुवान ओणिं सद्यो भुवद्वीर्याय नोधाः ॥२०,३५.१४॥

इन इन्द्रदेव के भय से दृढ़ पर्वत, आकाश, पृथ्वी और सभी प्राणी भी काँपते हैं। नोधा ऋषि इन्द्रदेव के श्रेष्ठ रक्षण सामर्थ्यों का वर्णन करते हुए उनके अनुग्रह से बलशाली हुए थे ॥२०,३५.१४॥

अस्मा इदु त्यदनु दाय्येषामेको यद्वव्ने भूरेरीशानः ।
प्रैतशं सूर्ये पस्पृधानं सौवश्व्ये सुष्विमावदिन्द्रः ॥२०,३५.१५॥

अपार धन के एक मात्र स्वामी इन्द्रदेव जो इच्छा करते हैं, वहीं स्तोताओं के द्वारा अर्पित किया जाता है। इन्द्रदेव ने

स्वश्व के पुत्र 'सूर्य के साथ स्पर्धा करने वाले, सोमयाग करने वाले, 'एतश' ऋषि को सुरक्षा प्रदान कीं ॥२०,३५.१५॥

एवा ते हारियोजना सुवृक्तीन्द्र ब्रह्माणि गोतमासो अक्रन् । ऐषु विश्वपेशसं धियं धाः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्॥२०,३५.१६॥

हरे रंग के अश्वों से योजित रथ वाले हे इन्द्रदेव ! गोतम वंशजों ने आपके निमित्त आकर्षक मन्त्रयुक्त स्तोत्रों का गान किया है । इन स्तोत्रों का आप ध्यानपूर्वक श्रवण करें । विचारपूर्वक अपार धन-वैभव प्रदान करने वाले इन्द्रदेव हमें प्रातः (यज्ञ में) शीघ्र प्राप्त हों ॥२०,३५.१६॥

सूक्त- ३६

इंद्र की स्तुति तथा धन की याँचना

य एक इद्धव्यश्चर्षणीनामिन्द्रं तं गीर्भिरभ्यर्च आभिः ।
यः पत्यते वृषभो वृष्ण्यावान्त्सत्यः सत्वा पुरुमायः सहस्वान्
॥२०,३६.१॥

एक इन्द्रदेव संकट काल में मनुष्यों द्वारा आवाहन करने योग्य हैं । वे स्तुतियाँ करने पर आते हैं । इच्छापूर्ति करने वाले पराक्रमी, ज्ञानी, सत्यवादी एवं शत्रुओं को पीड़ा देने वाले इन्द्रदेव की हम स्तुति करते हैं ॥२०,३६.१॥

तमु नः पूर्वे पितरो नवग्वाः सप्त विप्रासो अभि वाजयन्तः ।
नक्षद्दाभं ततुरिं पर्वतेष्ठामद्रोघवाचं मतिभिः शविष्ठम्
॥२०,३६.२॥

अङ्गिरा आदि प्राचीन ऋषियों ने इन्द्रदेव को पराक्रमी और प्रवर्द्धमान बनाने के लिए नौ मासिक यज्ञानुष्ठान सम्पन्न

किये तथा उनकी स्तुति की । वे इन्द्रदेव सभी के शासक, तीव्रगामी एवं शत्रुओं के संहारक हैं ॥२०,३६.२॥

तमीमहे इन्द्रमस्य रायः पुरुवीरस्य नृवतः पुरुक्षोः ।
यो अष्कृधोयुरजरः स्वर्वान् तमा भर हरिवो मादयध्यै ॥२०,३६.३॥

हे अश्वपति इन्द्रदेव ! हम पुत्र-पौत्रादि स्वजनों, सेवकों, पशुओं से युक्त प्रसन्नतादायक धन की आप से याचना करते हैं। आप क्षीण न होने वाला, स्थायी, सुखदायक धन प्रचुर मात्रा में हमें उल्लसित करने के लिए प्रदान करें॥२०,३६.३॥

तन् नो वि वोचो यदि ते पुरा चिज्जरितार आनशुः सुम्नमिन्द्र ।
कस्ते भागः किं वयो दुध्र खिदुः पुरुहूत पुरूवसोऽसुरघ्नः ॥२०,३६.४॥

हे शत्रुजयी, पराक्रमी, अनेकों द्वारा आहूत ऐश्वर्यवान् इन्द्रदेव ! आप दुष्ट असुरों का नाश करने की सामर्थ्य वाले हैं। आपको यज्ञ में कौन सा भाग मिला है ? हे इन्द्रदेव ! आप हमें वही सुख प्रदान करें, जो आपने पहलेभी स्तोताओं को दिया है ॥२०,३६.४॥

तं पृछन्ती वज्रहस्तं रथेष्ठामिन्द्रं वेपी वक्करी यस्य नू गीः ।
तुविग्राभं तुविकूर्मिं रभोदां गातुमिषे नक्षते तुम्रमछ ॥२०,३६.५॥

वज्रधारी, रथारूढ़, बहुकर्मा, अनेक शत्रुओं को एक साथ पकड़ने वाले इन्द्रदेव की गुण-गाथा का गान करते हुए, जो यजमान यज्ञकर्म और स्तुति करता है, वह शत्रुओं को हराने वाला एवं सुख प्राप्त करने वाला होता है ॥२०,३६.५॥

अया ह त्यं मायया वावृधानं मनोजुवा स्वतवः पर्वतेन ।
अच्युता चिद्वीलिता स्वोजो रुजो वि दृल्हा धृषता विरप्शिन् ॥२०,३६.६॥

हे इन्द्रदेव ! आप स्वयं के बल से युक्त हैं। आपने अपने मनोवेगी वज्र से उस बढ़ते हुए मायावी वृत्रासुर का संहार किया है । हे तेजस्वी इन्द्रदेव ! आपने अचल, सुदृढ़ एवं शक्तिशाली पुरियों को नष्ट किया है ॥२०,३६.६॥

तं वो धिया नव्यस्या शविष्ठं प्रत्नं प्रत्नवत्परितंसयध्यै ।
स नो वक्षदनिमानः सुवह्नेन्द्रो विश्वान्यति दुर्गहाणि ॥२०,३६.७॥

प्राचीन ऋषियों की तरह हम भी पुरातन पराक्रमी इन्द्रदेव को नवीन स्तोत्रों से प्रवर्धमान करते हैं । वे अनन्त महिमावान्, सुन्दर वाहन वाले इन्द्रदेव हमें विश्व के सभी संकटों से पार लगाएँ ॥२०,३६.७॥

आ जनाय द्रुह्वणे पार्थिवानि दिव्यानि दीपयोऽन्तरिक्षा ।
तपा वृषन् विश्वतः शोचिषा तान् ब्रह्मद्विषे शोचय क्षामपश्च ॥२०,३६.८॥

हे इन्द्रदेव ! आप अभीष्ट की वर्षा करने वाले हैं । द्युलोक, पृथ्वी एवं अन्तरिक्ष में सर्वत्र व्याप्त होकर अपने तीव तेज से तप्त करके ब्रह्म विद्वेषियों (दुष्टों) को भस्म करें ॥२०,३६.८॥

भुवो जनस्य दिव्यस्य राजा पार्थिवस्य जगतस्त्वेषसंदृक्।
धिष्व वज्रं दक्षिण इन्द्र हस्ते विश्वा अजुर्य दयसे वि मायाः ॥२०,३६.९॥

हे तेजस्वी, अजर इन्द्रदेव ! आप देवलोकवासी एवं पृथ्वीवासी सभी लोगों के राजा हैं। आप दाहिने हाथ में वज्र को धारण करके विश्व के मायावियों का नाश करें ॥२०,३६.९॥

आ संयतमिन्द्र णः स्वस्तिं शत्रुतूर्याय बृहतीममृध्राम् ।
यया दासान्यार्याणि वृत्रा करो वज्रिन्त्सुतुका नाहुषाणि ॥२०,३६.१०॥

हे वज्रधारी इन्द्रदेव ! आप शत्रुओं का संहार करने के लिए अक्षुण्ण, संयमित एवं कल्याणकारी धन प्रचुर मात्रा में हमें प्रदान करें। जिससे दासों (इन्द्रियों के दास, कुमार्गगामियों) को आर्य (श्रेष्ठ मार्गगामी) बनाया जा सके और मनुष्य के शत्रुओं का नाश हो सके ॥२०,३६.१०॥

स नो नियुद्भिः पुरुहूत वेधो विश्ववाराभिरा गहि प्रयज्यो ।
न या अदेवो वरते न देव आभिर्याहि तूयमा मद्र्यद्रिक्॥२०,३६.११॥

हे इन्द्र ! आप पूज्य एवं अनेकों द्वारा आहूत हैं। आप सभी लोगों द्वारा प्रशंसित घोड़ों से हमारे पास आएँ ।जिन अश्वों की गति को देवता एवं असुर भी नहीं रोक सकते हैं, उन अश्वों के साथ आप हमारे पास आएँ ॥२०,३६.११॥

सूक्त -३७

इंद्र की स्तुति का वर्णन तथा इंद्र का वज्र

यस्तिग्मशृङ्गो वृषभो न भीमः एकः कृष्टीश्च्यवयति प्र विश्वाः ।
यः शश्वतो अदाशुषो गयस्य प्रयन्तासि सुष्वितराय वेदः ॥२०,३७.१॥

जो इन्द्रदेव तीक्ष्ण सींग वाले वृषभ के समान भयंकर हैं, वे अकेले ही शत्रुओं को अपने स्थान से पदच्युत कर देते हैं। यजन न करने वालों के निवास छीन लेने वाले हे इन्द्रदेव ! आप हम योजकों को ऐश्वर्य प्रदान करें ॥२०,३७.१॥

त्वं ह त्यदिन्द्र कुत्समावः शुश्रूषमाणस्तन्वा समर्ये ।
दासं यच्छुष्णं कुयवं न्यस्मा अरन्धय आर्जुनेयाय शिक्षन् ॥२०,३७.२॥

हे इन्द्रदेव ! जब संग्राम काल में आपने कुत्स' की सुरक्षा, स्वयं शुश्रूषा करके की थीं, तब अर्जुनी के पुत्र कुत्स को धन दिया था एवं दास 'शुष्ण' और 'कुयव' का संहार किया था ॥२०,३७.२॥

त्वं धृष्णो धृषता वीतहव्यं प्रावो विश्वाभिरूतिभिः सुदासम् ।
प्र पौरुकुत्सिं त्रसदस्युमावः क्षेत्रसाता वृत्रहत्येषु पूरुम् ॥२०,३७.३॥

हे अदम्य इन्द्रदेव ! आप हवि पदार्थ अर्पित करने वाले राजा सुदास की सुरक्षा, अपनी रक्षण शक्ति सहित वज्र द्वारा करते हैं। आपने शत्रु का संहार करने के समय एवं भूमि के बँटवारे के समय, पुरुकुत्स के पुत्र त्रसदस्यु एवं पूरु का संरक्षण किया था ॥२०,३७.३॥

त्वं नृभिर्नृमणो देववीतौ भूरीणि वृत्रा हर्यश्व हंसि ।
त्वं नि दस्युं चुमुरिं धुनिं चास्वापयो दभीतये सुहन्तु ॥२०,३७.४॥

मनुष्यों के हितैषी हे इन्द्र ! आपने युद्ध भूमि में मरुद्गणों की सहायता से उनके शत्रुओं का विनाश किया था । हे हरित वर्ण के अश्व वाले इन्द्रदेव ! आपने ही दभीति की सुरक्षा के लिए दस्युचुमुरि एवं धुनि को मारा ॥२०,३७.४॥

तव च्यौत्नानि वज्रहस्त तानि नव यत्पुरो नवतिं च सद्यः ।
निवेशने शततमाविवेषीरहं च वृत्रं नमुचिमुताहन्
॥२०,३७.५॥

हे वज्रधारी इन्द्रदेव ! आपने अपने प्रसिद्ध बल के द्वारा शत्रुओं के निन्यानबे नगरों को बहुत कम समय में ही ध्वस्त कर दिया। अपने निवास के लिए सौवें नगर में प्रवेश कर आपने वृत्रासुर एवं नमुचि को मारा ॥२०,३७.५॥

सना ता त इन्द्र भोजनानि रातहव्याय दाशुषे सुदासे ।
वृष्णे ते हरी वृषणा युनज्मि व्यन्तु ब्रह्माणि पुरुशाक वाजम्
॥२०,३७.६॥

हे इन्द्रदेव ! आपने हविदाता राजा सुदास के लिए सदा रहने वाली धन-सम्पदा प्रदान की। हे बहुकर्मा इन्द्रदेव ! आप कामनाओं की पूर्ति करने वाले हैं । हम आपके लिए दो बलशाली अश्वों को रथ में नियोजित करते हैं। आप बलवान् (इन्द्र) के पास हमारे स्तोत्र पहुँचें ॥२०,३७.६॥

मा ते अस्यां सहसावन् परिष्टावघाय भूम हरिवः परादौ ।
त्रायस्व नोऽवृकेभिर्वरूथैस्तव प्रियासः सूरिषु स्याम
॥२०,३७.७॥

हे इन्द्रदेव ! आप बलवान् हैं और अश्वों के स्वामी हैं। आपके इस यज्ञ में हम दूसरों से सहायता प्राप्त करने का पाप न करें। आप अपने रक्षण साधनों से हमारी रक्षा करें । हम आपकी स्तुति करने वाले आपके विशेष प्रिय पात्र बनें ॥२०,३७.७॥

प्रियास इत्ते मघवन्न् अभिष्टौ नरो मदेम शरणे सखायः ।
नि तुर्वशं नि याद्वं शिशीह्यतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन् ॥२०,३७.८॥

हे धनपति इन्द्रदेव ! आपकी स्तुति करने वाले हम परस्पर प्रेमपूर्वक मित्रभाव से घर में प्रसन्न होकर रहें । आप अतिथि-सत्कार में निपुण सुदास को सुख प्रदान करते हुए, तुर्वश एवं यदुवंशी को परास्त करें ॥२०,३७.८॥

सद्यश्चिन् नु ते मघवन्न् अभिष्टौ नरः शंसन्त्युक्थशास उक्था ।
ये ते हवेभिर्वि पणींरदाशन्न् अस्मान् वृणीष्व युज्याय तस्मै ॥२०,३७.९॥

हे धनवान् इन्द्रदेव ! आपके यज्ञ में हम स्तोता ही उक्थ (स्तोत्रों) का उच्चारण करते हैं। आपको हवि अर्पित करके, उक्थों के उच्चारण द्वारा पणियों (लोभियों) को भी धन दान

करने की प्रेरणा दी। हम सबको आप मित्रवत् स्वीकार करें ॥२०,३७.९॥

एते स्तोमा नरां नृतम तुभ्यमस्मद्र्यञ्चो ददतो मघानि ।
तेषामिन्द्र वृत्रहत्ये शिवो भूः सखा च शूरोऽविता च नृणाम्
॥२०,३७.१०॥

हे नेतृत्व करने वालों में श्रेष्ठ इन्द्रदेव! स्तोत्रों और हवि द्वारा आपका यजन करने वालों ने आपको हम सबका हितैषी बना दिया है। आप युद्ध के समय इन्हीं स्तोताओं की रक्षा करें ॥२०,३७.१०॥

नू इन्द्र शूर स्तवमान ऊती ब्रह्मजूतस्तन्वा वावृधस्व ।
उप नो वाजान् मिमीह्युप स्तीन् युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥२०,३७.११॥

हे शूरवीर इन्द्रदेव! स्तुत्य होकर और ज्ञान से प्रेरित होकर आपके शरीर और रक्षण शक्तियों में वृद्धि हो। हम सबको आप अपनी कल्याणकारी शक्तियों द्वारा सुरक्षित कर, अन्न एवं आवास (घर) प्रदान करें ॥२०,३७.११॥

सूक्त-३८

इंद्र से सोम रस पीने का आग्रह तथा इंद्र का पूजन

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम् ।
एदं बर्हिः सदो मम ॥२०,३८.१॥

हे इन्द्रदेव ! आप हमारे इस यज्ञ में पधारें। तैयार किया गया सोमरस आपके लिए समर्पित है, उसका पान करके आप श्रेष्ठ आसन पर विराजमान हों ॥२०,३८.१॥

आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना ।
उप ब्रह्माणि नः शृणु ॥२०,३८.२॥

हे इन्द्रदेव ! मंत्र सुनते ही (संकेत मात्र से) रथ में जुड़ जाने वाले श्रेष्ठ अश्वों के माध्यम से, आप निकट आकर हमारी प्रार्थनाओं को सुनें ॥२०,३८.२॥

ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः ।
सुतावन्तो हवामहे ॥२०,३८.३॥

हे सोमपायी इन्द्रदेव ! हम ब्रह्मनिष्ठ सोमयज्ञकर्ता साधक, सोमपान के लिए आपका आवाहन करते हैं ॥२०,३८.३॥

इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः ।
इन्द्रं वाणीरनूषत ॥२०,३८.४॥

सामगान के साधक गाये जाने योग्य बृहत् साम की स्तुतियों से देवराज इन्द्र को प्रसन्न करते हैं। इसी तरह याज्ञिक भी मन्त्रोच्चारण के द्वारा इन्द्र की ही स्तुति करते हैं ॥२०,३८.४॥

इन्द्र इद्धर्योः सचा संमिश्ल आ वचोयुजा ।
इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥२०,३८.५॥

वज्रधारी, स्वर्ण से आभूषित इन्द्रदेव, वचन के संकेत मात्र से जुड़ जाने वाले अश्वों के साथ हैं ॥२०,३८.५॥

इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद्दिवि ।
वि गोभिरद्रिमैरयत्॥२०,३८.६॥

(देवशक्तियों के संगठक) इन्द्रदेव ने विश्व को प्रकाशित करने के महान् उद्देश्य से सूर्यदेव को उच्चाकाश में

स्थापित किया और सूर्यात्मक इन्द्र ने ही अपनी किरणों से मेघ-पर्वत आदि को दूर हटाया ॥२०,३८.६॥

सूक्त-३९

इंद्र का आह्वान

इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः ।
अस्माकमस्तु केवलः ॥२०,३९.१॥

हे ऋत्विजो ! सभी लोगों में उत्तम इन्द्र को, आप सब के कल्याण के लिए हम आमन्त्रित करते हैं, वे हमारे ऊपर विशेष कृपा करें ॥ २०,३९.१॥

व्यन्तरिक्षमतिरन् मदे सोमस्य रोचना ।
इन्द्रो यदभिनद्वलम् ॥२०,३९.२॥

सोमपान से उत्पन्न उमंग में जब इन्द्रदेव ने बलवान् मेघों को विदीर्ण किया, तो (प्रकारान्तर से उन्होंने प्रकाशवान् आकाश का भी विस्तार किया ॥ २०,३९.२॥

उद्गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन् गुहा सतीः ।
अर्वाञ्चं नुनुदे वलम् ॥२०,३९.३॥

सूर्यरूप हे इन्द्रदेव ! आपने गुफा में स्थित (अप्रकट) किरणों (गौओं) को प्रकट कर उन्हें देहधारियों (अङ्गिराओं) तक पहुँचाया। उन्हें रोके रखने वाला असुर (बल) नीचा मुँह करके पलायन कर गया ॥ २०,३९.३॥

इन्द्रेण रोचना दिवो दृल्हानि दृंहितानि च ।
स्थिराणि न पराणुदे ॥२०,३९.४॥

अन्तरिक्ष में स्थित सभी प्रकाशवान् नक्षत्रों को इन्द्रदेव ने सुदृढ़ तथा समृद्ध किया । उन नक्षत्रों को कोई भी उनके स्थान से च्युत नहीं कर सकता ॥ २०,३९.४॥

अपामूर्मिर्मदन्न् इव स्तोम इन्द्राजिरायते ।
वि ते मदा अराजिषुः ॥२०,३९.५॥

हे इन्द्रदेव ! जिस प्रकार समुद्र की लहरें उछलती चलती हैं, उसी प्रकार आपके लिए की गयी प्रार्थनाएँ शीघ्रता से पहुँचकर आपके उत्साह को बढ़ाती हैं ॥ २०,३९.५॥

सूक्त-४०

इंद्र की महिमा का गुणगान

इन्द्रेण सं हि दृक्षसे संजग्मानो अबिभ्युषा ।
मन्दू समानवर्चसा ॥२०,४०.१॥

सदा प्रसन्न रहने वाले, समान तेजवाले मरुद्गण, निर्भय रहने वाले इन्द्र के साथ (संगठित हुए) सुशोभित हैं॥ २०,४०.१॥

अनवद्यैरभिद्युभिर्मखः सहस्वदर्चति ।
गणैरिन्द्रस्य काम्यैः ॥२०,४०.२॥

अत्यन्त तेजस्वी और पापरहित इन्द्र की कामना करने वालों (मरुद्गणों) से यह यज्ञ सुशोभित होता हैं॥ २०,४०.२॥

आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे ।
दधाना नाम यज्ञियम् ॥२०,४०.३॥

यज्ञीय नामवाले, धारण करने में समर्थ मरुत् वास्तव में अन्न की (वृद्धि की कामना से बार-बार (मेघ आदि) गर्भ को प्राप्त होते हैं ॥ २०,४०.३॥

सूक्त-४१

बलशाली इंद्र का वर्णन

इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः ।
जघान नवतीर्नव ॥२०,४१.१॥

अपराजित इन्द्रदेव ने दधीचि की हड्डियों से बने हुए वज्र से) निन्यानबे वृत्रों(राक्षसों) का संहार किया ॥ २०,४१.१॥

इछन् अश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम् ।
तद्विदच्छर्यणावति ॥२०,४१.२॥

जब इन्द्रदेव ने इच्छा मात्र से यह जान लिया कि (उस) अश्व का सिर पर्वतों के पीछे शर्यणावत् सरोवर में है, तब (पूर्व मंत्रानुसार) उसका वज्र बनाकर असुरों का वध कर दिया ॥ २०,४१.२॥

अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम् ।
इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥२०,४१.३॥

इस प्रकार मनीषियों ने त्वष्टा (संसार को तुष्ट करने वाले सूर्यदेव का दिव्यतेज, गतिमान् चन्द्रमण्डल में विद्यमान अनुभव किया ॥ २०,४१.३॥

सूक्त-४२

इंद्र की शक्ति

वाचमष्टापदीमहं नवस्रक्तिमृतस्पृशम् ।
इन्द्रात्परि तन्वं ममे ॥२०,४२.१॥

हे इन्द्रदेव ! आपकी सत्य को बढ़ाने वाली, नवीन कल्पनाओं वाली तथा आठ पदों वाली वाणी को हमने धारण किया है ॥ २०,४२.१॥

अनु त्वा रोदसी उभे क्रक्षमाणमकृपेताम् ।
इन्द्र यद्दस्युहाभवः ॥२०,४२.२॥

शत्रुओं से प्रतिस्पर्धा का भाव रखने वाले हे इन्द्रदेव ! आपके द्वारा शत्रुओं का नाश किये जाने पर द्युलोक एवं पृथ्वीलोक दोनों ही कम्पायमानकिया ॥ २०,४२.२॥

उत्तिष्ठन्न् ओजसा सह पीत्वी शिप्रे अवेपयः ।
सोममिन्द्र चमू सुतम् ॥२०,४२.३॥

हे इन्द्रदेव ! पात्र में रखे हुए सोमरस को ग्रहण करके सामर्थ्यशाली होकर आप उठे और अपनी दोनों हनुओं को कम्पायमान किया ॥ २०,४२.३॥

सूक्त-४३

इंद्र से शत्रु विनाश की कामना

भिन्धि विश्वा अप द्विषः बाधो जही मृधः ।
वसु स्पार्हं तदा भर ॥२०,४३.१॥

हे इन्द्र ! आप हमारे शत्रुओं का विनाश करके, उन्हें हमसे दूर हटाएँ तथा उनका ऐश्वर्य हमारे पास पहुँचाएँ ॥ २०,४३.१॥

यद्वीलाविन्द्र यत्स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम् ।
वसु स्पार्हं तदा भर ॥२०,४३.२॥

हे इन्द्रदेव ! आप हमें ऐसी सम्पत्ति प्रदान करें, जो पुष्ट और स्थिर भूमि में विद्यमान हो तथा जिसे किसी ने स्पर्श न किया हो ॥ २०,४३.२॥

यस्य ते विश्वमानुषो भूरेर्दत्तस्य वेदति ।
वसु स्पार्हं तदा भर ॥२०,४३.३॥

हे इन्द्र आपके द्वारा प्रदत्त जिस वैभव को सभी उचित ढंग से जानते हैं, वह हमें पर्याप्त मात्रा में प्रदान करें ॥ २०,४३.३॥

सूक्त- ४४

इंद्र की स्तुति

प्र सम्राजं चर्षणीनामिन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः ।
नरं नृषाहं मंहिष्ठम् ॥२०,४४.१॥

हे स्तोताओ ! आप, मनुष्यों में भली प्रकार प्रतिष्ठा प्राप्त, स्तुति किये जाने योग्य, शत्रुजयी नेतृत्व क्षमता सम्पन्न, महान् इन्द्रदेव की स्तुति करें ॥ २०,४४.१॥

यस्मिन्न् उक्थानि रण्यन्ति विश्वानि च श्रवस्य ।
अपामवो न समुद्रे ॥२०,४४.२॥

जिस प्रकार समस्त जल-प्रवाह समुद्र में मिलकर उसकी शोभा बढ़ाते हैं, उसी प्रकार समस्त स्तुतियों तथा कीर्तियों से इन्द्रदेव सुशोभित होते हैं ॥ २०,४४.२॥

तं सुष्टुत्या विवासे ज्येष्ठराजं भरे कृत्नुम् ।
महो वाजिनं सनिभ्यः ॥२०,४४.३॥

हम महान् धन की प्राप्ति के लिए रणक्षेत्र में प्रबल पुरुषार्थ करने वाले, शक्तिशाली, महान् राजा इन्द्रदेव की श्रेष्ठ स्तुतियों द्वारा अभ्यर्थना करते हैं ॥ २०,४४.३॥

सूक्त-४५

इंद्र को पास बुलाने का आग्रह

अयमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम् ।
वचस्तच्चिन् न ओहसे ॥२०,४५.१॥

हे इन्द्रदेव ! जिस स्नेह से कपोत गर्भ धारण की इच्छावाली कपोती के पास गमन करता है, उसी प्रकार स्नेहपूर्वक यह सोमरस आपके लिए प्रस्तुत है। आप इसे स्वीकार करें ॥ २०,४५.१॥

स्तोत्रं राधानां पते गिर्वाहो वीर यस्य ते ।
विभूतिरस्तु सूनृता ॥२०,४५.२॥

हे धनाधिपति, स्तुत्य और वीर इन्द्रदेव ! वैभव सम्पन्न आपके विषय में ये स्तोत्र सत्यसिद्ध हों ॥ २०,४५.२॥

ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतयेऽस्मिन् वाजे शतक्रतो ।
समन्येषु ब्रवावहै ॥२०,४५.३॥

हे सैकड़ों (यज्ञादि) श्रेष्ठ कार्यों को सम्पन्न करने वाले इन्द्रदेव ! युद्ध (जीवन संग्राम) में हमारे संरक्षण के लिए आप सन्नद्ध रहें। अन्य देवों के उपस्थित रहने पर भी हम आपकी ही स्तुति करेंगे ॥ २०,४५.३॥

सूक्त- ४६

इंद्र की महिमा

प्रणेतारं वस्यो अछा कर्तारं ज्योतिः समत्सु ।
सासह्वांसं युधामित्रान् ॥२०,४६.१॥

वे इन्द्रदेव धनवानों से ऐश्वर्य का दान कराने वाले, संग्राम में शौर्य दिखाने वाले तथा अपने अस्त्र-शस्त्रों द्वारा रिपुओं को परास्त करने वाले हैं ॥ २०,४६.१॥

स नः पप्रिः पारयाति स्वस्ति नावा पुरुहूतः ।
इन्द्रो विश्वा अति द्विषः ॥२०,४६.२॥

प्रतिपालक इन्द्रदेव अनेकों द्वारा आवाहित किये जाते हैं । वे रक्षण-साधनों रूपी अपनी नाव के द्वारा समस्त रिपुओं से हमें पार लगा दें (हमारी रक्षा करें) ॥ २०,४६.२॥

स त्वं न इन्द्र वाजोभिर्दशस्या च गातुया च ।
अछा च नः सुम्नं नेषि ॥२०,४६.३॥

हे इन्द्र !आप हमें शक्ति और धन-धान्य पूर्ण ऐश्वर्य प्रदान करें ।श्रेष्ठ मार्ग प्रदर्शित करते हुए हमें सुखी बनाएँ॥ २०,४६.३॥

सूक्त- ४७

इंद्र का वर्णन व स्तुति

तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे ।
स वृषा वृषभो भुवत्॥२०,४७.१॥

वृत्र के संहार के लिए हम इन्द्रदेव को स्तुतियों द्वारा प्रवृद्ध करते हैं। वे अभीष्टवर्धक इन्द्रदेव शक्ति-सम्पन्न एवं पराक्रमी वीर हों ॥ २०,४७.१॥

इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स मदे हितः ।
द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः ॥२०,४७.२॥

वे इन्द्रदेव दान देने के लिए प्रख्यात हैं। वे बलवान् बनने के लिए सोमपान करते हैं। प्रशंसनीय कार्य करने वाले वे देव सोम पिलाये जाने योग्य हैं ॥ २०,४७.२॥

गिरा वज्रो न संभृतः सबलो अनपच्युतः ।
ववक्ष ऋष्वो अस्तृतः ॥२०,४७.३॥

वज्रपाणि, स्तुतियों से प्रशंसित, तेजस्वी, वीर और अपराजेय इन्द्रदेव साधकों को ऐश्वर्य प्रदान करते हैं ॥ २०,४७.३॥

इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः ।
इन्द्रं वाणीरनूषत ॥२०,४७.४॥

सामगान के साधक गाये जाने योग्य बृहत् साम की स्तुतियों (गाथा) से देवराज इन्द्र को प्रसन्न करते हैं। इसी तरह याज्ञिक भी मंत्रोच्चारण के द्वारा इन्द्रदेव की ही स्तुति करते हैं ॥ २०,४७.४॥

इन्द्र इद्धर्योः सचा संमिश्ल आ वचोयुजा ।
इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥२०,४७.५॥

वज्रधारी, स्वर्ण वस्त्र मण्डित इन्द्रदेव, वचन के संकेत मात्र से जुड़ जाने वाले अश्वों के साथी हैं ॥ २०,४७.५॥

इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद्दिवि ।
वि गोभिरद्रिमैरयत्॥२०,४७.६॥

(देव शक्तियों के संगठक) इन्द्रदेव ने विश्व को प्रकाशित करने के महान् उद्देश्य से सूर्यदेव के उच्चाकाश में स्थापित

किया और सूर्यात्मक इन्द्र ने ही अपनी किरणों से मेघ, पर्वत आदि को दूर हटाया ॥ २०,४७.६॥

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम् ।
एदं बर्हिः सदो मम ॥२०,४७.७॥

हे इन्द्रदेव ! आप हमारे इस यज्ञ में पधारें। तैयार किया गया सोमरस आपके लिए समर्पित है, उसका पनि करके आप श्रेष्ठ आसन पर विराजमान हों ॥ २०,४७.७॥

आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना ।
उप ब्रह्माणि नः शृणु ॥२०,४७.८॥

हे इन्द्रदेव ! मन्त्र सुनते ही (संकेत मात्र से) रथ में जुड़ जाने वाले श्रेष्ठ अश्वों के माध्यम से, आप निकट आकर हमारी प्रार्थनाओं को सुनें ॥ २०,४७.८॥

ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः ।
सुतावन्तो हवामहे ॥२०,४७.९॥

हे सोमपायी इन्द्रदेव ! हम ब्रह्मनिष्ठ सोम यज्ञकर्ता साधक, सोमपान के लिए आपका आवाहन करते हैं ॥ २०,४७.९॥

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः ।
रोचन्ते रोचना दिवि ॥२०,४७.१०॥

बन(बाँधकर रखने वाले) तेजस्वी (इन्द्र) स्थित रहते हुए भी चारों ओर घूमने वालों को जोड़कर रखते हैं। वे (इसी प्रकार) प्रकाशमान द्युलोक को प्रकाशित करते हैं ॥ २०,४७.१०॥

युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे ।
शोणा धृष्णू नृवाहसा ॥२०,४७.११॥

इन (इन्द्र) के रथ के दोनों पक्षों में कामना योग्य नेता (इन्द्र) का वहन करने वाले विचार एवं संघर्ष क्षमता युक्त दो हरि (गतिशील अश्व) जुड़े रहते हैं ॥ २०,४७.११॥

केतुं कृण्वन्न् अकेतवे पेशो मर्या अपेशसे ।
समुषद्भिरजायथाः ॥२०,४७.१२॥

हे मनुष्यो ! तुम रात्रि में निद्राभिभूत होकर, संज्ञा शून्य निश्चेष्ट होकर, प्रातः पुनः सचेत एवं सचेष्ट होकर मानो प्रतिदिन नवजीवन प्राप्त करते हो (प्रतिदिन जन्म लेते हो) ॥ २०,४७.१२॥

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः ।
दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥२०,४७.१३॥

ये ज्योतिर्मयी रश्मियाँ सम्पूर्ण प्राणियों के ज्ञाता सूर्यदेव की एवं समस्त विश्व को दृष्टि प्रदान करने के लिए विशेष रूप से प्रकाशित होती हैं ॥ २०,४७.१३॥

अप त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः ।
सूराय विश्वचक्षसे ॥२०,४७.१४॥

सबको प्रकाश देने वाले सूर्यदेव के उदित होते ही रात्रि के तारा मण्डल वैसे ही छिप जाते हैं, जैसे (दिन होने पर) चोर छिप जाते हैं ॥ २०,४७.१४॥

अदृश्रन्न् अस्य केतवो वि रश्मयो जनामनु ।
भ्राजन्तो अग्नयो यथा ॥२०,४७.१५॥

प्रज्वलित हुई अग्नि की किरणों के समान सूर्यदेव की रश्मियाँ सम्पूर्ण जीव-जगत् को प्रकाशित करती हैं॥ २०,४७.१५॥

तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य ।
विश्वमा भासि रोचन ॥२०,४७.१६॥

हे सूर्यदेव ! आप साधकों का उद्धार करने वाले हैं, समस्त संसार में एकमात्र दर्शनीय प्रकाशक हैं तथा आप ही विस्तृत अन्तरिक्ष को सभी ओर से प्रकाशित करते हैं ॥ २०,४७.१६॥

प्रत्यङ्देवानां विशः प्रत्यङ्ङुदेषि मानुषीः ।
प्रत्यङ्विश्वं स्वर्दृशे ॥२०,४७.१७॥

हे सूर्यदेव ! देवों और मनुष्यों के निमित्त आप नियमित रूप से उदित होते हैं। आप सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित करते हैं ॥ २०,४७.१७॥

येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनामनु ।
त्वं वरुण पश्यसि ॥२०,४७.१८॥

है पवित्रकारक देव ! जिस दृष्टि अर्थात् प्रकाश से आप प्राणियों के भरण- पोषण करने वाले मनुष्यों को देखते हैं (प्रकाशित करते हैं, उसी से हमें भी देखें अर्थात् हमें भी प्रकाशित करें ॥ २०,४७.१८॥

वि द्यामेषि रजस्पृथ्वहर्मिमानो अक्तुभिः ।
पश्यं जन्मानि सूर्य ॥२०,४७.१९॥

हे सूर्यदेव ! आप दिन एवं रात में समय को विभाजित करते हुए अन्तरिक्ष एवं द्युलोक में भ्रमण करते हैं। और सभी प्राणियों को देखते हैं ॥ २०,४७.१९॥

सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य ।
शोचिष्केशं विचक्षणम् ॥२०,४७.२०॥

हे सर्वद्रष्टा सूर्यदेव ! आप तेजस्वी ज्वालाओं से युक्त सप्तवर्णी किरणरूपी अश्वों के रथ में दिव्यतापूर्वक सुशोभित होते हैं ॥ २०,४७.२०॥

अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्यः ।
ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः ॥२०,४७.२१॥

पवित्रता प्रदान करने वाले ज्ञान-सम्पन्न ऊर्ध्वगामी सूर्यदेव अपने सप्तवर्णी अश्वों से (किरणों से सुशोभित रथ में अपनी युक्तियों से गमन करते हैं ॥ २०,४७.२१॥

सूक्त- ४८

इंद्र की स्तुति तथा सूर्य की किरणों के तीस मुहूर्त दीप्त

अभि त्वा वर्चसा गिरः सिञ्चन्त्या चरण्युवः ।
अभि वत्सं न धेनवः ॥२०,४८.१॥

जिस प्रकार विचरणशील गौएँ अपने बछड़े के समीप बार-बार जाती हैं, उसी प्रकार स्तुतिरूप वाणियाँ तेज द्वारा आपका सिञ्चन करती हुई आपके सामने प्रस्तुत होती हैं ॥२०,४८.१॥

ता अर्षन्ति शुभ्रियः पृञ्चतीर्वर्चसा पयः ।
जातं जनिर्यथा हृदा ॥२०,४८.२॥

जिस नवजात शिशु को माताएँ (संरक्षणभाव से) हृदय से लगाती हैं, उसी प्रकार श्रेष्ठ भावना से युक्त स्तुतियाँ तेज से संयुक्त होती हुई इन्द्रदेव को सुशोभित करती हैं ॥२०,४८.२॥

वज्रापवसाध्यः कीर्तिर्म्रियमाणमावहन् ।
मह्यमायुर्घृतं पयः ॥२०,४८.३॥

वज्र, असाध्य रोग या दुर्गुण आदि मरने वालों की ओर ले जाएँ, हमें आयुष्य, घृत (तेज) तथा पय (दुग्धादि पोषक रस) प्राप्त हों ॥ २०,४८.३॥

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः ।
पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥२०,४८.४॥

गतिमान् तेजस्वी सूर्यदेव प्रकट हो गये हैं। सबसे पहले वे माता पृथ्वी को और फिर पिता स्वर्ग और अन्तरिक्ष को प्राप्त होते हैं ॥ २०,४८.४॥

अन्तश्चरति रोचना अस्य प्राणादपानतः ।
व्यख्यन् महिषः स्वः ॥२०,४८.५॥

इन (सूर्यदेव का प्रकाश आकाश में संचरित होता है । ये (सूर्य रश्मियों) प्राण से अपान तक की प्रक्रिया सम्पन्न करती हैं। ये महान् सूर्यदेव द्युलोक को विशेष रूप से प्रकाशित करते हैं ॥ २०,४८.५॥

त्रिंशद्धामा वि राजति वाक्पतङ्गो अशिश्रियत्।

प्रति वस्तोरहर्द्युभिः ॥२०,४८.६॥

सर्वप्रेरक सूर्यदेव दिन की तीस घटियों तक अपनी रश्मियों से प्रकाशित होते हैं। उनकी स्तुति के लिए हम वाणी का आश्रय ग्रहण करते (उनकी स्तुतियों करते हैं ॥ २०,४८.६॥

सूक्त- ४९

इंद्र की स्तुति

यच्छक्रा वाचमारुहन्न् अन्तरिक्षं सिषासथः ।
सं देवा अमदन् वृषा ॥२०,४९.१॥

हे इन्द्रदेव ! जब अन्तरिक्ष के ऊपर विजय की अभिलाषा से स्तोतागण वाणी को प्रयोग करते हैं, तो देवशक्तियाँ हर्षित होती हैं ॥ २०,४९.१॥

शक्रो वाचमधृष्टायोरुवाचो अधृष्णुहि ।
मंहिष्ठ आ मदर्दिवि ॥२०,४९.२॥

हे शक्तिमान् इन्द्र ! आप शिष्ट मनुष्य पर कठोर वाणी का प्रयोग न करें। आप महिमामय दिव्यलोक में आनन्दमग्न हों ॥ २०,४९.२॥

शक्रो वाचमधृष्णुहि धामधर्मन् वि राजति ।
विमदन् बर्हिरासरन् ॥२०,४९.३॥

हे शक्र ! आप कठोरतापूर्वक वाणी का उच्चारण न करें। आप विशिष्ट आनन्द मग्न होकर कुशाओं पर आकर विराजमान होते हैं ॥ २०,४९.३॥

तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः ।
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ॥२०,४९.४॥

हे ऋत्विजो ! शत्रुओं से रक्षा करने वाले, तेजस्वी सोमरस से तृप्त होने वाले इन्द्रदेव की हम उसी प्रकार स्तुति करते हैं, जैसे गोशाला में अपने बछड़ों के पास जाने के लिए गौएँ उल्लसित रहती हैं ॥ २०,४९.४॥

द्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं गिरिं न पुरुभोजसम् ।
क्षुमन्तं वाजं शतिनं सहस्रिणं मक्षू गोमन्तमीमहे ॥२०,४९.५॥

देव लोकवासी, उत्तम दानदाता, सामर्थ्यवान् इन्द्रदेव से हम सब प्रकार के ऐश्वर्य, सैकड़ों गौएँ तथा पोषक अन्न की कामना करते हैं ॥ २०,४९.५॥

तत्त्वा यामि सुवीर्यं तद्ब्रह्म पूर्वचित्तये ।

येना यतिभ्यो भृगवे धने हिते येन प्रस्कण्वमाविथ ॥२०,४९.६॥

हे इन्द्रदेव ! आपने जिस शक्ति से यतियों तथा भृगु ऋषि को धन प्रदान किया था तथा जिस ज्ञान से ज्ञानियों (प्रस्कण्व की रक्षा की थी, उस ज्ञान तथा बल की प्राप्ति के लिए सबसे पहले हम आपसे प्रार्थना करते हैं ॥ २०,४९.६॥

येना समुद्रमसृजो महीरपस्तदिन्द्र वृष्णि ते शवः ।
सद्यः सो अस्य महिमा न संनशे यं क्षोणीरनुचक्रदे ॥ २०,४९.७॥

है इन्द्रदेव ! जिस शक्ति से आपने समुद्र तथा विशाल नदियों का निर्माण किया है, वह शक्ति हमारे अभीष्ट को पूर्ण करने वाली है ।आपकी जिस महिमा का अनुगमन द्‍यु तथा पृथ्वीलोक करते हैं, उसका कोई पारावार नहीं ॥ २०,४९.७॥

सूक्त- ५०

इंद्र की महिमा का गुणगान

कन् नव्यो अतसीनां तुरो गृणीत मर्त्यः ।
नही न्वस्य महिमानमिन्द्रियं स्वर्गृणन्त आनशुः ॥२०,५०.१॥

हे मनुष्यो ! चिर नवीन कोई भी आकार ग्रहण करने वाले बलवान् (इन्द्रदेव) की स्तुति करो । उनकी महिमा को पूरी तरह न गा सकने वाले स्तोता क्यो स्वर्ग प्राप्त नहीं करते?॥२०,५०.१॥

कदु स्तुवन्त ऋतयन्त देवत ऋषिः को विप्र ओहते ।
कदा हवं मघवन्न् इन्द्र सुन्वतः कदु स्तुवत आ गमः ॥२०,५०.२॥

हे इन्द्रदेव ! ऐसे कौन से देव हैं, जो आपके निमित्त यज्ञ करते हैं तथा कौन से ऋषि ज्ञानी हैं, जो आपको स्तुति करके कृपा प्राप्त करते हैं? हे धनवान् इन्द्रदेव ! आप

सोमरस अभिषुत करने वालों की स्तुति सुनकर उनके पास कब जाते हैं ? ॥ २०,५०.२॥

सूक्त- ५१

इंद्र के आयुधों का वर्णन

अभि प्र वः सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे ।
यो जरितृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति ॥२०,५१.१
१॥

हे त्वजो ! ऐश्वर्यवान् इन्द्रदेव स्तुति करने वालों को अनेक प्रकार के श्रेष्ठ धन से सम्पन्न बनाते हैं । अतः उत्तम धन की प्राप्ति के लिए जैसे भी संभव हो, उनकी (इन्द्रदेव की) अर्चना करो ॥२०,५१.१॥

शतानीकेव प्र जिगाति धृष्णुया हन्ति वृत्राणि दाशुषे ।
गिरेरिव प्र रसा अस्य पिन्विरे दत्राणि पुरुभोजसः ॥२०,५१.२॥

जिस प्रकार सेनापति; शत्रु पर चढ़ाई करते समय अपनी सेना का संरक्षण करता है, उसी प्रकार श्रेष्ठ कार्यों में अपने साधन लगाने वालों का इन्द्रदेव संरक्षण करते हैं । ऐसे

साधन, लोगों को तृप्तिदायक पर्वत के जल (झरने) के समान लाभदायक होते हैं ॥२०,५१.२॥

प्र सु श्रुतं सुराधसमर्चा शक्रमभिष्टये ।
यः सुन्वते स्तुवते काम्यं वसु सहस्रेणेव मंहते ॥२०,५१.३॥

हे स्तोताओ ! जो इन्द्रदेव सोम यज्ञ करने वालों तथा स्तोताओं को सहस्रों प्रकार के इच्छित ऐश्वर्य प्रदान करते हैं, उन बलशाली तथा ऐश्वर्यशाली, यशस्वी इन्द्रदेव की; वाञ्छित सम्पत्ति प्राप्ति के निमित्त प्रार्थना करें ॥२०,५१.३॥

शतानीका हेतयो अस्य दुष्टरा इन्द्रस्य समिषो महीः ।
गिरिर्न भुज्मा मघत्सु पिन्वते यदीं सुता अमन्दिषुः ॥२०,५१.४॥

जब सुसंस्कृत सोमरस उन इन्द्रदेव को आनन्दित करता है, तब वे सम्पत्तिवानों को पर्वत के सदृश विशाल पदार्थों का भण्डार प्रदान करके, उन्हें तुष्ट करते हैं । उनके पास अडिग रहने वाले तथा भली प्रकार फेंके जाने वाले सैकड़ों अस्त्र-शस्त्र हैं ॥२०,५१.४॥

सूक्त- ५२

सोमरस

वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः ।
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते ॥२०,५२.१॥

हे इन्द्रदेव !जैसे जल नीचे की ओर प्रवाहित होता है, उसी प्रकार शोधित सोमरस सहित हम आपको झुककर नमन करते हैं। पवित्र यज्ञ में कुश के आसन पर एक साथ बैठकर याजकगण आपकी उपासना करते हैं ॥२०,५२.१॥

स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः ।
कदा सुतं तृषाण ओक आ गम इन्द्र स्वब्दीव वंसगः ॥२०,५२.२॥

सभी को निवास देने वाले हे इन्द्रदेव ! सोमरस निकालकर याजकगण आपकी स्तुति करते हैं। सोमपान की इच्छा वाले आप, वृषभ जैसा नाद करते हुए कब हमारे यहाँ पधारेंगे? ॥२०,५२.२॥

कण्वेभिर्धृष्णवा धृसद्वाजं दर्षि सहस्रिणम् ।
पिशङ्गरूपं मघवन् विचर्षणे मक्षू गोमन्तमीमहे ॥२०,५२.३॥

धनवान् , ज्ञानी हे इन्द्रदेव ! हम आपसे शत्रुनाशक, सुवर्ण कान्तियुक्त, गौ के समान पवित्र धन पाने के इच्छुक हैं । हे शूरवीर इन्द्रदेव ! कण्ववंशियों (मेधावी पुरुषों) द्वारा स्तुत किये जाने के बाद आप उन्हें हजारों प्रकार के बल तथा ऐश्वर्य प्रदान करते हैं ॥२०,५२.३॥

सूक्त- ५३

इंद्र से यज्ञ में आने का अनुरोध

क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद्वयो दधे ।
अयं यः पुरो विभिनत्त्योजसा मन्दानः शिप्र्यन्धसः ॥२०,५३.१॥

सोमयज्ञ में एक ही स्थान पर विद्यमान होकर सोमपान करने वाले अत्यधिक वैभव सम्पन्न इन्द्रदेव को कौन नहीं जानता ? सौमपान से प्रमुदित, शिरस्त्राण धारण किये हुए इन्द्रदेव अपनी शक्ति से विरोधियों के नगरों को विनष्ट कर देते हैं ॥२०,५३.१॥

दाना मृगो न वारणः पुरुत्रा चरथं दधे ।
नकिष्ट्वा नि यमदा सुते गमो महाश्चरस्योजसा ॥२०,५३.२॥

अपने ओज से विचरण करने वाले हमारे लिए सम्माननीय हे इन्द्रदेव ! आप इस सोमयज्ञ में पधारें । शत्रु की खोज में घूमने वाले, मतवाले हाथी के समान रथ द्वारा यज्ञ में जाने से आपको कोई रोक नहीं सकता ॥२०,५३.२॥

य उग्रः सन्न् अनिष्टृत स्थिरो रणाय संस्कृतः ।
यदि स्तोतुर्मघवा शृणवद्धवं नेन्द्रो योषत्या गमत्॥२०,५३.३॥

जो शस्त्रों से सुसज्जित युद्धभूमि में स्थिर रहने वाले हैं, ऐसे अपराजेय, पराक्रमी, वैभवशाली इन्द्रदेव हमारी स्तुतियों को सुनकर दूसरे स्थान पर न जाकर इस यज्ञ में ही पधारें ॥२०,५३.३॥

सूक्त- ५४

इंद्र से यज्ञ में आने का अनुरोध

विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरं सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे ।
क्रत्वा वरिष्ठं वर आमुरिमुतोग्रमोजिष्ठं तवसं तरस्विनम् ॥२०,५४.१॥

(अषयों या देवों ने) सेनानायक, पराक्रमी, संगठित सेना से युक्त, शस्त्रास्त्र धारण करने वाले इन्द्रदेव को प्रकट किया। वे शत्रुहन्ता, उग्र, तीव्र गति से कार्य करने वाले इन्द्रदेव महिमामय हैं ॥२०,५४.१॥

समीं रेभासो अस्वरन्न् इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
स्वर्पतिं यदीं वृधे धृतव्रतो ह्योजसा समूतिभिः ॥२०,५४.२॥

रेभादि ऋषियों (याजकों) ने सोमपान के लिए इन्द्रदेव की स्तुति की । जब (स्तोतागण, देवलोक के स्वामी, बल एवं

वैभव सम्पन्न इन्द्रदेव की वन्दना करते हैं, तो वे व्रतधारी ओज एवं संरक्षण – साधनों से युक्त हो जाते हैं ॥२०,५४.२॥

नेमिं नमन्ति चक्षसा मेषं विप्रा अभिस्वरा ।
सुदीतयो वो अद्रुहोऽपि कर्णे तरस्विनः समृक्वभिः ॥२०,५४.३॥

नम्र स्वभाव वाले विद्वान् (रेभ आदि) नेत्रों एवं वाणी से इन्द्रदेव को नमस्कार करते हैं। किसी से द्रोह न करने वाले हे श्रेष्ठ, तेजस्वी स्तोताओ ! आप भी इन्द्रदेव के कानों को प्रिय लगने वाली ऋचाओं से उनकी स्तुति करें ॥२०,५४.३॥

सूक्त- ५५

इंद्र को यज्ञ में बुलाने का संकल्प

तमिन्द्रं जोहवीमि मघवानमुग्रं सत्रा दधानमप्रतिष्कुतं शवांसि ।
मंहिष्ठो गीर्भिरा च यज्ञियो ववर्तद्राये नो विश्वा सुपथा कृणोतु वज्री ॥२०,५५.१॥

धनवान्, वीर, महाबलशाली, अपराजेय इन्द्रदेव को हम सहायतार्थ बुलाते हैं। सबसे महान्, यज्ञों में पूज्य इन्द्रदेव की स्तोत्रों द्वारा प्रार्थना करते हैं। वे वज्रधारी ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए हमारे सभी मार्ग सुगम बनाएँ ॥२०,५५.१॥

या इन्द्र भुज आभरः स्वर्वामसुरेभ्यः ।
स्तोतारमिन् मघवन्न् अस्य वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः ॥२०,५५.२॥

आत्मशक्ति सम्पन्न हे इन्द्रदेव ! आप राक्षसों से जीतकर लाये गये धन से स्तोताओं का संरक्षण करें और जो आपका आवाहन करते हैं, उनकी वृद्धि करें ॥२०,५५.२॥

यमिन्द्र दधिषे त्वमश्वं गां भागमव्ययम् ।
यजमाने सुन्वति दक्षिणावति तस्मिन् तं धेहि मा पणौ ॥२०,५५.३॥

हे इन्द्रदेव ! आपके पास जो गौएँ, अश्व तथा अविनाशी ऐश्वर्य विद्यमान है, उसे आप सोमयागी तथा दक्षिणा प्रदान करने वाले याजकों को प्रदान करें। आप उसे सम्पत्ति अर्जित करने वाले कृपण जमाखोरों को न दें ॥२०,५५.३॥

सूक्त- ५६

इंद्र की स्तुति और वर्णन

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः ।
तमिन् महत्स्वाजिषूतेमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत्॥२०,५६.१॥

हर्ष और उत्साहवर्धन की कामना से स्तोताओं द्वारा इन्द्रदेव के यश का विस्तार किया जाता है, अतः छोटे और बड़े सभी युद्धों में, हम रक्षक इन्द्रदेव का आवाहन करते हैं। वे इन्द्रदेव युद्धों में हमारी रक्षा करें ॥२०,५६.१॥

असि हि वीर सेन्योऽसि भूरि परादिदिः ।
असि दभ्रस्य चिद्वृधो यजमानाय शिक्षसि सुन्वते भूरि ते वसु ॥२०,५६.२॥

हे वीर इन्द्रदेव ! आप सैन्यबलों से युक्त हैं। आप अनुचरों की वृद्धि करने वाले और उन्हें विपुल धन देने वाले हैं। आप सोमयाग करने वाले यजमान के लिए विपुल धन प्राप्ति की प्रेरणा देने वाले हैं ॥२०,५६.२॥

यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धना ।
युक्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधोऽस्मामिन्द्र वसौ दधः ॥२०,५६.३॥

युद्ध प्रारम्भ होने पर शत्रुजयी ही धन प्राप्त करते हैं । हे इन्द्रदेव ! युद्धारम्भ होने पर मद टपकाने वाले अश्वों को आप अपने रथ में जोड़ें । आप किसका वध करें, किसे धन दें ? यह आपके ऊपर निर्भर है । अत: हे इन्द्रदेव ! हमें ऐश्वर्यों से युक्त करें ॥२०,५६.३॥

मदेमदे हि नो ददिर्यूथा गवामृजुक्रतुः ।
सं गृभाय पुरु शतोभयाहस्त्या वसु शिशीहि राय आ भर ॥२०,५६.४॥

हे इन्द्रदेव ! यज्ञ कार्यों में सोमरस से प्रफुल्लित होकर आप हमें गौएँ आदि विपुल धन देने वाले हैं। आप हमें दोनों हाथों से सैकड़ों प्रकार का वैभव प्रदान करें । हम वीरतापूर्वक यश के भागीदार बनें ॥२०,५६.४॥

मादयस्व सुते सचा शवसे शूर राधसे ।
विद्मा हि त्वा पुरूवसुमुप कामान्ससृज्महेऽथा नोऽविता भव ॥२०,५६.५॥

हे इन्द्रदेव ! आप बल वृद्धि के लिए, हविष्यान्न ग्रहण करने के लिए और अभिषुत सोम का पान करने के लिए हमारे यज्ञस्थल में पधारें तथा सोमपान करके हर्षित हों। आप विपुल सम्पदाओं के स्वामी माने गये हैं।आप कामनाओं को पूरा करके हमारी रक्षा करने वाले हैं ॥२०,५६.५॥

एते त इन्द्र जन्तवो विश्वं पुष्यन्ति वार्यम् ।
अन्तर्हि ख्यो जनानामर्यो वेदो अदाशुषां तेषां नो वेद आ भर ॥२०,५६.६॥

हे इन्द्रदेव ! ये सभी प्राणी आपके वरण करने योग्य पदार्थों की वृद्धि करने वाले हैं। हे स्वामी इन्द्रदेव ! आप कृपणों के गुप्त धन को जानते हैं, उस धन को प्राप्त कर हमें प्रदान करें ॥२०,५६.६॥

सूक्त- ५७

रक्षा के लिए इंद्र का आह्वान

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे ।
जुहूमसि द्यविद्यवि ॥२०,५७.१॥

(गो-दोहन करने वाले के द्वारा जिस प्रकार प्रतिदिन मधुर दूध प्रदान करने वाली गाय को बुलाया जाता है, उसी प्रकार हम अपने संरक्षण के लिए सौन्दर्यपूर्ण यज्ञकर्म सम्पन्न करने वाले इन्द्रदेव का आवाहन करते हैं ॥२०,५७.१॥

उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब ।
गोदा इद्रेवतो मदः ॥२०,५७.२॥

सोमरस का पान करने वाले हे इन्द्रदेव ! आप सोम ग्रहण करने हेतु हमारे सवन- यज्ञों में पधार कर, सोमरस पीने के बाद प्रसन्न होकर याजकों को यश, वैभव और गौएँ प्रदान करें ॥२०,५७.२॥

अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम् ।

मा नो अति ख्य आ गहि ॥२०,५७.३॥

हे इन्द्रदेव ! सोमपान कर लेने के अनन्तर आपके समीपवर्ती श्रेष्ठ प्रज्ञावान् पुरुषों की उपस्थिति में रहकर हम आपके विषय में अधिक ज्ञान प्राप्त करें । आप भी हमारे अतिरिक्त अन्य किसी के समक्ष अपना स्वरूप प्रकट न करें ॥२०,५७.३॥

शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युम्निनं पाहि जागृविम् ।
इन्द्र सोमं शतक्रतो ॥२०,५७.४॥

हे शतकर्मा इन्द्रदेव ! हम याजकों को संरक्षण प्रदान करने के लिए आप अत्यन्त बल-प्रदायक दीप्तिमान् , चैतन्यता लाने वाले सोमरस का पान करें ॥२०,५७.४॥

इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु ।
इन्द्र तानि त आ वृणे ॥२०,५७.५॥

हे शतकर्मा इन्द्रदेव ! पाँच जनों (समाज के पाँचौं वर्गों) में जो इन्द्रियाँ (विशेष सामर्थ्य) हैं, उन्हें आपकी शक्तियों के रूप में हम वरण करते हैं ॥२०,५७.५॥

अगन्न् इन्द्र श्रवो बृहद्द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम् ।

उत्ते शुष्मं तिरामसि ॥२०,५७.६॥

है इन्द्रदेव ! यह महान् हविष्यान्न आपके पास जाए। आप शत्रुओं के लिए दुर्लभ तेजस्वी सोमरस ग्रहण करें । हम आपके बल को प्रवृद्ध करते हैं ॥२०,५७.६॥

अर्वावतो न आ गह्यथो शक्र परावतः ।
उ लोको यस्ते अद्रिव इन्द्रेह तत आ गहि ॥२०,५७.७॥

हे वज्रधारक इन्द्रदेव ! आप समीपस्थ प्रदेश से हमारे पास आएँ । दूरस्थ देश से भी आएँ । आपका जो उत्कृष्ट लोक है, उस लोक से भी आप यहाँ आएँ ॥२०,५७.७॥

इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभी षदप चुच्यवत्।
स हि स्थिरो विचर्षनिः ॥२०,५७.८॥

युद्ध में स्थिर रहने वाले विश्वद्रष्टा इन्द्रदेव महान् पराभवकारी भय को शीघ्र ही दूर करते हैं॥२०,५७.८॥

इन्द्रश्च मृलयाति नो न नः पश्चादघं नशत्।
भद्रं भवाति नः पुरः ॥२०,५७.९॥

यदि बलशाली इन्द्रदेव हमारा संरक्षण करेंगे, तो हमें पाप नष्ट नहीं कर सकता। वे हर प्रकार से हमारा कल्याण ही करेंगे ॥२०,५७.९॥

इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत्।
जेता शत्रून् विचर्षणिः ॥२०,५७.१०॥

शत्रुविजेता, प्रज्ञावान् इन्द्रदेव सभी दिशाओं से हमें निर्भय बनाएँ ॥२०,५७.१०॥

क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद्वयो दधे ।
अयं यः पुरो विभिनत्त्योजसा मन्दानः शिप्र्यन्धसः ॥२०,५७.११॥

सोमयज्ञ में एक ही स्थान पर विद्यमान होकर सोमपान करने वाले, अत्यधिक वैभव सम्पन्न इन्द्रदेव को कौन नहीं जानता ? सोमपान से प्रमुदित, शिरस्त्राण धारण किये हुए इन्द्रदेव अपनी शक्ति से विरोधियों के नगरों को विनष्ट कर देते हैं ॥२०,५७.११॥

दाना मृगो न वारणः पुरुत्रा चरथं दधे ।
नकिष्ट्वा नि यमदा सुते गमो महांश्चरस्योजसा ॥२०,५७.१२॥

अपने ओज से विचरण करने वाले हमारे लिए सम्माननीय हे इन्द्रदेव ! आप इस सोमयज्ञ में पधारें । शत्रु की खोज में घूमने वाले मतवाले हाथी के समान, रथ द्वारा यज्ञ में जाने से आपको कोई रोक नहीं सकता ॥२०,५७.१२॥

य उग्रः सन्न् अनिष्टृत स्थिरो रणाय संस्कृतः ।
यदि स्तोतुर्मघवा शृणवद्धवं नेन्द्रो योषत्या गमत्॥१३॥

जो शस्त्रों से सुसज्जित युद्धभूमि में स्थिर रहने वाले हैं, ऐसे अपराजेय, पराक्रमी वैभवशाली इन्द्रदेव हमारी स्तुतियों को सुनकर, दूसरे स्थान पर न जाकर इस यज्ञ में पधारें ॥२०,५७.१३॥

वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः ।
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते ॥२०,५७.१४॥

हे वृत्रहन्ता इन्द्रदेव ! जैसे जल नीचे की ओर प्रवाहित होता है, वैसे ही शोधित सोम सहित हम आपको झुककर नमन करते हैं। पवित्र यज्ञ में कुश के आसन पर एक साथ बैठकर याजकगण आपकी उपासना करते हैं॥२०,५७.१४॥

स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः ।
कदा सुतं तृषाण ओक आ गम इन्द्र स्वब्दीव वंसगः ॥२०,५७.१५॥

सभी को निवास देने वाले हे इन्द्रदेव ! सोमरस निकालकर याजकगण आपकी स्तुति करते हैं। सोमपान की इच्छा वाले आप, वृषभ जैसा नाद करते हुए कब हमारे यहाँ पधारेंगे ? ॥२०,५७.१५॥

कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद्वाजं दर्षि सहस्रिणम् ।
पिशङ्गरूपं मघवन् विचर्षणे मक्षू गोमन्तमीमहे ॥२०,५७.१६॥

धनवान् , ज्ञान हे इन्द्रदेव ! हम आप से शत्रुनाशक, सुवर्ण कान्तियुक्त, गौ के समान पवित्र धन पाने के इच्छुक हैं। हे शूरवीर इन्द्रदेव ! कण्ववंशियों (मेधावी पुरुषों) द्वारा स्तुति किये जाने के बाद आप उन्हें हजारों प्रकार के बल तथा ऐश्वर्य प्रदान करते हैं ॥२०,५७.१६॥

सूक्त- ५८

श्रायन्त इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।
वसूनि जाते जनमान ओजसा प्रति भागं न दीधिम ॥२०,५८.१॥

जैसे किरणें सूर्य के आश्रय में रहती हैं, वैसे ही इन्द्रदेव सम्पूर्ण जगत् के आश्रयदाता हैं। इन्द्रदेव से हम अपने भाग की कामना करते हैं; क्योंकि वे ही जन्म लिये हुए तथा जन्म लेने वालों को अपना-अपना भाग प्रदान करते हैं ॥२०,५८.१॥

अनर्शरातिं वसुदामुप स्तुहि भद्रा इन्द्रस्य रातयः ।
सो अस्य कामं विधतो न रोषति मनो दानाय चोदयन् ॥२०,५८.२॥

हे स्तोताओ ! आप सत्पुरुषों को धनादि दान करने वाले इन्द्रदेव की स्तुति करें; क्योंकि इनके दान कल्याणकारी प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं। जब इन्द्रदेव अपने मन के अनुरूप फल देने की प्रेरणा देते हैं, तो उपासक की कामना को नष्ट नहीं करते ॥२०,५८.२॥

बण्महामसि सूर्य बडादित्य महामसि ।
महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महामसि ॥२०,५८.३॥

प्रेरक, अदितिपुत्र हे इन्द्रदेव ! यह सुनिश्चित सत्य है कि आप महान् तेजस्वी हैं । हे देव ! आप महान् शक्तिशाली भी हैं, आपकी महानता का हम गुणगान करते हैं ॥२०,५८.३॥

(बट्सूर्य श्रवसा महामसि सत्रा देव महामसि ।
(मह्ना देवानामसुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम् ॥२०,५८.४॥

हे सूर्यदेव ! आप अपने यश के कारण महान् हैं । देवों के बीच विशेष महत्त्व के कारण आप महान् हैं। आप तमिस्रा (अन्धकार) रूपी असुरों का नाश करने वाले हैं। पुरोहित के समान देवों का नेतृत्व करने वाले हैं। आपका तेज अदम्य, सर्वव्यापी और अविनाशी है ॥२०,५८.४॥

सूक्त- ५९

उदु त्ये मधु मत्तमा गिर स्तोमास ईरते ।
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथा इव ॥२०,५९.१॥

मधुरतायुक्त श्रेष्ठ वाणियाँ (स्तुतियाँ) प्रकट हो रही हैं । विजय दिलाने वाले, ऐश्वर्य प्राप्ति के माध्यम, सतत रक्षा करने वाले मधुर स्तोत्र रथ के समान (देवों तक इच्छित भावों या हव्यों को) पहुँचाते हैं ॥२०,५९.१॥

कण्वा इव भृगवः सूर्य इव विश्वमिद्धीतमानशुः ।
इन्द्रं स्तोमेभिर्महयन्त आयवः प्रियमेधासो अस्वरन् ॥२०,५९.२॥

कण्व गोत्रोत्पन्न ऋषियों की भाँति स्तुति करते हुए भृगु गोत्रोत्पन्न ऋषियों ने इन्द्रदेव को चारों ओर से उसी प्रकार घेर लिया, जिस प्रकार सूर्य रश्मियाँ इस संसार में चारों ओर फैल जाती हैं । प्रियमेध ने स्तुति करते हुए महान् इन्द्रदेव का पूजन किया॥२०,५९.२॥

उदिन् न्वस्य रिच्यतेऽंशो धनं न जिग्युसः ।
य इन्द्रो हरिवान् न दभन्ति तं रिपो दक्षं दधाति सोमिनि ॥२०,५९.३॥

जो यजमान हरि (अश्व) युक्त इन्द्रदेव के लिए सोमरस तैयार कर अर्पित करते हैं, वे इन्द्रदेव की कृपा से प्राप्त बल द्वारा शत्रु को जीतते हैं ॥२०,५९.३॥

मन्त्रमखर्वं सुधितं सुपेशसं दधात यज्ञियेष्वा ।
पूर्वीश्चन प्रसितयस्तरन्ति तं य इन्द्रे कर्मणा भुवत्॥२०,५९.४॥

(हे स्तोतागण !) यजनीय देवताओं के बीच इन्द्रदेव के लिए बड़े- सुगढ़ एवं सुन्दर- शोभनीय स्तोत्र अर्पित करो। जिसके स्तोत्रों को इन्द्रदेव मन से स्वीकार कर लेते हैं, उसे किसी प्रकार का बन्धन, कष्ट नहीं दे सकता ॥२०,५९.४॥

सूक्त- ६०

एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः ।
एवा ते राध्यं मनः ॥२०,६०.१॥

हे बलवान् इन्द्रदेव ! रणक्षेत्र में शत्रुओं को पराजित करने वाले, युद्ध में अडिग रहने वाले आप शूरवीर हैं। आपका मन (संकल्पशील) प्रशंसा के योग्य है ॥२०,६०.१॥

एवा रातिस्तुवीमघ विश्वेभिर्धायि धातृभिः ।
अघा चिदिन्द्र मे सचा ॥२०,६०.२॥

हे ऐश्वर्यवान् इन्द्रदेव ! आपके द्वारा प्रदत्त साधन सभी याजक प्राप्त करते हैं। आप हमें ऐश्वर्य प्रदान करें ॥२०,६०.२॥

मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुर्भुवो वाजानां पते ।
मत्स्वा सुतस्य गोमतः ॥२०,६०.३॥

अन्नाधिपति, बलवान् हे इन्द्रदेव ! आप गोदुग्ध में मिलाये गये मधुर सोमरस का पान कर आनन्दित हो । आलसी ब्राह्मण की भाँति निष्क्रिय न रहें ॥२०,६०.३॥

एवा ह्यस्य सूनृता विरप्शी गोमती मही ।
पक्वा शाखा न दाशुषे ॥२०,६०.४॥

इन्द्रदेव की अति मधुर और सत्यवाणी उसी प्रकार सुख देती हैं, जिस प्रकार गोधन के दाता और पके फल वाली शाखाओं से युक्त वृक्ष यजमानों (हविदाताओं) को सुख देते हैं ॥२०,६०.४॥

एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते ।
सद्यश्चित्सन्ति दाशुषे ॥२०,६०.५॥

हे इन्द्रदेव ! आपकी इष्टदात्री और संरक्षण प्रदान करने वाली जो विभूतियाँ हैं, वे हमारे जैसे सभी दानदाताओं (अपने साधन श्रेष्ठ कार्य में नियोजन करने वालों) को तत्काल प्राप्त होती हैं ॥२०,६०.५॥

एवा ह्यस्य काम्या स्तोम उक्थं च शंस्या ।
इन्द्राय सोमपीतये ॥२०,६०.६॥

दाता की स्तुतियाँ अति मनोरम एवं प्रशंसनीय हैं । ये सब सोमपान करने वाले इन्द्रदेव के लिए हैं ॥२०,६०.६॥

सूक्त- ६१

तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृत्सु सासहिम् ।
उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम् ॥२०,६१.१॥

हे वज्रपाणि इन्द्रदेव ! शक्तिशाली, संग्राम में शत्रु को पराजित करने वाले, कल्याणकारक तथा अश्वों के लिए सेवनीय आपके उत्साह की हम प्रशंसा करते हैं ॥२०,६१.१॥

येन ज्योतींष्यायवे मनवे च विवेदिथ ।
मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजसि ॥२०,६१.२॥

हे इन्द्रदेव ! आपने दीर्घजीवी मनुष्य के हित के लिए ज्योतिष्मान् (सूर्यादि नक्षत्र) प्रकाशित किये हैं। आप इस बर्हि (यज्ञ वेदिका) पर विराजमान होते हैं ॥२०,६१.२॥

तदद्या चित्त उक्थिनोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा ।
वृषपत्नीरपो जया दिवेदिवे ॥२०,६१.३॥

हे इन्द्रदेव ! सनातन स्तुतिकर्ता आज भी आपके बल की स्तुति करते हैं। पर्जन्य की वर्षा करने वाले जल को आप प्रतिदिन मुक्त करें अर्थात् समयानुसार वर्षा करते रहें ॥२०,६१.३॥

तं वभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतम् ।
इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत ॥२०,६१.४॥

हे स्तोताओ ! अनेक यजमानों द्वारा स्तुतिपूर्वक आवाहन किये जाने वाले, प्रशंसा के योग्य उन महान् इन्द्रदेव की विभिन्न स्तोत्रों से स्तुति करो ॥२०,६१.४॥

यस्य द्विबर्हसो बृहत्सहो दाधार रोदसी ।
गिरींरज्रामपः स्वर्वृषत्वना ॥२०,६१.५॥

वे इन्द्रदेव अपनी शक्ति से शीघ्रगामी बादलों तथा गतिमान् जल को धारण करते हैं। उनके महान् बल को द्युलोक और पृथ्वीलोक ग्रहण करते हैं ॥२०,६१.५॥

स राजसि पुरुष्टुतमेको वृत्राणि जिघ्नसे ।
इन्द्र जैत्रा श्रवस्य च यन्तवे ॥२०,६१.६॥

बहुप्रशंसित हे इन्द्रदेव ! आप अपनी दिव्य कान्ति से आलोकित होते हैं। ऐश्वर्य तथा कीर्ति को प्राप्त करने के निमित्त आप अकेले ही वृत्रासुर का वध करते हैं ॥२०,६१.६॥

सूक्त-६२

वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद्भरन्तोऽवस्यवः ।
वाजे चित्रं हवामहे ॥२०,६२.१॥

वज्रधारी, अनुपम हे इन्द्रदेव ! जिस प्रकार सांसारिक गुण-सम्पन्न, शक्तिशाली मनुष्यों को लोग बुलाते हैं; उसी प्रकार अपनी रक्षा की कामना से विशिष्ट सोमरस द्वारा तृप्त करते हुए, हम आपकी स्तुति करते हैं ॥२०,६२.१॥

उप त्वा कर्मन्न् ऊतये स नो युवोग्रश्चक्राम यो धृषत्।
त्वामिद्ध्यवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सानसिम् ॥२०,६२.२॥

हे शत्रु-संहारक देवेन्द्र ! कर्मशील रहते हुए हम अपनी सहायता के लिए तरुण और शूरवीर रूप में विद्यमान आपका ही आश्रय लेते हैं । मित्रवत् सहायता के लिए हम आपको स्मरण करते हैं ॥२०,६२.२॥

यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य आनिनाय तमु व स्तुषे ।
सखाय इन्द्रमूतये ॥२०,६२.३॥

हे मित्रो ! पूर्वकाल से ही जो, धन- वैभव प्रदान करने वाले हैं, उन इन्द्रदेव की हम आपके कल्याण के लिए स्तुति करते हैं ॥२०,६२.३॥

हर्यश्वं सत्पतिं चर्षणीसहं स हि ष्मा यो अमन्दत ।
आ तु नः स वयति गव्यमश्व्यं स्तोतृभ्यो मघवा शतम् ॥२०,६२.४॥

हरित अश्वों वाले, भद्रजनों का पालन करने वाले, रिपुओं को परास्त करने वाले तथा स्तुतियों से प्रसन्न रहने वाले इन्द्रदेव की हम प्रार्थना करते हैं, वे हम स्तुतिकर्ताओं को सैकड़ों गौओं तथा अश्वों से भरपूर ऐश्वर्य प्रदान करें ॥२०,६२.४॥

इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत्।
धर्मकृते विपश्चिते पनस्यवे ॥२०,६२.५॥

हे उद्गाताओ ! विवेक-सम्पन्न, महान् , स्तुत्य, ज्ञानवान् इन्द्रदेव के निमित्त आप लोग बृहत्साम (नामक स्तोत्रों) का गायन करें ॥२०,६२.५॥

त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं सूर्यमरोचयः ।
विश्वकर्मा विश्वदेवो महामसि ॥२०,६२.६॥

सूर्य को प्रकाशित करने वाले, दुष्ट – दुराचारियों को पराजित करने वाले हे इन्द्रदेव ! आप विश्वकर्मा हैं, विश्व के प्रकाश हैं, महान् हैं ॥२०,६२.६॥

विभ्राजं ज्योतिषा स्वरगच्छो रोचनं दिवः ।
देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे ॥२०,६२.७॥

अपने तेज का विस्तार करते हुए सूर्य को प्रकाशित करने वाले हे इन्द्रदेव ! आप पधारें । समस्त देवतागण आपसे मित्रतापूर्वक सम्पर्क स्थापित करना चाहते हैं ॥२०,६२.७॥

तं वभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतम् ।
इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत ॥२०,६२.८॥

हे स्तोताओ ! अनेक यजमानों द्वारा स्तुतिपूर्वक आवाहन किये जाने वाले, प्रशंसा के योग्य उन महान् इन्द्रदेव की विभिन्न स्तोत्रों से स्तुति करो ॥२०,६२.८॥

यस्य द्विबर्हसो बृहत्सहो दाधार रोदसी ।
गिरींरज्राँ अपः स्वर्वृषत्वना ॥२०,६२.९॥

वे इन्द्रदेव अपनी शक्ति से शीघ्रगामी बादलों तथा गतिमान् जल को धारण करते हैं। उनके महान् बल को द्युलोक और पृथ्वीलोक ग्रहण करते हैं ॥२०,६२.९॥

स राजसि पुरुष्टुतमेको वृत्राणि जिघ्नसे ।
इन्द्र जैत्र श्रवस्य च यन्तवे ॥२०,६२.१०॥

बहुप्रशंसित है इन्द्रदेव ! आप अपनी दिव्य कान्ति से आलोकित होते हैं। ऐश्वर्य तथा कीर्ति को प्राप्त करने के निमित्त आप अकेले ही वृत्रासुर का वध करते हैं ॥२०,६२.१०॥

सूक्त- ६३

इमा नु कं भुवना सीषधामेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ।
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सह चीकॢपाति ॥२०,६३.१॥

इन समस्त लोकों को हम शीघ्र ही प्राप्त करें । इन्द्रदेव और सभी देवगण हमारे लिए सुख शान्ति की प्राप्ति में सहायक हों । इन्द्रदेव और आदित्यगण हमारे यज्ञ को सफल बनाएँ, शरीर को निरोग बनाएँ और हमारी संतानों को सद्व्यवहार के लिए प्रेरित करें ॥२०,६३.१॥

दित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्माकं भूत्ववित तनूनाम् ।
हत्वाय देवा असुरान् यदायन् देवा देवत्वमभिरक्षमाणाः ॥२०,६३.२॥

इन्द्रदेव, आदित्यों और मरुद्गणों के साथ पधार कर हमारे शरीरों को सुरक्षा प्रदान करें । जिस समय देवगण वृत्रादि असुरों का संहार करके अपने स्थान की ओर लौटे, उस समय अमर देवत्व की सुरक्षा हो सकी ॥२०,६३.२॥

प्रत्यञ्चमर्कमनयं छचीभिरादित्स्वधामिषिरां पर्यपश्यन् ।
अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः ॥२०,६३.३॥

स्तोताओं ने इन्द्रादि देवों के निमित्त श्रेष्ठ यज्ञादि कर्मों से युक्त स्तुतियाँ प्रस्तुत की। उसके पश्चात् सभी ने अन्तरिक्ष में बरसते हुए जल को देखा। हे इन्द्रदेव ! आप हम स्तोताओं को अन्नादि से युक्त करें। हम वीर पुत्र पौत्रादि से युक्त होकर शतायु हों तथा सुखमय जीवनयापन करें ॥२०,६३.३॥

य एक इद्विदयते वसु मर्ताय दाशुषे ।
ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग ॥२०,६३.४॥

हे प्रिय याजको ! दानशील होने के कारण मनुष्यों को धन देने वाले, प्रतिकार न किये जाने वाले, वे अकेले इन्द्रदेव ही सभी (प्राणियों) के अधिपति हैं ॥२०,६३.४॥

कदा मर्तमराधसं पदा क्षुम्पमिव स्फुरत्।
कदा नः शुश्रवद्गिर इन्द्रो अङ्ग ॥२०,६३.५॥

वे इन्द्र हमारी स्तुतियाँ कब सुनेंगे ? और आराधना न करने वालों को क्षुद्र पौधे की भाँति कब नष्ट करेंगे?॥२०,६३.५॥

यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य आ सुतावामाविवासति ।
उग्रं तत्पत्यते शव इन्द्रो अङ्ग ॥२०,६३.६॥

असंख्यों में से जो यजमान सोमयज्ञ करके आपकी आराधना करता है, उसे हे इन्द्रदेव ! आप शीघ्र बल सम्पन्न बना देते हैं ॥२०,६३.६॥

य इन्द्र सोमपातमो मदः शविष्ठ चेतति ।
येना हंसि न्यत्त्रिणं तमीमहे ॥२०,६३.७॥

सोमपान करने वालों में श्रेष्ठ हे बलशाली इन्द्रदेव ! आप उल्लसित होकर कार्यों के प्रति जागरूक होते हैं । जिस बल से आप घातक असुरों (आसुरी वृत्तियों) को नष्ट करते हैं, हम आपसे वहीं सामर्थ्य माँगते हैं ॥२०,६३.७॥

येना दशग्वमध्रिगुं वेपयन्तं स्वर्णरम् ।
येना समुद्रमाविथा तमीमहे ॥२०,६३.८॥

हे इन्द्रदेव ! जिस शक्ति से आपने अंगिरा वंशीय अधिगु' की, अंधेरे को नष्ट करने वाले सूर्य की तथा समुद्र यो

अन्तरिक्ष की रक्षा की थीं, उसी शक्ति की हम आपसे याचना करते हैं ॥२०,६३.८॥

येन सिन्धुं महीरपो रथामिव प्रचोदयः ।
पन्थामृतस्य यातवे तमीमहे ॥२०,६३.९॥

हे इन्द्रदेव ! आपने जिस बल से विशाल जल राशियों को रथ की भाँति समुद्र की ओर प्रेरित (गतिशील) किया, उसी बल को हम यज्ञीय पथ पर गमन करने के लिए आपसे माँगते हैं ॥२०,६३.९॥

सूक्त- ६४

एन्द्र नो गधि प्रियः सत्राजिदगोह्यः ।
गिरिर्न विश्वतस्पृथुः पतिर्दिवः ॥२०,६४.१॥

सर्वप्रिय, सभी शत्रुओं को जीतने वाले, अपराजेय हे इन्द्रदेव ! पर्वत के सदृश सुविशाल, द्युलोक के अधिपति आप (अनुदान देने हेतु हमारे पास पधारें ॥२०,६४.१॥

अभि हि सत्य सोमपा उभे बभूथ रोदसी ।
इन्द्रासि सुन्वतो वृधः पतिर्दिवः ॥२०,६४.२॥

सत्यपालक, सोमपायी है इन्द्रदेव ! आप आकाश और पृथ्वी दोनों लोकों को अपने प्रभाव में लेने में समर्थ हैं। हे द्युलोक के स्वामी ! आप सोमयाग – कर्ताओं को उन्नति प्रदान करने वाले हैं ॥२०,६४.२॥

त्वं हि शश्वतीनामिन्द्र दर्ता पुरामसि ।
हन्ता दस्योर्मनोर्वृधः पतिर्दिवः ॥२०,६४.३॥

हे इन्द्रदेव ! आप दुष्टों के अविनाशी पुरों का नाश करने वाले, अज्ञान मिटाने वाले, यज्ञकर्ता, मनुष्यों के मनोबल को बढ़ाने वाले तथा प्रकाशलोक के स्वामी हैं ॥२०,६४.३॥

एदु मध्वो मदिन्तरं सिञ्च वाध्वर्यो अन्धसः ।
एवा हि वीर स्तवते सदावृधः ॥२०,६४.४॥

हे ऋत्विग्गण ! मधुर सोमपान से आनन्दित होने वाले इन्द्रदेव को यह रस समर्पित करो। पराक्रमी और निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होने वाले इन्द्रदेव ही स्तोताओं द्वारा सर्वदा प्रशंसित होते हैं ॥२०,६४.४॥

इन्द्र स्थातर्हरीणां नकिष्टे पूर्व्यस्तुतिम् ।
उदानंश शवसा न भन्दना ॥२०,६४.५॥

है अश्वपति इन्द्रदेव ! ऋषि प्रणीत आपकी स्तुतियों को अपनी सामर्थ्य एवं तेजस्विता से अन्य कोई भी प्राप्त नहीं कर सकते ॥२०,६४.५॥

तं वो वाजानां पतिमहूमहि श्रवस्यवः ।
अप्रायुभिर्यज्ञेभिर्वावृधेन्यम् ॥२०,६४.६॥

ऐश्वर्य की कामना से हम उन वैभवशाली इन्द्रदेव का आवाहन करते हैं, जो प्रमादरहित होकर याजकों के यज्ञों (सत्कर्मों) से वृद्धि को (पोषण को) प्राप्त करते हैं ॥२०,६४.६॥

सूक्त – ६५

एतो न्विन्द्रं स्तवाम सखाय स्तोम्यं नरम् ।
कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत्॥२०,६५.१॥

हे मित्रो ! शीघ्र आओ; हम उन स्तुत्य, वीर इन्द्रदेव की प्रार्थना करें, जो अकेले ही सभी शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम हैं ॥२०,६५.१॥

अगोरुधाय गविषे द्युक्षाय दस्म्यं वचः ।
घृतात्स्वादीयो मधुनश्च वोचत ॥२०,६५.२॥

हे याजको ! गौ (गाय, वाणी अथवा इन्द्रियों) का वध न करके उसको संरक्षित करने वाले तेजस्- सम्पन्न इन्द्रदेव के निमित्त घृत एवं शहद से भी अधिक सुस्वादयुक्त स्तुति वचनों का पाठ करें ॥२०,६५.२॥

यस्यामितानि वीर्या न राधः पर्येतवे ।
ज्योतिर्न विश्वमभ्यस्ति दक्षिणा ॥२०,६५.३॥

वे इन्द्रदेव असीम शौर्य से सम्पन्न हैं। उनकी सम्पत्ति को कोई प्राप्त नहीं कर सकता। उनका दान, प्रकाश के समान सबके लिए उपलब्ध है ॥२०,६५.३॥

सूक्त-६६

स्तुहीन्द्रं व्यश्ववदनूर्मिं वाजिनं यमम् ।
अर्यो गयं मंहमानं वि दाशुषे ॥२०,६६.१॥

हे स्तोताओ ! वे इन्द्रदेव अहिंसित शक्ति- सम्पन्न तथा समस्त जगत् को नियमित करने वाले हैं। आप व्यश्व ऋषि के सदृश उनकी प्रार्थना करें । वे दानियों को सराहनीय ऐश्वर्य प्रदान करते हैं ॥२०,६६.१॥

एवा नूनमुप स्तुहि वैयश्व दशमं नवम् ।
सुविद्वांसं चर्कृत्यं चरणीनाम् ॥२०,६६.२॥

हे विश्वमना वैयश्व ऋषे ! वे विद्वान् इन्द्रदेव मनुष्यों के अन्दर नौ प्राणों के अतिरिक्त दसवें प्राण (मुख्य प्राण) की तरह विद्यमान रहते हैं- ऐसे पूजनीय इन्द्रदेव की आप स्तुति करें ॥२०,६६.२॥

वेत्था हि निर्ऋतीनां वज्रहस्त परिवृजम् ।
अहरहः शुन्ध्युः परिपदामिव ॥२०,६६.३॥

जिस प्रकार शोधनकर्ता (सूर्य, अग्नि आदि) सब ओर गतिशील (प्राणियों- पक्षियों) को जानते (उन्हें शुद्ध बनाते) हैं, उसी प्रकार हे वज्रपाणे ! आप निऋतियों (राक्षसों- सभी लोकों) को नियंत्रित करना जानते हैं ॥२०,६६.३॥

सूक्त – ६७

वनोति हि सुन्वन् क्षयं परीणसः सुन्वानो हि ष्मा यजत्यव
द्विषो देवानामव द्विषः ।
सुन्वान इत्सिषासति सहस्रा वाज्यवृतः ।
सुन्वानायेन्द्रो ददात्याभुवं रयिं ददात्याभुवम् ॥२०,६७.१॥

सोमयाग करने वाले यजमान धनयुक्त आवास प्राप्त करते हैं। वे ही दुष्टों और देव- विरोधियों को दूर करते हैं । जो याजक अवरोधों से घेरे न जाकर सहस्रों प्रकार के दिव्य धन को जीतना चाहते हैं; इन्द्रदेव उन्हें पर्याप्त धन देते हैं, पर्याप्त (दिव्य- सम्पदा) देते हैं ॥२०,६७.१॥

मो षु वो अस्मदभि तानि पौंस्या सना भूवन् द्युम्नानि मोत
जारिषुरस्मत्पुरोत जारिषुः ।
यद्वश्चित्रं युगेयुगे नव्यं घोषादमर्त्यम् ।
अस्मासु तन् मरुतो यच्च दुष्टरं दिधृता यच्च दुष्टरम्
॥२०,६७.२॥

हे मरुद्गणो ! पुरातनकाल की आपकी पराक्रमी सामर्थ्यों को हम कभी विस्मृत न करें, उसी प्रकार हमारी कीर्ति

सदैव अक्षुण्ण रहे तथा हमारे नगरों का विध्वंस न हो । आश्चर्यप्रद, स्तुतियोग्य और अमृतरूपी रस प्रदान करने वाली गौओं से सम्बन्धित तथा मनुष्य मात्र के लिए जो धन सम्पदाएँ हैं, वे सभी युगों-युगों तक हमारे पास विद्यमान रहें। आप हमें कठिनाई से प्राप्त होने योग्य सम्पदाएँ भी प्रदान करें ॥२०,६७.२॥

अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसुं सूनुं सहसो जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम् ।
य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा ।
घृतस्य विभ्राष्टिमनु वष्टि शोचिषाजुह्वानस्य सर्पिषः ॥२०,६७.३॥

दैवी गुणों से सम्पन्न, श्रेष्ठ कर्म के सम्पादक, जो अग्निदेव देवताओं के समीप जाने वाली ऊर्ध्वगामी ज्वालाओं से प्रदीप्त और विस्तारयुक्त होकर, अनवरत घृतपान की अभिलाषा करते हैं, उन देव – आवाहनकर्ता, दानकर्ता, सबके आश्रयभूत, अरणिमन्थन से उत्पन्न, शक्ति के पुत्र, सर्वज्ञान- सम्पन्न, शास्त्रज्ञाता और ब्रह्मनिष्ठज्ञानी के सदृश; अग्निदेव को हम स्वीकार करते हैं ॥२०,६७.३॥

यज्ञैः संमिश्लाः पृषतीभिर्ऋष्टिभिर्यामं छुभ्रासो अञ्जिषु प्रिया उत ।

आसद्या बर्हिर्भरतस्य सूनवः पोत्रादा सोमं पिबता दिवो नरः
॥२०,६७.४॥

यज्ञीय कार्य में सहायक भूमि को सिञ्चित करने वाले, शस्त्रों से सुशोभित, आभूषण प्रेमी, भरण-पोषण में समर्थ, देवपुत्र तथा नेतृत्व प्रदान करने वाले हे मरुद्गणो !आप यज्ञ में विराजमान होकर पवित्र सोम का पान करें॥२०,६७.४॥

आ वक्षि देवामिह विप्र यक्षि चोशन् होतर्नि षदा योनिषु त्रिषु ।
प्रति वीहि प्रस्थितं सोम्यं मधु पिबाग्नीध्रात्तव भागस्य तृप्णुहि ॥२०,६७.५॥

है मेधावी अग्निदेव ! हमारे इस यज्ञ में देवगणों को सत्कारपूर्वक बुलाएँ । हे होता अग्निदेव ! हमारे यज्ञ की कामना से आप तीनों लोकों में प्रतिष्ठित हों । शोधित सोमरस को स्वीकार करके इस यज्ञ में सोमपान करें, समर्पित किये गये भाग से आप तृप्त हों ॥२०,६७.५॥

एष स्य ते तन्वो नृम्णवर्धनः सह ओजः प्रदिवि बाह्वोर्हितः ।
तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यमाभृतस्त्वमस्य ब्राह्मणादा तृपत्पिब
॥२०,६७.६॥

हे इन्द्रदेव ! आप हमारे यज्ञ में आएँ । होतागण उत्तम स्तोत्रों से स्तुति करते हैं, अतः हमारे आवाहन को सुनकर यज्ञ में बैठकर सुशोभित हों । हे देवो ! याजकों द्वारा शोधित यह सोमरस दुग्ध मिश्रित है, जो शरीर के बल की वृद्धि करने वाला है ; अत: आप हमारे इस यज्ञ में आकर इस सोमरस का पान करें ॥२०,६७.६॥

यमु पूर्वमहुवे तमिदं हुवे सेदु हव्यो ददिर्यो नाम पत्यते ।
अध्वर्युभिः प्रस्थितं सोम्यं मधु पोत्रात्सोमं द्रविणोदः पिब ऋतुभिः ॥२०,६७.७॥

जिन अग्निदेव को हमने पहले भी बुलाया था, उन्हें अब भी आवाहित करते हैं। ये अग्निदेव निश्चित ही याजकों को धन प्रदान करने वाले तथा सभी के स्वामी हैं, आवाहन के योग्य हैं। इन देव के लिए याजकों द्वारा सोमरस शोधित किया गया है । हे अग्निदेव ! इस पवित्र यज्ञ में ऋतु के अनुरूप सोमरस का पान करें ॥२०,६७.७॥

सूक्त – ६८

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे ।
जुहूमसि द्यविद्यवि ॥२०,६८.१॥

गोदोहन करने वाले के द्वारा जिस प्रकार प्रतिदिन मधुर दूध प्रदान करने वाली गाय को बुलाया जाता है, उसी प्रकार हम अपने संरक्षण के लिये सौन्दर्य पूर्ण यज्ञकर्म सम्पन्न करने वाले इन्द्रदेव का आवाहन करते हैं ॥२०,६८.१॥

उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब ।
गोदा इद्रेवतो मदः ॥२०,६८.२॥

सोमरसे का पान करने वाले हे इन्द्रदेव ! आप सोम ग्रहण करने हेतु हमारे सवन-यज्ञों में पधार कर, सोमरस पीने के बाद प्रसन्न होकर याजकों को यश, वैभव और गौएँ प्रदान करें ॥२०,६८.२॥

अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम् ।
मा नो अति ख्य आ गहि ॥२०,६८.३॥

सोमपान कर लेने के अनन्तर हे इन्द्रदेव ! हम आपके अत्यन्त समीपवर्ती श्रेष्ठ प्रज्ञावान् पुरुषों की उपस्थिति में रहकर आपके विषय में अधिक ज्ञान प्राप्त करें । आप भी हमारे अतिरिक्त अन्य किसी के समक्ष अपना स्वरूप प्रकट न करें ॥२०,६८.३॥

परेहि विग्रमस्तृतमिन्द्रं पृछा विपश्चितम् ।
यस्ते सखिभ्य आ वरम् ॥२०,६८.४॥

हे ज्ञानवानो ! आप उन विशिष्ट बुद्धि वाले, अपराजेय इन्द्रदेव के पास जाकर मित्रों- बन्धुओं के लिए धन ऐश्वर्य के निमित्त प्रार्थना करें ॥२०,६८.४॥

उत ब्रुवन्तु नो निदो निरन्यतश्चिदारत ।
दधाना इन्द्र इद्दुवः ॥२०,६८.५॥

इन्द्रदेव की उपासना करने वाले उपासक उन (इन्द्रदेव) के निन्दकों को यहाँ से अन्यत्र निकल जाने को कहें; ताकि वे यहाँ से दूर हो जाएँ ॥५२०,६८.॥

उत नः सुभगामरिर्वोचेयुर्दस्म कृष्टयः ।
स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि ॥२०,६८.६॥

हे इन्द्रदेव ! हम आपके अनुग्रह से समस्त वैभव प्राप्त करें, जिससे देखने वाले सभी शत्रु और मित्र हमें सौभाग्यशाली समझें ॥२०,६८.६॥

एमाशुमाशवे भर यज्ञश्रियं नृमादनम् ।
पतयन् मन्दयत्सखम् ॥२०,६८.७॥

(हे याजको !) यज्ञ को श्री – सम्पन्न बनाने वाले, प्रसन्नता प्रदान करने वाले, मित्रों को आनन्द देने वाले इस सोमरस को शीघ्रगामी इन्द्रदेव के लिए भरें (अर्पित करें) ॥२०,६८.७॥

अस्य पीत्वा शतक्रतो घनो वृत्राणामभवः ।
प्रावो वाजेषु वाजिनम् ॥२०,६८.८॥

हे सैकड़ों यज्ञ सम्पन्न करने वाले इन्द्रदेव ! इस सोमरस को पीकर आप वृत्र आदि प्रमुख शत्रुओं के संहारक सिद्ध हुए हैं। आप समर भूमि में वीर योद्धाओं की रक्षा करें ॥२०,६८.८॥

तं त्वा वाजेषु वाजिनं वाजयामः शतक्रतो ।
धनानामिन्द्र सातये ॥२०,६८.९॥

हे शतकर्मा इन्द्रदेव ! युद्धों में बल प्रदान करने वाले आपको हम धनप्राप्ति के लिए हवि अर्पित करते हैं ॥२०,६८.९॥

यो रायोऽवनिर्महान्त्सुपारः सुन्वतः सखा ।
तस्मा इन्द्राय गायत ॥२०,६८.१०॥

हे याजको ! जो धनों के महान् रक्षक, दु:खों को दूर करने वाले और सोमयाग करने वाले याज्ञिकों से मित्रवत् भाव रखते हैं, उन इन्द्रदेव के लिए आप स्तोत्रों का गान करें ॥२०,६८.१०॥

आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत ।
सखाय स्तोमवाहसः ॥२०,६८.११॥

हे स्तोत्रगायक मित्रो ! इन्द्रदेव को प्रसन्न करने के लिए स्तुति हेतु शीघ्र आकर बैठो और हर प्रकार से उनका गुणगान करो ॥२०,६८.११॥

पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम् ।
इन्द्रं सोमे सचा सुते ॥२०,६८.१२॥

हे याजक मित्रो ! सोम के अभिधुत होने पर शत्रुओं को पराजित करने वाले और ऐश्वर्य के स्वामी इन्द्रदेव की संयुक्त रूप से स्तुति करें ॥२०,६८.१२॥

सूक्त – ६९

स घा नो योग आ भुवत्स राये स पुरंध्याम् ।
गमद्वाजेभिरा स नः ॥२०,६९.१॥

वे इन्द्रदेव हमारे पुरुषार्थ को प्रखर बनाने में सहायक, धन – धान्य से हमें परिपूर्ण करें तथा ज्ञान प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करते हुए पोषक अन्न सहित हमारे निकट आएँ ॥२०,६९.१॥

यस्य संस्थे न वृण्वते हरी समत्सु शत्रवः ।
तस्मा इन्द्राय गायत ॥२०,६९.२॥

(हे स्तोताओ !) संग्राम में जिनके अश्वों से युक्त रथों के सम्मुख शत्रु टिक नहीं सकते, उन इन्द्रदेव के गुणों का आप गान करें ॥२०,६९.२॥

सुतपाव्ने सुता इमे शुचयो यन्ति वीतये ।
सोमासो दध्याशिरः ॥२०,६९.३॥

यह निचोड़ा और शुद्ध किया हुआ दही मिश्रित सोमरस, सोमपान की इच्छा करने वाले इन्द्रदेव के भोग हेतु जाता है ॥२०,६९.३॥

त्वं सुतस्य पीतये सद्यो वृद्धो अजायथाः ।
इन्द्र ज्यैष्ठ्याय सुक्रतो ॥२०,६९.४॥

हे उत्तम कर्मवाले इन्द्रदेव ! आप सोमरस पीने के लिए और देवताओं में सर्वश्रेष्ठ होने के लिए वृद्ध (बड़े) हो जाते हैं ॥२०,६९.४॥

आ त्वा विशन्त्वाशवः सोमास इन्द्र गिर्वणः ।
शं ते सन्तु प्रचेतसे ॥२०,६९.५॥

हे इन्द्रदेव ! ये तीखे (तिक्त स्वाद वाले) सोम, आपके अन्दर प्रवेश करें और आप ज्ञानसम्पन्न देव के लिए कल्याण कारक हों ॥२०,६९.५॥

(त्वां स्तोमा अवीवृधन् त्वामुक्था शतक्रतो ।
त्वां वर्धन्तु नो गिरः ॥२०,६९.६॥

हे सैकड़ों यज्ञ करने वाले इन्द्रदेव ! स्तोत्र आपकी वृद्धि करें। यह उक्थ (स्तोत्र) वचन और हमारी वाणी आपकी महत्ता बढ़ाए ॥२०,६९.६॥

अक्षितोतिः सनेदिमं वाजमिन्द्रः सहस्रिणम् ।
यस्मिन् विश्वानि पौंस्या ॥२०,६९.७॥

रक्षणीय की सर्वथा रक्षा करने वाले इन्द्रदेव बल- पराक्रम प्रदान करने वाले विविध रूपों में विद्यमान सोमरूप अन्न का सेवन करें ॥२०,६९.७॥

मा नो मर्ता अभि द्रुहन् तनूनामिन्द्र गिर्वणः ।
ईशानो यवया वधम् ॥२०,६९.८॥

हे स्तुत्य इन्द्रदेव ! हमारे शरीर को कोई भी शत्रु क्षति न पहुँचाए। हमें कोई भी हिंसित न करे, आप हमारे संरक्षक रहें ॥२०,६९.८॥

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः ।
रोचन्ते रोचना दिवि ॥२०,६९.९॥

ब्रन (बाँधकर रखने वाले) तेजस्वी (इन्द्र) स्थित रहते हुए भी चारों और घूमने वालों को जोड़कर रखते हैं। वे (इसी

प्रकार) प्रकाशमान द्युलोक को प्रकाशित किए रहते हैं ॥२०,६९.९॥

युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे ।
शोणा धृष्णू नृवाहसा ॥२०,६९.१०॥

इन (इन्द्र) के रथ के दोनों पक्षों में कामनायोग्य नेता (इन्द्र) का वहन करने वाले विचार एवं संघर्ष क्षमतायुक्त दो हरी (गतिशील-अश्व) जुड़े रहते हैं ॥२०,६९.१०॥

केतुं कृण्वन्न् अकेतवे पेशो मर्या अपेशसे ।
समुषद्भिरजायथाः ॥२०,६९.११॥

हे मनुष्यो ! तुम रात्रि में निद्राभिभूत होकर, संज्ञा शून्य निश्चेष्ट होकर, प्रातः पुनः सचेत एवं सचेष्ट होकर मानो प्रतिदिन नवजीवन प्राप्त करते हो (प्रतिदिन जन्म लेते हो) ॥२०,६९.११॥

आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे ।
दधाना नाम यज्ञियम् ॥२०,६९.१२॥

यज्ञीय नाम वाले, धारण करने में समर्थ मरुत् वास्तव में अन्न की (वृद्धि की कामना से बार-बार (मेघ आदि) गर्भ को प्राप्त होते हैं॥२०,६९.१२॥

सूक्त-७०

वीलु चिदारुजत्नुभिर्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः ।
अविन्द उस्रिया अनु ॥२०,७०.१॥

हे इन्द्रदेव ! सुदृढ़ किलेबन्दी को ध्वस्त करने में समर्थ, तेजस्वी मरुद्गणों के सहयोग से आपने गुफा में अवरुद्ध गौओं (किरणों) को खोजकर प्राप्त किया ॥२०,७०.१॥

देवयन्तो यथा मतिमच्छा विदद्वसुं गिरः ।
महामनूषत श्रुतम् ॥२०,७०.२॥

देवत्व प्राप्ति की कामना वाले ज्ञानी ऋत्विज्, यशस्वीं, ऐश्वर्यवान् वीर इन्द्र की बुद्धिपूर्वक स्तुति करते हैं ॥२०,७०.२॥

इन्द्रेण सं हि दृक्षसे संजग्मानो अबिभ्युषा ।
मन्दू समानवर्चसा ॥२०,७०.३॥

सदा प्रसन्न रहने वाले, समान तेज वाले मरुद्गण निर्भय रहने वाले इन्द्रदेव के साथ (संगठित हुए) सुशोभित होते हैं ॥२०,७०.३॥

अनवद्यैरभिद्युभिर्मखः सहस्वदर्चति ।
गणैरिन्द्रस्य काम्यैः ॥२०,७०.४॥

अत्यन्त तेजस्वी और पापरहित इन्द्रदेव की कामना करने वालों (मरुतों) से यह यज्ञ सुशोभित होता है ॥२०,७०.४॥

अतः परिज्मन्न् आ गहि दिवो वा रोचनादधि ।
समस्मिन्न् ऋञ्जते गिरः ॥२०,७०.५॥

हे सर्वत्र गमनशील मरुद्गणो ! आप अन्तरिक्ष से, आकाश से अथवा प्रकाशमान द्युलोक से यहाँ पर आएँ; क्योंकि इस यज्ञ में हमारी वाणियाँ आपकी स्तुति कर रही हैं ॥२०,७०.५॥

इतो वा सातिमीमहे दिवो वा पार्थिवादधि ।
इन्द्रं महो वा रजसः ॥२०,७०.६॥

इस पृथ्वी, अंतरिक्ष अथवा द्युलोक से- कहीं से भी प्रभूत धन प्राप्त करने के लिए, हम इन्द्रदेव की प्रार्थना करते हैं ॥२०,७०.६॥

इन्द्रमिद्गथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः ।
इन्द्रं वाणीरनूषत ॥२०,७०.७॥

सामगान के साधक नये गाये जाने योग्य बहत्साम की स्तुतियों (गाथा) से देवराज इन्द्र को प्रसन्न करते हैं। इसी तरह याज्ञिक भी मन्त्रोच्चारण के द्वारा इन्द्रदेव की ही स्तुति करते हैं ॥२०,७०.७॥

इन्द्र इद्धर्योः सचा संमिश्ल आ वचोयुजा ।
इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥२०,७०.८॥

वज्रधारी, स्वर्ण वस्त्र मण्डित इन्द्रदेव, वचन के संकेत मात्र से जुड़ जान वाले अश्वों के साथी हैं ॥२०,७०.८॥

इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद्दिवि ।
वि गोभिरिन्द्रमैरयत्॥२०,७०.९॥

(देवशक्तियों के संगठक) इन्द्रदेव ने विश्व को प्रकाशित करने के महान् उद्देश्य से सूर्यदेव को उच्चाकाश में

स्थापित किया और सूर्यात्मक इन्द्र ने ही अपनी किरणों से मेघ-पर्वत आदि को दूर हटाया ॥२०,७०.९॥

इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च ।
उग्र उग्राभिरूतिभिः ॥२०,७०.१०॥

हे वीर इन्द्रदेव ! आप सहस्रों प्रकार के लाभ वाले छोटे-बड़े संग्रामों में वीरतापूर्वक हमारी रक्षा करें ॥२०,७०.१०॥

इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे ।
युजं वृत्रेषु वज्रिणम् ॥२०,७०.११॥

हम छोटे-बड़े सभी (जीवन) संग्रामों में वृत्रासुर के संहारक, वज्रपाणि इन्द्रदेव को सहायतार्थ बुलाते हैं ॥२०,७०.११॥

स नो वृषन्न् अमुं चरुं सत्रादावन्न् अपा वृधि ।
अस्मभ्यमप्रतिष्कुतः ॥२०,७०.१२॥

सतत दानशील, सदैव अपराजित हे इन्द्रदेव ! आप हमारे लिए मेघ से जल की वृष्टि करें ॥२०,७०.१२॥

तुञ्जेतुञ्जे य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः ।
न विन्धे अस्य सुष्टुतिम् ॥२०,७०.१३॥

प्रत्येक दान के समय, वज्रधारी इन्द्रदेव के सदृश दानी की उपमा कहीं अन्यत्र नहीं मिलती। इन्द्रदेव की इससे अधिक उत्तम स्तुति करने में हम समर्थ नहीं हैं ॥२०,७०.१३॥

वृषा यूथेव वंसगः कृष्टीरियर्त्योजसा ।
ईशानो अप्रतिष्कुतः ॥२०,७०.१४॥

सबके स्वामी, हमारे विरुद्ध कार्य न करने वाले, शक्तिमान् इन्द्रदेव अपनी सामर्थ्य के अनुसार अनुदान बाँटने के लिए मनुष्यों के पास उसी प्रकार जाते हैं, जिस प्रकार वृषभ गौओं के समूह में जाता है ॥२०,७०.१४॥

य एकश्चर्षणीनां वसूनामिरज्यति ।
इन्द्रः पञ्च क्षितीनाम् ॥२०,७०.१५॥

इन्द्रदेव, पाँचों श्रेणियों के मनुष्यों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद) और सब ऐश्वर्यो- सम्पदाओं के अद्वितीय स्वामी हैं ॥२०,७०.१५॥

इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः ।
अस्माकमस्तु केवलः ॥२०,७०.१६॥

हे अंत्वजो ! हे यजमानो ! सभी लोगों में उत्तम, इन्द्रदेव को, आप सबके कल्याण के लिए हम आमंत्रित करते हैं, वे हमारे ऊपर विशेष कृपा करें ॥२०,७०.१६॥

एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम् ।
वर्षिष्ठमूतये भर ॥२०,७०.१७॥

हे इन्द्रदेव ! आप हमारी जीवन रक्षा तथा शत्रुओं को पराभूत करने के निमित्त हमें ऐश्वर्य से पूर्ण करें ॥२०,७०.१७॥

नि येन मुष्टिहत्यया नि वृत्रा रुणधामहै ।
त्वोतासो न्यर्वता ॥२०,७०.१८॥

उस ऐश्वर्य के प्रभाव और आपके द्वारा रक्षित अश्वों के सहयोग से हम मुक्के का प्रहार करके (शक्ति प्रयोग द्वारा) शत्रुओं को भगा दें ॥२०,७०.१८॥

इन्द्र त्वोतासो आ वयं वज्रं घना ददीमहि ।
जयेम सं युधि स्पृधः ॥२०,७०.१९॥

हे इन्द्रदेव ! आपके द्वारा संरक्षित होकर तीक्ष्ण वज्रों को धारण कर हम युद्ध में स्पर्धा करने वाले शत्रुओं पर विजय प्राप्त करें ॥२०,७०.१९॥

वयं शूरेभिरस्तृभिरिन्द्र त्वया युजा वयम् ।
सासह्याम पृतन्यतः ॥२०,७०.२०॥

है इन्द्रदेव ! आपके द्वारा संरक्षित कुशल शस्त्र चालक वीरों के साथ, हम अपने शत्रुओं को पराजित करें ॥२०,७०.२०॥

सूक्त-७१

महामिन्द्रः परश्च नु महित्वमस्तु वज्रिणे ।
द्यौर्न प्रथिना शवः ॥२०,७१.१॥

इन्द्रदेव श्रेष्ठ और महान् हैं । वज्रधारी इन्द्रेव का यश द्‌युलोक के समान व्यापक होकर फैले तथा इनके बल की प्रशंसा चतुर्दिक हो ॥२०,७१.१॥

समोहे वा य आशत नरस्तोकस्य सनितौ ।
विप्रासो वा धियायवः ॥२०,७१.२॥

जो संग्राम में जुटते हैं, जो पुत्र की विजय हेतु संलग्न होते हैं और बुद्धिपूर्वक ज्ञान-प्राप्ति के लिए यत्न करते हैं, वे सब इन्द्रदेव की स्तुति से इष्टफल पाते हैं ॥२०,७१.२॥

यः कुक्षिः सोमपातमः समुद्र इव पिन्वते ।
उर्वीरापो न काकुदः ॥२०,७१.३॥

अत्यधिक सोमपान करने वाले इन्द्रदेव का उदर समुद्र की तरह विशाल हो जाता है । वह (सोमरस) जीभ से प्रवाहित

होने वाले रसों की तरह सतत द्रवित होता रहता है ॥२०,७१.३॥

एवा ह्यस्य सूनृता विरप्शी गोमती मही ।
पक्वा शाखा न दाशुषे ॥२०,७१.४॥

इन्द्रदेव की मधुर और सत्यवाणी उसी प्रकार सुख देती है, जिस प्रकार गोधन के दाता और पके फल वाली शाखाओं से युक्त वृक्ष आदि। हविदाताओं) को सुख देते हैं ॥२०,७१.४॥

एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते ।
सद्यश्चित्सन्ति दाशुषे ॥२०,७१.५॥

हे इन्द्रदेव ! आपकी इष्टदात्री और संरक्षण प्रदान करने वाली विभूतियाँ हमारे जैसे सभी दानदाताओं (अपनी विभूतियाँ श्रेष्ठ कार्य में नियोजन करने वालों) को तत्काल प्राप्त होती हैं ॥२०,७१.५॥

एवा ह्यस्य काम्या स्तोम उक्थं च शंस्या ।
इन्द्राय सोमपीतये ॥२०,७१.६॥

दाता की स्तुतियाँ और उक्थ वचन अति मनोरम एवं प्रशंसनीय हैं। ये सब सोमपान करने वाले इन्द्रदेव के लिये हैं ॥२०,७१.६॥

इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः ।
महाममभिष्टिरोजसा ॥२०,७१.७॥

हे इन्द्रदेव ! सोमरूपी अन्नों से आप प्रफुल्लित होते हैं। अपनी शक्ति से दुर्दान्त शत्रुओं पर विजय श्री वरण करने की क्षमता प्राप्त करने हेतु आप(यज्ञशाला में) पधारें ॥२०,७१.७॥

एमेनं सृजता सुते मन्दिमिन्द्राय मन्दिने ।
चक्रिं विश्वानि चक्रये ॥२०,७१.८॥

(हे याजको ! प्रसन्नता देने वाले सोमरस को (निचोड़कर) तैयार करें तथा सम्पूर्ण कार्यों के सम्पादक इन्द्रदेव सामर्थ्य बढ़ाने वाले इस सोम को अर्पित करें ॥२०,७१.८॥

मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभि स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे ।
सचैषु सवनेष्वा ॥२०,७१.९॥

हे उत्तम शस्त्रों से सुसज्जित (अथवा शोभन नासिका वाले), सर्वद्रष्टा इन्द्रदेव ! हमारे इन यज्ञों में आकर प्रफुल्लता प्रदान करने वाले स्तोत्रों से आप आनन्दित हों ॥२०,७१.९॥

असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत ।
अजोषा वृषभं पतिम् ॥२०,७१.१०॥

हे इन्द्रदेव ! आपकी स्तुति के लिए हमने स्तोत्रों की रचना की है । जैसे कामनायुक्त स्त्रियाँ समर्थ पति के पास पहुँचती हैं, वैसे ही हमारी स्तुतियाँ आपके पास पहुँचें ॥२०,७१.१०॥

(सं चोदय चित्रमर्वाग्राध इन्द्र वरेण्यम् ।
असदित्ते विभु प्रभु ॥२०,७१.११॥

हे इन्द्रदेव ! आप ही विपुल ऐश्वर्यों के अधिपति हैं, अत: विविध प्रकार के ऐश्वर्यों को हमारे पास प्रेरित करें ॥२०,७१.११॥

अस्मान्त्सु तत्र चोदयेन्द्र राये रभस्वतः ।
तुविद्युम्न यशस्वतः ॥२०,७१.१२॥

हे प्रभूत ऐश्वर्य सम्पन्न इन्द्रदेव ! आप वैभव की प्राप्ति के लिए हमें श्रेष्ठ कर्मों में प्रेरित करें, जिससे हम परिश्रमी और यशस्वी हो सकें ॥२०,७१.१२॥

सं गोमदिन्द्र वाजवदस्मे पृथु श्रवो बृहत्।
विश्वायुर्धेह्यक्षितम् ॥२०,७१.१३॥

हे इन्द्रदेव ! आप हमें गौओं, धन-धान्यों से युक्त अपार वैभव एवं अक्षय पूर्णायु प्रदान करें ॥२०,७१.१३॥

अस्मे धेहि श्रवो बृहद्द्युम्नं सहस्रसातमम् ।
इन्द्र ता रथिनीरिषः ॥२०,७१.१४॥

हे इन्द्रदेव ! आप हमें प्रभूत यश एवं विपुल ऐश्वर्य तथा बहुत से रथों में भरकर अन्नादि प्रदान करें ॥२०,७१.१४॥

वसोरिन्द्रं वसुपतिं गीर्भिर्गृणन्त ऋग्मियम् ।
होम गन्तारमूतये ॥२०,७१.१५॥

धनों के अधिपति, ऐश्वर्यों के स्वामी, ऋचाओं से स्तुत्य इन्द्रदेव का हम स्तुतिपूर्वक आवाहन करते हैं । वे हमारे यज्ञ में पधार कर हमारे ऐश्वर्य की रक्षा करें ॥२०,७१.१५॥

सुतेसुते न्योकसे बृहद्बृहत एदरिः ।
इन्द्राय शूषमर्चति ॥२०,७१.१६॥

प्रत्येक सोमयज्ञ में सोम निचोड़ने के अवसर पर याजकगण इन्द्रदेव के पराक्रम की प्रशंसा करते हैं ॥२०,७१.१६॥

सूक्त-७२

विश्वेषु हि त्वा सवनेषु तुञ्जते समानमेकं वृषमण्यवः पृथक्स्वः सनिष्यवः पृथक्।
तं त्वा नावं न पर्षणिं शूषस्य धुरि धीमहि ।
इन्द्रं न यज्ञैश्चतयन्त आयव स्तोमेभिरिन्द्रमायवः ॥२०,७२.१॥

हे इन्द्रदेव ! सभी सोमयज्ञों में विभिन्न उद्देश्यों वाले याजक आपको हविष्यान्न प्रदान करते हैं। स्वर्ग की प्राप्ति के इच्छुक भी पृथक् रूप से आहुतियाँ देते हैं। मनुष्यों को सागर से पार ले जाने वाली नाव के समान ही इन्द्रदेव को जागरूक करके सेना के अग्रिम भाग में प्रतिष्ठित करते हैं । हम स्तोत्रों द्वारा आपकी स्तुति करते हैं ॥२०,७२.१॥

वि त्वा ततस्रे मिथुना अवस्यवो व्रजस्य साता गव्यस्य निःसृजः सक्षन्त इन्द्र निःसृजः ।
यद्गव्यन्ता द्वा जना स्वर्यन्ता समूहसि ।
आविष्करिक्रद्वृषणं सचाभुवं वज्रमिन्द्र सचाभुवम् ॥२०,७२.२॥

हे इन्द्रदेव ! संरक्षण के इच्छुक गृहस्थजन सपत्नीक स्वर्ग प्राप्ति एवं गौओं की प्राप्ति के लिए आपके सम्मुख प्रस्तुत होते हैं। ऐसे में है इन्द्रदेव ! गौ समूह की प्राप्ति के लिए होने वाले संग्राम में आपको स्वयं ले जाकर प्रेरित करने वाले यजमान आपके लिए यज्ञ कर्म सम्पादित करते हैं । आपने ही अपने साथ रहने वाले वज्र को प्रकट (प्रयुक्त किया है ॥२०,७२.२॥

उतो नो अस्या उषसो जुषेत ह्यर्कस्य बोधि हविषो हवीमभिः स्वर्षाता हवीमभिः ।
यदिन्द्र हन्तवे मृधो वृषा वज्रिं चिकेतसि ।
आ मे अस्य वेधसो नवीयसो मन्म श्रुधि नवीयसः ॥२०,७२.३॥

हे इन्द्रदेव ! आप हमारे प्रभातकालीन यज्ञादिकर्मों के समय उच्चारित स्तुतियों पर ध्यान दें और आहुतियों को ग्रहण करें । सुखों की प्राप्ति हेतु स्तुतियों के अभिप्राय को जानें । हे वज्रधारी इन्द्रदेव ! जिस प्रकार आप शत्रुनाशक कार्यों में सजग रहते हैं, उसी गम्भीरता से आप नवीन रचित स्तोत्रों और नये ज्ञानी स्तोताओं की प्रार्थनाओं पर ध्यान दें ॥२०,७२.३॥

सूक्त-७३

तुभ्येदिमा सवना शूर विश्वा तुभ्यं ब्रह्माणि वर्धना कृणोमि ।
त्वं नृभिर्हव्यो विश्वधासि ॥२०,७३.१॥

हे इन्द्रदेव ! आपके लिए ये अनेक सवन हैं। ये स्तोत्र भी आपका यश बढ़ाने के लिए हैं। आप ही मनुष्यों के द्वारा हवि प्रदान करने योग हैं ॥२०,७३.१॥

नू चिन् नु ते मन्यमानस्य दस्मोदश्नुवन्ति महिमानमुग्र ।
न वीर्यमिन्द्र ते न राधः ॥२०,७३.२॥

हे दर्शनीय इन्द्रदेव ! आपकी ऐसी सम्माननीय महिमा का कोई पार नहीं पा सकता है । हे शूरवीर ! आपके पराक्रम एवं धन को पार भी कोई नहीं पा सकता है ॥२०,७३.२॥

प्र वो महे महिवृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम् ।
विशः पूर्वीः प्र चरा चर्षणिप्राः ॥२०,७३.३॥

हे मनुष्यो ! महान् कार्य सम्पन्न करने वाले, प्रख्यात इन्द्रदेव के लिए सोम प्रदान करते हुए श्रेष्ठ स्तोत्रों से उनकी स्तुति

करो। हे इन्द्रदेव ! आप भी हविदाता प्रजाओं की कामना पूर्ण करते हुए उनका कल्याण करें ॥२०,७३.३॥

यदा वज्रं हिरण्यमिदथा रथं हरी यमस्य वहतो वि सूरिभिः ।
आ तिष्ठति मघवा सनश्रुत इन्द्रो वाजस्य दीर्घश्रवसस्पतिः ॥२०,७३.४॥

इन्द्रदेव जब अपने तेजस्वी स्वर्णिम वज्र को धारण कर अपने दो अश्वों से जोते गये रथ पर आरूढ़ होते हैं, तब वे विशेष रूप से सुशोभित होते हैं। इन्द्रदेव सभी के द्वारा जाने गये उत्तम अन्नों और ऐश्वर्य- सम्पदा के अधीश्वर हैं ॥२०,७३.४॥

सो चिन् नु वृष्टिर्यूथ्या स्वा सचामिन्द्रः श्मश्रूणि हरिताभि प्रुष्णुते ।
अव वेति सुक्षयं सुते मधूदिद्धूणोति वातो यथा वनम् ॥२०,७३.५॥

जिस प्रकार वर्षा के जल से पशु समूह भीगता है, उसी प्रकार इन्द्रदेव हरितवर्ण सोमरस से अपनी दाढ़ी मूंछ को भिगोते हैं । तत्पश्चात् वे उत्तम यज्ञस्थल में जाकर प्रस्तुत मधुर सोमरस का पान करते हैं, तब जैसे वायु वन- वृक्षों

को कम्पायमान करती है, वैसे ही वे रिपुओं को संत्रस्त करते हैं ॥२०,७३.५॥

यो वाचा विवाचो मृध्रवाचः पुरू सहस्राशिवा जघान ।
तत्तदिदस्य पौंस्यं गृणीमसि पितेव यस्तविषीं वावृधे शवः ॥२०,७३.६॥

अनेक प्रकार की उत्तेजक वाणी का प्रयोग करने वाले शत्रुओं को सामर्थ्यशाली इन्द्रदेव ने अपनी ललकार से शान्त किया और क्रोध से हजारों शत्रुओं का समूल नाश किया। पिता जिस प्रकार अन्नादि से पुत्रों का पोषण करता है, उसी प्रकार इन्द्रदेव मनुष्यों का पोषण करते हैं। हम उन बलवान् इन्द्रदेव की महिमा का गुणगान करते हैं ॥२०,७३.६॥

सूक्त-७४

यच्चिद्धि सत्य सोमपा अनाशस्ता इव स्मसि ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥२०,७४.१॥

हे सत्यस्वरूप सोमपायी इन्द्रदेव ! यद्यपि हम प्रशंसा पाने के पात्र तो नहीं हैं, तथापि आप हमें सहस्रों श्रेष्ठ गौएँ और घोड़े प्रदान करके सम्पन्न बनाएँ ॥२०,७४.१॥

शिप्रिन् वाजानां पते शचीवस्तव दंसना ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥२०,७४.२॥

है इन्द्रदेव ! आप शक्तिशाली, शिरस्त्राण धारण करने वाले, बलों के अधीश्वर और ऐश्वर्यशाली हैं। आपका सदैव हम पर अनुग्रह बना रहे । हमें सहस्रों श्रेष्ठ गौएँ और घोड़े प्रदान करके सम्पन्न बनाएँ ॥२०,७४.२॥

नि ष्वापया मिथूदृशा सस्तामबुध्यमाने ।

आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥२०,७४.३॥

हे इन्द्रदेव ! दोनों दुर्गतियाँ (विपत्ति और दरिद्रता) परस्पर एक दूसरे को देखती हुई सो जाएँ । वे कभी न जागें, वे अचेत पड़ी रहें । आप हमें सहस्रों श्रेष्ठ गौएँ और अश्व प्रदान करके सम्पन्न बनाएँ ॥२०,७४.३॥

ससन्तु त्या अरातयो बोधन्तु शूर रातयः ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥२०,७४.४॥

हे इन्द्रदेव ! हमारे शत्रु सोते रहें और हमारे वीर दानी मित्र जागते रहें । आप हमें सहस्रों श्रेष्ठ गौएँ और अश्व प्रदान करके सम्पन्न बनाएँ ॥२०,७४.४॥

समिन्द्र गर्दभं मृण नुवन्तं पपयामुया ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥२०,७४.५॥

हे इन्द्रदेव ! कपटपूर्ण वाणी बोलने वाले शत्रुरूप गधे को मार डालें । आप हमें सहस्रों पुष्ट गौएँ और अश्व देकर सम्पन्न बनाएँ ॥२०,७४.५॥

पताति कुण्डृणाच्या दूरं वातो वनादधि ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥२०,७४.६॥

हे इन्द्रदेव ! दुष्ट शत्रु विध्वंसकारी बवण्डर की भाँति वनों से दूर जाकर गिरें । आप हमें सहस्रों पुष्ट गौएँ और अश्व देकर सम्पन्न बनाएँ ॥२०,७४.६॥

सर्वं परिक्रोशं जहि जम्भया कृकदाश्वम् ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥२०,७४.७॥

हे इन्द्रदेव ! हम पर आक्रोश करने वाले सब शत्रुओं को विनष्ट करें, हिंसकों का नाश करें। आप हमें सहस्रों पुष्ट गौएँ और अश्व देकर सम्पन्न बनाएँ ॥२०,७४.७॥

सूक्त-७५

वि त्वा ततस्रे मिथुना अवस्यवो व्रजस्य साता गव्यस्य निःसृजः सक्षन्त इन्द्र निःसृजः ।
यद्गव्यन्त द्वा जना स्वर्यन्ता समूहसि ।
आविष्करिक्रद्वृषणं सचाभुवं वज्रमिन्द्र सचाभुवम् ॥२०,७५.१॥

हे इन्द्रदेव ! संरक्षण के इच्छुक गृहस्थजन सपत्नीक स्वर्ग प्राप्ति एवं गौओं की प्राप्ति के लिए आपके सम्मुख प्रस्तुत होते हैं। ऐसे में है इन्द्रदेव ! गौ समूह की प्राप्ति के लिए होने वाले संग्राम में आपको स्वयं ले जाकर प्रेरित करने वाले यजमान आपके लिए यज्ञ कर्म सम्पादित करते हैं। आपने ही अपने साथ रहने वाले वज्र को प्रकट (प्रयुक्त किया है ॥२०,७५.१॥

विदुष्टे अस्य वीर्यस्य पूरवः पुरो यदिन्द्र शारदीरवातिरः सासहानो अवातिरः ।
शासस्तमिन्द्र मर्त्यमयजुं शवसस्पते ।

महीममुष्णाः पृथिवीमिमा अपो मन्दसान इमा अपः ॥२०,७५.२॥

हे इन्द्रदेव ! जब आपके द्वारा शत्रुओं की सामर्थ्य को पददलित तथा उनकी शरत्कालीन आवासीय नगरियों को विध्वंस किया गया, तब प्रजाजनों में आपकी शक्ति विख्यात हुई । हे शक्ति के प्रतिनिधि इन्द्रदेव ! आपने मनुष्यों के कल्याण के लिए यज्ञ विध्वंसक राक्षसों को दण्डित करके पृथ्वी एवं जल पर उनके प्रभुत्व को समाप्त किया ॥२०,७५.२॥

आदित्ते अस्य वीर्यस्य चर्किरन् मदेषु वृषन्न् उशिजो यदाविथ सखीयतो यदाविथ ।
चकर्थ कारमेभ्यः पृतनासु प्रवन्तवे ।
ते अन्यामन्यां नद्यं सनिष्णत श्रवस्यन्तः सनिष्णत ॥२०,७५.३॥

हे शक्तिशाली इन्द्रदेव ! आनन्दित होते हुए आपने यजमानों तथा मित्र भाव रखने वालों का संरक्षण किया। उनके द्वारा आपकी शक्ति को चारों ओर विस्तारित किया गया । आपने ही धनादि वितरण से संग्रामों में वीरों को प्रोत्साहित किया। आपने एक-दूसरे के सहयोग से धन

लाभ देते हुए अन्नादि के इच्छुकों को अन्न उपलब्ध कराया ॥२०,७५.३॥

सूक्त-७६

वने न वा यो न्यधायि चाक्रं छुचिर्वां स्तोमो भुरणावजीगः ।
यस्येदिन्द्रः पुरुदिनेषु होता नृणां नर्वो नृतमः क्षपावान्
॥२०,७६.१॥

जिस प्रकार पक्षी फलर की इच्छा से अपने शिशु को वृक्ष के नीड़ में सावधानीपूर्वक रखते हैं, उसी प्रकार ये अति पवित्र स्तोत्र आपके निमित्त समर्पित हैं ।बहुत दिनों तक हम इन्हीं स्तोत्रों से इन्द्रदेव का आवाहन करते रहे, वे इन्द्रदेव नेतृत्व प्रदान करने वालों में सर्वश्रेष्ठ, पराक्रमशाली, नायक तथा रात्रिकाल में भी सोमपान करने वाले हैं ॥२०,७६.१॥

प्र ते अस्या उषसः प्रापरस्या नृतौ स्याम नृतमस्य नृणाम् ।
अनु त्रिशोकः शतमावहन् नृन् कुत्सेन रथो यो असत्ससवान्
॥२०,७६.२॥

हे मनुष्यों को नेतृत्व प्रदान करने वाले ! इन उषाओं और अन्य उषाकालों में आपकी अर्चना से हमारी भी श्रेष्ठता जाग्रत् हो । हे इन्द्रदेव ! त्रिशोक नामक ऋषि ने आपकी

स्तुति- प्रार्थना द्वारा आपसे सौ मनुष्यों का सहयोग प्राप्त किया तथा कुत्स ऋषि जिस रथ पर आरूढ़ होते हैं, वह भी आपकी सहायता का परिणाम है ॥२०,७६.२॥

कस्ते मद इन्द्र रन्त्यो भूद्दुरो गिरो अभ्युग्रो वि धाव ।
कद्वाहो अर्वागुप मा मनीषा आ त्वा शक्यामुपमं राधो अन्नैः ॥२०,७६.३॥

हे इन्द्रदेव ! हमारी स्तोत्र वाणियों को सुनकर यज्ञस्थल के द्वार की ओर आप शीघ्रता से आएँ । किस प्रकार का हर्षदायक सोम आपको अति प्रसन्नताप्रद तथा रुचिकर हैं? हमें कब श्रेष्ठ वाहन मिलेंगे? हमारे मनोरथ कब पूर्ण होंगे? हम (आपके स्तोता) अन्न-धन की प्राप्ति के लिए कौन सी साधना से आपको प्रसन्न कर सकेंगे? ॥२०,७६.३॥

कदु द्युम्नमिन्द्र त्वावतो नॄन् कया धिया करसे कन् न आगन् ।
मित्रो न सत्य उरुगाय भृत्या अन्ने समस्य यदसन् मनीषाः ॥२०,७६.४॥

हे इन्द्रदेव ! आप किस समय हमारे ध्यान में प्रकट होंगे और किस समय हमें साधना की सिद्धि मिलेगी ? किस प्रकार के स्तोत्रों और सत्कर्मों से आप हम मनुष्यों को

अपने समान ही सामर्थ्यवान् बनायेंगे? हे यशस्वी इन्द्रदेव ! आप तो सभी के सच्चे सखारूप हितैषी हैं, यह बात इससे सिद्ध होती है कि सभी साधकों का अन्न से पालन-पोषण करने की आपकी अभिलाषा रहती है॥२०,७६.४॥

प्रेरय सूरो अर्थं न पारं ये अस्य कामं जनिधा इव ग्मन् ।
गिरश्च ये ते तुविजात पूर्वीर्नर इन्द्र प्रतिशिक्षन्त्यन्नैः ॥२०,७६.५॥

तेजस्वी आप: देवताओं के लिए भली प्रकार प्रवाहित हो । हे ऋत्विजो ! मित्र और वरुणदेव के लिए श्रेष्ठ अन्नरूप सोम संस्कारित करो तथा महावेगशाली इन्द्रदेव के लिए श्रेल रीति से स्तुतियों का उच्चारण करो ॥२०,७६.५॥

मात्रे नु ते सुमिते इन्द्र पूर्वी द्यौर्मज्मना पृथिवी काव्येन ।
वराय ते घृतवन्तः सुतासः स्वाद्मन् भवन्तु पीतये मधूनि ॥२०,७६.६॥

हे इन्द्रदेव ! आपकी विशेष कृपा से प्राचीन समय में विनिर्मित ये जो द्युलोक और पृथ्वी लोक हैं, वहीं विविध लोकों के निर्माता हैं ।आपके लिए घृतयुक्त सोम प्रस्तुत किया जा रहा है, उस मधुर रस पीकर आप हर्षित हों ॥२०,७६.६॥

आ मध्वो अस्मा असिचन्न् अमत्रमिन्द्राय पूर्णं स हि सत्यराधाः ।
स वावृधे वरिमन्न् आ पृथिव्या अभि क्रत्वा नर्यः पौंस्यैश्च ॥२०,७६.७॥

वे इन्द्रदेव निश्चित ही ऐश्वर्यदाता हैं, अतएव ऐसे देव के निमित्त मधुपर्क से परिपूर्ण सोम- पात्र को सादर समर्पित करें। वे मनुष्यों के हितकारी हैं तथा पृथ्वी के व्यापक क्षेत्र में अपने पराक्रम से, सभी प्रकार से उन्नतशील हैं ॥२०,७६.७॥

व्यानळ् इन्द्रः पृतनाः स्वोजा आस्मै यतन्ते सख्याय पूर्वीः ।
आ स्मा रथं न पृतनासु तिष्ठ यं भद्रया सुमत्या चोदयासे ॥२०,७६.८॥

अतिशक्तिशाली इन्द्रदेव ने शत्रुसेना को घेर लिया, श्रेष्ठ शत्रु- सेनाएँ भी इन्द्रदेव से मैत्रीरूप सन्धि करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहती हैं । हे इन्द्रदेव ! जिस प्रकार संसार के हित के लिए सत्प्रेरणा से आप समर- क्षेत्र में रथारूढ़ होकर जाते हैं, उसी प्रकार इस समय भी रथ पर आरूढ़ होकर प्रस्थान करें ॥२०,७६.८॥

सूक्त-७७

आ सत्यो यातु मघवामृजीषी द्रवन्त्वस्य हरय उप नः ।
तस्मा इदन्धः सुषुमा सुदक्षमिहाभिपित्वं करते गृणानः ॥२०,७७.१॥

व्यवहार कुशल, सत्यनिष्ठ तथा धनवान् इन्द्रदेव हमारे समीप पधारें । दौड़ते हुए उनके अश्व (उन्हें साथ लेकर) हमारे समीप शीघ्र ही पहुँचे । उन इन्द्रदेव के निमित्त हम याजक अन्नरूप सोमरस अभिषुत करते हैं । तृप्त होकर वे हमारी कामनाओं को पूर्ण करें ॥२०,७७.१॥

अव स्य शूराध्वनो नान्तेऽस्मिन् नो अद्य सवने मन्दध्यै ।
शंसात्युक्थमुशनेव वेधाश्चिकितुषे असुर्याय मन्म ॥२०,७७.२॥

हे शूरवीर इन्द्रदेव ! जिस प्रकार लक्ष्य पर पहुँचे हुए अश्वों को मुक्त करते हैं, उसी प्रकार आप हमें मुक्त करें; ताकि हम इस यज्ञ में आपको हर्षित करने के लिए भली-भाँति परिचर्या कर सकें । हे इन्द्रदेव ! आप सर्वज्ञाता तथा असुरों

का संहार करने वाले हैं। याजकगण उशना' ऋषि के सदृश उत्तम स्तोत्रों को उच्चारित करते हैं ॥२०,७७.२॥

कविर्न निण्यं विदथानि साधन् वृषा यत्सेकं विपिपानो अर्चात्।
दिव इत्था जीजनत्सप्त कारून् अह्ना चिच्चक्रुर्वयुना गृणन्तः ॥२०,७७.३॥

जब यज्ञों को सम्पादित करते हुए तथा सोमपान ग्रहण करते हुए वे इन्द्रदेव पूजे जाते हैं, तब वे द्युलोक से सप्त रश्मियों को उत्पन्न करते हैं। जैसे विद्वान् गूढ़ अर्थों को जानते हैं, उसी प्रकार कामना की वर्षा करने वाले इन्द्रदेव समस्त कार्यों को जानते हैं। उनकी रश्मियों की सहायता से याजकगण अपने कर्म सम्पन्न करते हैं ॥२०,७७.३॥

स्वर्यद्वेदि सुदृशीकमर्कैर्महि ज्योती रुरुचुर्यद्ध वस्तोः ।
अन्धा तमांसि दुधिता विचक्षे नृभ्यश्चकार नृतमो अभिष्टौ ॥२०,७७.४॥

जब विस्तृत तथा तेजोयुक्त द्युलोक प्रकाशित होकर दर्शनीय बनता है, तब सभी के आवास भी आलोकित होते हैं । जगत् नायक सूर्यदेव ने उदित होकर मनुष्यों के देखने के लिए सघन तमिस्रा को विनष्ट कर दिया है ॥२०,७७.४॥

ववक्ष इन्द्रो अमितमृजिष्युभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा ।
अतश्चिदस्य महिमा वि रेच्यभि यो विश्वा भुवना बभूव ॥२०,७७.५॥

अपरिमित महिमा को धारण करने वाले इन्द्रदेव ने समस्त भुवनों पर अपना अधिकार कर लिया है। सोमरस पान करने वाले वे इन्द्रदेव अपनी महिमा के द्वारा द्यावा- पृथिवी दोनों को पूर्ण करते हैं। इसीलिए इनकी महानताकी कोई तुलना नहीं की जा सकती ॥२०,७७.५॥

विश्वानि शक्रो नर्याणि विद्वान् अपो रिरेच सखिभिर्निकामैः ।
अश्मानं चिद्ये बिभिदुर्वचोभिर्व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वव्रुः ॥२०,७७.६॥

वे इद्रदेव मनुष्यों के समस्त कल्याणकारी कार्यों के ज्ञाता हैं । कामना करने वाले सखाभाव युक्त मरुतों के निमित्त उन्होंने जल वृष्टि की। जिन मरुतों ने अपनी ध्वनि के द्वारा मेघों को भी विदीर्ण कर दिया, उन आकांक्षा करने वाले मरुतों ने गौओं (किरणों) के भण्डार खोल दिये ॥२०,७७.६॥

अपो वृत्रं वव्रिवांसं पराहन् प्रावत्ते वज्रं पृथिवी सचेताः ।

प्राणांसि समुद्रियाण्यैनोः पतिर्भवं छवसा शूर धृष्णो ॥२०,७७.७॥

हे इन्द्रदेव ! सुरक्षा करने वाले आपके वज्र ने जब पानी को अवरुद्ध करने वाले मेघ को विनष्ट किया, तब पानी बरसने से धरती चैतन्य हुई । हे रिपुओं के संहारक, पराक्रमी इन्द्रदेव ! आपने अपनी शक्ति से लोकपति होकर आकाश में स्थित जल को प्रेरित किया ॥२०,७७.७॥

अपो यदद्रिं पुरुहूत दर्दराविर्भुवत्सरमा पूर्व्यं ते ।
स नो नेता वाजमा दर्षि भूरिं गोत्रा रुजन्न् अङ्गिरोभिर्गृणानः ॥२०,७७.८॥

बहुतों के द्वारा आहूत किये जाने वाले हे इन्द्रदेव ! जब 'सरमा'ने आपके निमित्त गौओं (प्रकाश किरणों) को प्रकट किया, तब आपने जल से परिपूर्ण मेघों को विदीर्ण किया। अंगिरा-वंशियों से स्तुत्य होकर आप हमें प्रचुर अन्न प्रदान करें ॥२०,७७.८॥

सूक्त-७८

तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने ।
शं यद्गवे न शाकिने ॥२०,७८.१॥

हे स्तुतिरत स्तोताओ! आप शत्रुओं को जीतने वाले इन्द्रदेव का यशोगान करें। जैसे गाय उत्तम घास से प्रसन्न होती है, वैसे ही तैयार सोम सहित स्तुति से इन्द्रदेव सुख पाते हैं ॥२०,७८.१॥

न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमतः ।
यत्सीमुप श्रवद्गिरः ॥२०,७८.२॥

सभी के आश्रयदाता वे इन्द्रदेव हमारी स्तुतियों को सुनने के बाद हमें धन-धान्य के रूप में अपार वैभव देने से नहीं रुकते हैं ॥२०,७८.२॥

कुवित्सस्य प्र हि व्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत्।
शचीभिरप नो वरत्॥२०,७८.३॥

हे इन्द्रदेव ! हिंसा करने वालों, गौशाला से गोएँ चुराने और उन्हें छिपा देने वालों को आप शीघ्रता से ढूँढ़कर दण्डित करें और गौओं को मुक्त कराएँ ॥२०,७८.३॥

सूक्त-७९

इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ॥२०,७९.१॥

हे इन्द्रदेव ! हमें उत्तम कर्मों (यज्ञों) का फल प्राप्त हो । जैसे पिता पुत्रों को धन आदि प्रदान करके उनका पोषण करता है, वैसे ही आप हमें पोषित करें । बहुतों द्वारा सहायता के लिए पुकारे गये हे इन्द्रदेव ! यज्ञ में आप हमें दिव्य तेज प्रदान करें ॥२०,७९.१॥

मा नो अज्ञाता वृजना दुराध्यो माशिवासो अव क्रमुः ।
त्वया वयं प्रवतः शश्वतीरपोऽति शूर तरामसि ॥२०,७९.२॥

हे इन्द्रदेव ! अज्ञात, पापी, दुष्ट, कुटिल, अमंगलकारी लोग हम पर आक्रमण न करें । हे श्रेष्ठ वीर आपके संरक्षण में हम विघ्नों- अवरोधों के प्रवाहों से पार हों ॥२०,७९.२॥

सूक्त-८०

इन्द्र ज्येष्ठं न आ भरमोजिष्ठं पपुरि श्रवः ।
येनेमे चित्र वज्रहस्त रोदसी ओभे सुशिप्र प्राः ॥२०,८०.१॥

हे वज्रपाणि देवेन्द्र ! हमें ओज एवं बल प्रदान करने वाले अन्न (पोषक तत्त्व) प्रदान करें । जो पोषक अन्न द्युलोक एवं पृथ्वी दोनों को पोषण देते हैं, उन्हें हम अपने पास रखने की कामना करते हैं ॥२०,८०.१॥

त्वामुग्रमवसे चर्षणीसहं राजन् देवेषु हूमहे ।
विश्वा सु नो विथुरा पिब्दना वसोऽमित्रान् सुषहान् कृधि ॥२०,८०.२॥

हे इन्द्रदेव ! हम अपनी रक्षा के लिए आपका आवाहन करते हैं । आप महाबलशाली और शत्रुओं के विजेता हैं । आप सभी असुरों से हमारी रक्षा करें । संग्राम में हम विजयी हो सकें, आप ऐसी कृपा करें ॥२०,८०.२॥

सूक्त-८१

यद्द्याव इन्द्र ते शतं शतं भूमिरुत स्युः ।
न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी ॥२०,८१.१॥

हे इन्द्रदेव ! सैकड़ों देवलोक, सैकड़ों भूमियाँ तथा हजारों सूर्य भी यदि उत्पन्न हो जाएँ, तो भी आपकी समानता नहीं कर सकते । द्यावा- पृथिवी में (कोई भी) आपकी बराबरी करने वाला नहीं हैं ॥२०,८१.१॥

आ पप्राथ महिना कृष्ण्या वृषन् विश्वा शविष्ठ शवसा ।
अस्मामव मघवन् गोमति व्रजे वज्रिं चित्राभिरूतिभिः ॥२०,८१.२॥

हे बलशाली इन्द्रदेव ! आप अपनी सामर्थ्य से सभी की इच्छा पूरी करते हैं। हे बलवान्, धनवान् वज्रधारी इन्द्रदेव ! आप हमें गौयुक्त (पोषण साधनों सहित) संरक्षण प्रदान करें ॥२०,८१.२॥

सूक्त-८२

यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय ।
स्तोतारमिद्दिधिषेय रदावसो न पापत्वाय रासीय ॥२०,८२.१॥

हे सम्पत्तिशाली इन्द्रदेव ! हम आपके समान सम्पदाओं के अधिपति होने की कामना करते हैं । स्तोताओं को धन प्रदान करने की हमारी अभिलाषा हैं, परन्तु पापियों को नहीं ॥२०,८२.१॥

शिक्षेयमिन् महयते दिवेदिवे राय आ कुहचिद्विदे ।
नहि त्वदन्यन् मघवन् न आप्यं वस्यो अस्ति पिता चन ॥२०,८२.२॥

कहीं भी रहकर हम आपके यजन के लिए धन निकालते हैं। हे इन्द्रदेव ! मेरा तो आपके सिवाय और कोई भाई नहीं, कोई पिता तुल्य रक्षक भी नहीं है ॥२०,८२.२॥

सूक्त-८३

इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरूथं स्वस्तिमत्।
छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावया दिद्युमेभ्यः ॥२०,८३.१॥

हे इन्द्रदेव ! ऐश्वर्य-सम्पन्नों जैसा त्रिधातुयुक्त तीनों ऋतुओं में हितकारी आश्रय (घर या शरीर) हमें भी प्रदान करें। इससे चमक (भ्रामक चकाचौंध) दूर करें ॥२०,८३.१॥

ये गव्यता मनसा शत्रुमादभुरभिप्रघ्नन्ति धृष्णुया ।
अध स्मा नो मघवन्न् इन्द्र गिर्वणस्तनूपा अन्तमो भव ॥२०,८३.२॥

हे इन्द्रदेव ! जो शत्रु गौओं को छीनने के लिए आते हैं, उन पर आप घर्षण शक्ति से प्रहार करते हैं । हे धनवान् प्रशंसनीय इन्द्रदेव ! आप समीपवर्ती शत्रुओं से हमारी रक्षा करें । हमारे शरीर की रक्षा करें ॥२०,८३.२॥

सूक्त-८४

इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः ।
अण्वीभिस्तना पूतासः ॥२०,८४.१॥

हे अद्‌भुत दीप्तिमान् इन्द्रदेव ! अँगुलियों द्वारा स्त्रावित, श्रेष्ठ पवित्रतायुक्त यह सोमरस आपके निमित्त हैं। आप आएँ और सोम रस का पान करें ॥२०,८४.१॥

इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजुतः सुतावतः ।
उप ब्रह्माणि वाघतः ॥२०,८४.२॥

हे इन्द्रदेव ! श्रेष्ठ बुद्धि द्वारा जानने योग्य आप, सोमरस प्रस्तुत करते हुए ऋत्विजों के द्वारा बुलाए गए हैं। उनकी स्तुति के आधार पर आप यज्ञशाला में पधारें ॥२०,८४.२॥

इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः ।
सुते दधिष्व नश्चनः ॥२०,८४.३॥

हे अश्वयुक्त इन्द्रदेव ! आप स्तवनों के श्रवणार्थ तथा इस यज्ञ में हमारे द्वारा प्रदत्त हवियों का सेवन करने के लिए यज्ञशाला में शीघ्र ही पधारें ॥२०,८४.३॥

सूक्त-८५

मा चिदन्यद्वि शंसत सखायो मा रिषण्यत ।
इन्द्रमित्स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत ॥२०,८५.१॥

हे मित्रो ! इन्द्रदेव को छोड़कर अन्य किसी देव की स्तुति उपादेय नहीं हैं। उसमें शक्ति नष्ट न करें । सोम शोधित करके, एकत्र होकर, संयुक्त रूप से बलशाली इन्द्रदेव की ही बार-बार प्रार्थना करें ॥२०,८५.१॥

अवक्रक्षिणं वृषभं यथाजुरं गां न चर्षणीसहम् ।
विद्वेषणं संवननोभयंकरं मंहिष्ठमुभयाविनम् ॥२०,८५.२॥

(हे स्तोतागण ! आप सशक्त वृषभ (साँड़) के सदृश संघर्षशील जरारहित, शत्रुओं का विरोध और उनका संहार करने वाले, महान् दैविक और भौतिक ऐश्वर्यों के दाता इन्द्रदेव का ही स्तवन करें ॥२०,८५.२॥

यच्चिद्धि त्वा जना इमे नाना हवन्त ऊतये ।

अस्माकं ब्रह्मेदमिन्द्र भूतु तेऽहा विश्वा च वर्धनम् ॥२०,८५.३॥

हे इन्द्रदेव ! अपनी रक्षा के निमित्त यद्यपि सभी मनुष्य आपका आवाहन करते हैं, फिर भी हमारी स्तुतियाँ आपके गौरव को सतत बढ़ाती रहें ॥२०,८५.३॥

वि तर्तूर्यन्ते मघवन् विपश्चितोऽर्यो विपो जनानाम् ।
उप क्रमस्व पुरुरूपमा भर वाजं नेदिष्ठमूतये ॥२०,८५.४॥

ऐश्वर्यवान्, ज्ञानी, श्रेष्ठ तथा मनुष्यों के पालक हे इन्द्रदेव ! आपकी अनुकम्पा से स्तोतागण समस्त विपत्तियों से बचे रहते हैं। आप हमारे निकट पधारें और पोषण के निमित्त विविध प्रकार के बल प्रदान करें ॥२०,८५.४॥

सूक्त-८६

ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा युनज्मि हरी सखाया सधमाद आशू ।
स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन् प्रजानन् विद्वामुप याहि सोमम्
॥२०,८६.१॥

हे इन्द्रदेव ! मंत्रों से नियोजित होने वाले, युद्धों में कीर्ति सम्पन्न, मित्र- भाव सम्पन्न हरि नामक दोनों अश्वों को हम मन्त्रों के लिए योजित करते हैं। हे इन्द्रदेव ! सुदृढ़ और सुखकारी रथ में अधिष्ठित होकर आप सोमयाग के समीप आएँ। आप सब यज्ञों को जानने वाले विद्वान् हैं ॥२०,८६.१॥

सूक्त-८७

अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धमंशुं जुहोतन वृषभाय क्षितीनाम् ।
गौराद्वेदीयामवपानमिन्द्रो विश्वाहेद्याति सुतसोममिछन्
॥२०,८७.१॥

हे अध्वर्युगण ! मानवों में श्रेष्ठ इन्द्रदेव के लिए निचोड़े हुए रक्ताभ सोमरस का हवन करें । पीने योग्य सोम को दूर से जानकर वे गौर मृग सदृश तीव्रगति से सोमयाग करने वाले यजमान के पास शीघ्र जाते हैं ॥२०,८७.१॥

यद्दधिषे प्रदिवि चार्वन्नं दिवेदिवे पीतिमिदस्य वक्षि ।
उत हृदोत मनसा जुषाण उशन्न् इन्द्र प्रस्थितान् पाहि सोमान् ॥२०,८७.२॥

हे इन्द्रदेव ! प्राचीनकाल में आप जिस सुन्दर अन्न (सोम) को उदर में धारण करते थे, वहीं सोम आप प्रतिदिन पीने की इच्छा करें । हृदय और मन से हमारे कल्याण की इच्छा करते हुए सोमरसों का पान करें ॥२०,८७.२॥

जज्ञानः सोमं सहसे पपाथ प्र ते माता महिमानमुवाच ।

एन्द्र पप्राथोर्वन्तरिक्षं युधा देवेभ्यो वरिवश्चकर्थ ॥२०,८७.३॥

हे इन्द्रदेव ! जन्म के समय से ही आपने शक्ति प्राप्ति के लिए सोमपान किया था। आपकी महिमा का वर्णन आपकी माता अदिति ने किया। आपने अपने वर्चस् से विस्तृत अंतरिक्ष को पूर्ण किया और युद्ध के माध्यम से देवों या स्तोताओं के लिए धन एकत्र किया ॥२०,८७.३॥

यद्योधया महतो मन्यमानान् साक्षाम तान् बाहुभिः शाशदानान् ।
यद्वा नृभिर्वृत इन्द्राभियुध्यास्तं त्वयाजिं सौश्रवसं जयेम ॥२०,८७.४॥

हे इन्द्रदेव ! अहंकार पूर्ण, अपने को बड़ा मानने वाले शत्रुओं से जब हमारा युद्ध हो, तब हम अपनी बाहुओं से ही हिंसक शत्रुओं का दमन कर सकें। आप यदि स्वयं अन्न अथवा यश के लिए युद्ध करें, तब हम आपके साथ रहकर उस युद्ध को जीतें ॥२०,८७.४॥

प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा कृतानि प्र नूतना मघवा या चकार ।
यदेददेवीरसहिष्ट माया अथाभवत्केवलः सोमो अस्य ॥२०,८७.५॥

प्राचीन और अर्वाचीन काल में इन्द्रदेव द्वारा किये हुए पराक्रमों का हमे वर्णन करते हैं । इन्द्रदेव ने जब से कुटिल- कपटीं असुरों को परास्त किया, तब से सोम केवल इन्द्रदेव के लिए ही (सुरक्षित) है ॥२०,८७.५॥

तवेदं विश्वमभितः पशव्यं यत्पश्यसि चक्षसा सूर्यस्य ।
गवामसि गोपतिरेक इन्द्र भक्षीमहि ते प्रयतस्य वस्वः ॥२०,८७.६॥

हे इन्द्रदेव ! आप सूर्य के तेज (प्रकाश) से जिसे देखते हैं, वह पशुओं (प्राणियों) से युक्त विश्व आपका ही हैं । सभी गौओं (किरणों इन्द्रियों) के स्वामी आप ही हैं। आपके द्वारा दिये धन का हम भोग करते हैं ॥२०,८७.६॥

बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य ।
धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥२०,८७.७॥

है इन्द्र और बृहस्पतिदेव ! आप दोनों द्युलोक और पृथ्वी पर उत्पन्न धन के स्वामी हैं। आप दोनों स्तुति करने वाले स्तोता को धन प्रदान करें तथा कल्याणकारी साधनों से सदैव हमारी रक्षा करें ॥२०,८७.७॥

सूक्त-८८

यस्तस्तम्भ सहसा वि ज्मो अन्तान् बृहस्पतिस्त्रिषधस्थो रवेण ।
तं प्रत्नास ऋषयो दीध्यानाः पुरो विप्रा दधिरे मन्द्रजिह्वम् ॥२०,८८.१॥

तीनों लोकों में निवास करने वाले जिन बृहस्पतिदेव ने धरती की दशों दिशाओं को स्तम्भित किया, मीठी बोली बोलने वाले उन देव को पुरातन ऋषियों तथा तेजस्वी विद्वानों ने पुरोभाग में स्थापित किया ॥२०,८८.१॥

धुनेतयः सुप्रकेतं मदन्तो बृहस्पते अभि ये नस्ततस्रे ।
पृषन्तं सृप्रमदब्धमूर्वं बृहस्पते रक्षतादस्य योनिम् ॥२०,८८.२॥

हे बृहस्पतिदेव ! जिनकी गति रिपुओं को प्रकम्पित करने वाली हैं, जो आपको आनन्दित करते हैं तथा आपकी प्रार्थना करते हैं; उनके लिए आप फल प्रदान करने वाले, वृद्धि करने वाले तथा हिंसा न करने वाले होते हैं। आप उनके विस्तृत यज्ञ को सुरक्षा प्रदान करें ॥२०,८८.२॥

बृहस्पते या परमा परावदत आ ते ऋतस्पृशो नि षेदुः ।
तुभ्यं खाता अवता अद्रिदुग्धा मध्व श्चोतन्त्यभितो विरप्शम्
॥२०,८८.३॥

हे बृहस्पतिदेव ! दूरवर्ती प्रदेश में जो अत्यधिक श्रेष्ठ स्थान हैं, वहाँ से आपके अश्व यज्ञ में पधारते हैं । जिस प्रकार गहरे जलकुण्ड से जल स्रवित होता है, उसी प्रकार आपके चारों ओर प्रार्थनाओं के साथ पत्थरों द्वारा निचोड़ा गया मधुर सोम रस प्रवाहित होता है ॥२०,८८.३॥

बृहस्पतिः प्रथमं जायमानो महो ज्योतिषः परमे व्योमन् ।
सप्तास्यस्तुविजातो रवेण वि सप्तरश्मिरधमत्तमांसि
॥२०,८८.४॥

सप्त छन्दोमय मुख वाले, बहुत प्रकार से पैदा होने वाले तथा सप्त रश्मियों वाले बृहस्पतिदेव, महान् सूर्यदेव के समान परम आकाश में सर्वप्रथम उत्पन्न होते हैं। वे अपनी ज्योति के द्वारा तमिस्रा को नष्ट करते हैं ॥२०,८८.४॥

स सुष्टुभा स ऋक्वता गणेन वलं रुरोज फलिगं रवेण ।
बृहस्पतिरुस्रिया हव्यसूदः
कनिक्रदद्वावशतीरुदाजत्॥२०,८८.५॥

बृहस्पतिदेव ने अपनी तेजस्विता तथा प्रार्थना करने वाले ऋचा समूहों के साथ ध्वनि करते हुए (मेघ) वल नामक राक्षस का वध किया। उन्होंने हवि प्रेरित करने वाली तथा रंभाने वाली गौओं (वाणियों) को ध्वनि करते हुए बाहर निकाला ॥२०,८८.५॥

एवा पित्रे विश्वदेवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः ।
बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥२०,८८.६॥

इस प्रकार सबके पालनकर्ता समस्त देवों के स्वामी तथा बलशाली बृहस्पतिदेव की हम लोग यज्ञों, आहुतियों तथा प्रार्थनाओं के द्वारा सेवा करते हैं । हे बृहस्पतिदेव ! उनके प्रभाव से हम लोग श्रेष्ठ सन्तानों तथा पराक्रम से सम्पन्न ऐश्वर्य के स्वामी हों ॥२०,८८.६॥

सूक्त-८९

अस्तेव सु प्रतरं लायमस्यन् भूषन्न् इव प्र भरा स्तोममस्मै । वाचा विप्रास्तरत वाचमर्यो नि रामय जरितः सोम इन्द्रम् ॥२०,८९.१॥

जिस प्रकार धनुर्धारी उत्तम रीति से लक्ष्यवेधी बाणों का प्रहार करते हैं तथा पुरुष आभूषणों से सुसज्जित होते हैं, वैसे ही इन्द्रदेव के लिए श्रेष्ठ स्तुतियों का प्रयोग करें, जिससे प्रतिस्पर्धा करने वाले पराजित हो जाएँ । हे स्तोताओ ! पराक्रमी इन्द्रदेव को सोमपान की ओर आकर्षित करें ॥२०,८९.१॥

दोहेन गामुप शिक्षा सखायं प्र बोधय जरितर्जारमिन्द्रम् । कोशं न पूर्णं वसुना न्यृष्टमा च्यावय मघदेयाय शूरम् ॥२०,८९.२॥

हे स्तुतिकर्ताओ ! गौओं का दोहन करके अपना प्रयोजन पूर्ण करने के समान इन्द्रदेव से अपने अभीष्ट फल को प्राप्त करें तथा प्रशंसा योग्य इन्द्रदेव को जाग्रत् करें । जैसे अन्न से भरे हुए पात्र के मुख को नीचे की ओर करके उसके

अन्न को निकालते हैं, वैसे ही शूर इन्द्रदेव को अभीष्ट सिद्धि के लिए अनुकूल बनाएँ ॥२०,८९.२॥

किमङ्ग त्वा मघवन् भोजमाहुः शिशीहि मा शिशयं त्वा शृणोमि ।
अप्रस्वती मम धीरस्तु शक्र वसुविदं भगमिन्द्रा भरा नः ॥२०,८९.३॥

हे वैभवशाली इन्द्रदेव ! आपको ज्ञानी लोग कामना पूरक क्यों कहते हैं ? आप हमें धन से सम्पन्न बनाएँ । हे इन्द्रदेव ! हमारी विवेक- बुद्धि जाग्रत् करें, कार्य कुशलता प्रदान करें तथा श्रेष्ठ ऐश्वर्य- सम्पदा से सौभाग्ययुक्त करें ॥२०,८९.३॥

त्वां जना ममसत्येष्विन्द्र संतस्थाना वि ह्वयन्ते समीके ।
अत्रा युजं कृणुते यो हविष्मान् नासुन्वता सख्यं वष्टि शूरः ॥२०,८९.४॥

हे इन्द्रदेव ! योद्धा लोग समर भूमि में जाते हुए सहयोगार्थ आपका स्मरण करते हैं जो हवि (सोम) समर्पित करता है, वीर इन्द्रदेव उसकी सहायता करते हैं। जो हवि (सोम) प्रस्तुत नहीं करते, वे उनकी मैत्री भावना से वञ्चित रहते हैं ॥२०,८९.४॥

धनं न स्पन्द्रं बहुलं यो अस्मै तीव्रान्त्सोमामासुनोति प्रयस्वान् ।
तस्मै शत्रून्त्सुतुकान् प्रातरह्नो नि स्वष्ट्रान् युवति हन्ति वृत्रम् ॥२०,८९.५॥

जो प्रयत्नशील साधक सरस सम्पदा के समान तीव्र सोमरस इन्द्रदेव को समर्पित करते हैं, इन्द्रदेव उनके लिए सामर्थ्यवान् एवं अनेक आयुधों से युक्त शत्रुओं को परास्त कर देते हैं तथा वृत्र (घेरने वाले) असुर को भीसंहार करते हैं ॥२०,८९.५॥

यस्मिन् वयं दधिमा शंसमिन्द्रे यः शिश्राय मघवा काममस्मे ।
आराच्चित्सन् भयतामस्य शत्रुर्न्यस्मै द्युम्ना जन्या नमन्ताम् ॥२०,८९.६॥

जिन ऐश्वर्यवान् इन्द्रदेव की हम स्तोत्रों से प्रार्थना करते हैं तथा जो हमें अभीष्ट वैभव प्रदान करते हैं, उनके सामने से शत्रु भयभीत होकर पलायन करें तथा शत्रु पक्ष की सम्पदा उन्हें प्राप्त हो ॥२०,८९.६॥

आराच्छत्रुमप बाधस्व दूरमुग्रो यः शम्बः पुरुहूत तेन ।

अस्मे धेहि यवमद्गोमदिन्द्र कृधी धियं जरित्रे वाजरत्नाम्
॥२०,८९.७॥

प्रथम आवाहित है इन्द्रदेव! अपने तीक्ष्ण वज्र से आप हमारे समीपस्थ शत्रुओं को खदेड़कर दूर करें तथा हमें अन्न- जौ एवं गवादि से युक्त सम्पदा प्रदान करें। अपने स्तुतिकर्ता की प्रार्थना को अन्न- रत्नप्रसविनी बनाएँ ॥२०,८९.७॥

प्र यमन्तर्वृषसवासो अज्मन् तीव्राः सोमा बहुलान्तास इन्द्रम्
।
नाह दामानं मघवा नि यंसन् नि सुन्वते वहति भूरि वामम्
॥२०,८९.८॥

तीक्ष्ण सोमरस, मधुरस के रूप में विभिन्न धाराओं से गिरता हुआ, जिस समय इन्द्रदेव की देह में प्रविष्ट होता है, उस समय वैभव- सम्पन्न इन्द्रदेव सोमरस प्रदाता यजमान का विरोध नहीं करते, अपितु (सोमरस के प्रस्तुतकर्ता को) प्रचुर मात्रा में (इच्छित) सम्पत्ति प्रदान करते हैं ॥२०,८९.८॥

उत प्रहामतिदीवा जयति कृतमिव श्वघ्नी वि चिनोति काले ।
यो देवकामो न धनं रुणद्धि समित्तं रायः सृजति स्वधाभिः
॥२०,८९.९॥

जैसे पराजित जुआरी विजयी जुआरी को खोजकर अपनी पिछली पराजय का बदला, उसे पराजित करके लेता है, वैसे ही इन्द्रदेव भी अनिष्टकारी शत्रुओं के ऊपर पराक्रमी हमला करके उन्हें पराजित करते हैं। जो साधक देवपूजन (यज्ञादि) में कंजूसी नहीं दिखाते, ऐश्वर्यवान् इन्द्रदेव उन साधकों को धन- सम्पदा से सम्पन्न बनाते हैं ॥२०,८९.९॥

गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन वा क्षुधं पुरुहूत विश्वे ।
वयं राजसु प्रथमा धनान्यरिष्टासो वृजनीभिर्जयेम ॥२०,८९.१०॥

बहुसंख्यकों द्वारा आवाहनीय हे इन्द्रदेव ! आपकी कृपा दृष्टि से हम गोधन द्वारा दुःख-दारिद्रयों से निवृत्त हो; जौ आदि अन्नों से क्षुधा को शान्त करें। हम शासनाध्यक्षों के साथ अग्रसर होते हुए अपनी सामर्थ्य (क्षमता) से शत्रुओं की विपुल सम्पदाओं को अपने (आधिपत्य) में ले सकें ॥२०,८९.१०॥

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघयोः ।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु ॥२०,८९.११॥

दुष्ट- पापी शत्रुओं से बृहस्पतिदेव हमें पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण से संरक्षित करें । इन्द्रदेव पूर्व दिशा और मध्यभाग से आने वाले शत्रुओं से हमें संरक्षित करें । वे इन्द्रदेव सबके मित्र तथा हेम भी उनके प्रिय सखा हैं, वे हमारे अभीष्टों को सिद्ध करें ॥२०,८९.११॥

सूक्त-९०

यो अद्रिभित्प्रथमजा ऋतावा बृहस्पतिराङ्गिरसो हविष्मान्।
द्विबर्हज्मा प्राघर्मसत्पिता न आ रोदसी वृषभो रोरवीति
॥२०,९०.१॥

बृहस्पतिदेव सबसे प्रथम उत्पन्न हुए, उन्होंने पर्वतों को ध्वस्त किया । जो अङ्गिरसों के हविष्यान्न से युक्त हैं, जो स्वयं के तेज से तेजस्वी हैं, वे उत्तम गुणों से भूमि की सुरक्षा करने कले, बलवान्, हमारे पालक बृहस्पतिदेव, द्युलोक और भूलोक में गर्जना करें ॥२०,९०.१॥

जनाय चिद्य ईवते उ लोकं बृहस्पतिर्देवहूतौ चकार ।
घ्नन् वृत्राणि वि पुरो दर्दरीति जयं छत्रूंरमित्रान् पृत्सु साहन्
॥२०,९०.२॥

जो बृहस्पतिदेव स्तोताओं को स्थान देते हैं, जो शत्रुओं को मारने वाले और शत्रुजयीं हैं । वे शत्रुओं को परास्त करके उनके नगरों को ध्वस्त करें ॥२०,९०.२॥

बृहस्पतिः समजयद्वसूनि महो व्रजान् गोमते देव एषः ।

अपः सिषासन्त्स्वरप्रतीतो बृहस्पतिर्हन्त्यमित्रमर्कैः ॥२०,९०.३॥

बृहस्पतिदेव ने असुरों को परास्त करके गोधन जीता है। दिव्य प्रकाश एवं रसों को धारण करने वाले बृहस्पतिदेव स्वर्ग के शत्रुओं का मन्त्र द्वारा विनाश करते हैं ॥२०,९०.३॥

सूक्त-९१

इमां धियं सप्तशीर्ष्णीं पिता न ऋतप्रजातां बृहतीमविन्दत्।
तुरीयं स्विज्जनयद्विश्वजन्योऽयास्य उक्थमिन्द्राय शंसन् ॥२०,९१.१॥

हमारे पिता (सृजेता) ने ऋत से उत्पन्न सात शीर्ष वाली इस विशाल बुद्धि को प्राप्त किया। विश्वजन्य अयास्य ने इन्द्रदेव के लिए स्तोत्र बोलते हुए तुरीय (ईश्वर सान्निध्य) अवस्था का सृजन किया ॥२०,९१.१॥

ऋतं शंसन्त ऋजु दीध्याना दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः ।
विप्रं पदमङ्गिरसो दधाना यज्ञस्य धाम प्रथमं मनन्त ॥२०,९१.२॥

अंगिरा ऋषियों ने यज्ञ के श्रेष्ठ स्थल में जाने का निश्चय किया। वे सत्यवती, मनोभावों से सरल, दिव्य पुत्र, महाबलवान् तथा ज्ञानियों के समान आचरण निष्ठ हैं ॥२०,९१.२॥

हंसैरिव सखिभिर्वावदद्भिरश्मन्मयानि नहना व्यस्यन् ।

बृहस्पतिरभिकनिक्रदद्गा उत प्रास्तौदुच्च विद्वामगायत्॥२०,९१.३॥

बृहस्पतिदेव के मित्रों (मरुतों) ने हंसों के समान स्वर निकाले। उनके सहयोग से बृहस्पतिदेव ने पत्थरों के बने द्वारों को खोल दिया। अन्दर अवरुद्ध गौएँ आवाज करने लगीं । वे ज्ञानी, देवजनों के प्रति श्रेष्ठ स्तोत्रों का उच्च स्वर से गान करने लगे ॥२०,९१.३॥

अवो द्वाभ्यां पर एकया गा गुहा तिष्ठन्तीरनृतस्य सेतौ । बृहस्पतिस्तमसि ज्योतिरिछन् उदुस्रा आकर्वि हि तिस्र आवः ॥२०,९१.४॥

असत् (अव्यक्त) गुह्यक्षेत्र में गौएँ (प्रकाश किरणें दिव्य वाणियाँ) छिपी हुई थीं । बृहस्पति (ज्ञान या वाणी के अधिपति) देव ने अन्धकार से प्रकाश (अज्ञान से ज्ञान) की कामना करते हुए नीचे के दो (अन्तरिक्ष एवं पृथ्वी) तथा ऊपर का एक(धुलोक), इस प्रकार तीनों द्वारों को खोलकर गौओं(किरणों या वाणियों) को प्रकट किया ॥२०,९१.४॥

विभिद्या पुरं शयथेमपाचीं निस्त्रीणि साकमुदधेरकृन्तत्। बृहस्पतिरुषसं सूर्यं गामर्कं विवेद स्तनयन्न् इव द्यौः ॥२०,९१.५॥

गौओं के लिए अवरोधक बल के अधोमुख पुरों (संस्थानों) को भेदन करके बृहस्पतिदेव ने एक साथ तीनों बन्धन काट दिये। उन्होंने जलाशय (मेघों या अप् प्रवाहों) से उषा, सूर्य एवं गौओं (किरणों) को एक साथ प्रकट किया। वे (बृहस्पतिदेव) विद्युत् की तरह गर्जना करने वाले अर्क (प्राण के स्रोत) को जानते हैं ॥२०,९१.५॥

इन्द्रो वलं रक्षितारं दुघानां करेणेव वि चकर्ता रवेण ।
स्वेदाञ्जिभिराशिरमिछमानोऽरोदयत्पणिमा गा अमुष्णात्॥२०,९१.६॥

जिस वल (राक्षस) ने गौओं को छिपाया था, उसे इन्द्रदेव ने हिंसक हथियार के समान अपनी तीव्र हुंकार से छिन्न-भिन्न कर दिया। मरुद्गणों की सहायता के इच्छुक उन्होंने पणि (वल के अनुचर) को नष्ट किया और उसअसुर द्वारा चुराई गई गौओं को मुक्त किया ॥२०,९१.६॥

स ईं सत्येभिः सखिभिः शुचद्भिर्गोधायसं वि धनसैरदर्दः ।
ब्रह्मणस्पतिर्वृषभिर्वराहैर्घर्मस्वेदेभिर्द्रविणं व्यानट्॥२०,९१.७॥

बृहस्पतिदेव ने सत्यस्वरूप, मित्ररूप, तेजस्वी और ऐश्वर्ययुक्त मरुद्गणों के सहयोग से गौओं के अवरोधक इस वल (राक्षस) को विनष्ट किया। उन्होंने वर्षणशील मेघों द्वार। प्रज्वलित एवं गतिशील मरुद्गणों के सहयोग से धन-धान्य को प्राप्त किया ॥२०,९१.७॥

ते सत्येन मनसा गोपतिं गा इयानास इषणयन्त धीभिः ।
बृहस्पतिर्मिथोअवद्यपेभिरुदुस्रिया असृजत स्वयुग्भिः ॥२०,९१.८॥

गौओं (किरणों) से प्रीति रखने वाले मरुद्गण सत्यनिष्ठ मन एवं अपने श्रेष्ठ कर्मों से बृहस्पतिदेव को गौओं के अधिपति बनाने के लिए प्रेरित किया ।उन्होंने दुष्ट राक्षसों से गौओं के संरक्षणार्थ एकत्रित हुए मरुद्गणों के सहयोग से गौओं को विमुक्त किया ॥२०,९१.८॥

तं वर्धयन्तो मतिभिः शिवाभिः सिंहमिव नानदतं सधस्थे ।
बृहस्पतिं वृषणं शूरसातौ भरेभरे अनु मदेम जिष्णुम् ॥२०,९१.९॥

अन्तरिक्ष में सिंह के समान बार-बार गर्जना करने वाले, कामनाओं के वर्षक और विजयशील उन बृहस्पतिदेव को प्रोत्साहित करने वाले हम, मरुत् वीरों के युद्ध में

कल्याणकारी स्तुतियों से उनकी प्रार्थना करते हैं ॥२०,९१.९॥

यदा वाजमसनद्विश्वरूपमा द्यामरुक्षदुत्तराणि सद्म ।
बृहस्पतिं वृषणं वर्धयन्तो नाना सन्तो बिभ्रतो ज्योतिरासा ॥२०,९१.१०॥

जिस समय बृहस्पतिदेव सभी सांसारिक अन्नों का सेवन करते हैं तथा आकाश में ऊपर जाकर उत्तम लोकों में प्रतिष्ठित होते हैं, तब बलशाली बृहस्पतिदेव को देवगण मुख(वाणी) से प्रोत्साहित करते हैं, वे विभिन्न दिशाओं में रहते हुए उन्हें उन्नतिशील बनाते हैं ॥२०,९१.१०॥

सत्यमाशिषं कृणुता वयोधै कीरिं चिद्ध्यवथ स्वेभिरेवैः ।
पश्चा मृधो अप भवन्तु विश्वास्तद्रोदसी शृणुतं विश्वमिन्वे ॥२०,९१.११॥

हे देवगण ! अन्न प्राप्ति के निमित्त की गई हमारी प्रार्थनाओं को आप सफलता प्रदान करें। आप अपने आश्रय से हम साधकों का संरक्षण करें और हमारी सभी प्रकार की विपदाओं का निवारण करें। सम्पूर्ण विश्व को हर्षित करने वाली हे द्यावा- पृथिवीं ! आप दोनों हमारे निवेदन के अभिप्राय को समझें ॥२०,९१.११॥

इन्द्रो मह्ना महतो अर्णवस्य वि मूर्धानमभिनदर्बुदस्य ।
अहन्न् अहिमरिणात्सप्त सिन्धून् देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः ॥२०,९१.१२॥

सर्वप्रथम बृहस्पतिदेव ने विशाल जल भण्डार रूप मेघों के सिर को छिन्न-भिन्न किया। जल के अवरोधक शत्रुओं को विनष्ट किया सप्तधाराओं को प्रवाहित एवं संयुक्त किया । हे द्यावा- पृथिवीं ! आप देवताओं के साथ आगमन करके हमारा संरक्षण करें ॥२०,९१.१२॥

सूक्त-९२

अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे ।
सूतुं सत्यस्य सत्पतिम् ॥२०,९२.१॥

हे याजको ! गोपालक, सत्यनिष्ठ, सज्जनों के संरक्षक इन्द्रदेव की मन्त्रोच्चारण सहित प्रार्थना करें, जिससे उनकी शक्तियों का आभास हो सके ॥२०,९२.१॥

आ हरयः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि ।
यत्राभि संनवामहे ॥२०,९२.२॥

जिन इन्द्रदेव की हम अपने यज्ञ मण्ड़प में प्रार्थना करते हैं, उनको उत्तम अश्व, यज्ञशाला की ओर ले आएँ ॥२०,९२.२॥

इन्द्राय गाव आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु ।
यत्सीमुपह्वरे विदत्॥२०,९२.३॥

जब यज्ञस्थल के समीप ही इन्द्रदेव मधुर रस का पान करते हैं, तब गौएँ वज्रहस्त इन्द्रदेव के (पान करने के) लिए मधुर दुग्ध प्रदान करती हैं ॥२०,९२.३॥

उद्यद्ध्रध्नस्य विष्टपं गृहमिन्द्रश्च गन्वहि ।
मध्वः पीत्वा सचेवहि त्रिः सप्त सख्युः पदे ॥२०,९२.४॥

जब हमने इन्द्रदेव के साथ सूर्यलोक में गमन किया, तब अपने सखा उन इन्द्रदेव के साथ मधुर सोमपान करके हम त्रिसप्त स्थानों पर उनसे संयुक्त हुए॥२०,९२.४॥

अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत ।
अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत ॥२०,९२.५॥

हे प्रियमेध के वंशज मनुष्यो ! यज्ञ-प्रिय, सन्तान एवं साधकों की कामना को पूर्ण करने वाले तथा शत्रुओं को पराजित करने वाले इन्द्रदेव का आप सभी (श्रद्धापूरित होकर) सम्मान करें ॥२०,९२.५॥

अव स्वराति गर्गरो गोधा परि सनिष्वणत्।
पिङ्गा परि चनिष्कददिन्द्राय ब्रह्मोद्यतम् ॥२०,९२.६॥

गर्गर स्वर (रणवाद्यों अथवा मेघों से) उभर रहे हैं। गोधा (हस्तरक्षक आवरण अथवा किरणों के धारणकर्ता अवरोधक) सब ओर शब्द कर रहे हैं । पिंगा (धनुष की प्रत्यंचा अथवा विद्युत् की ध्वनि (टंकार अथवा कड़क)

सब ओर सुनाई देती है। ऐसे में इन्द्रदेव (पराक्रमी संरक्षक अथवा वर्षा के देवता) के लिए स्तोत्र बोलें ॥२०,९२.६॥

आ यत्पतन्त्येन्यः सुदुघा अनपस्फुरः ।
अपस्फुरं गृभायत सोममिन्द्राय पातवे ॥२०,९२.७॥

जब उज्ज्वल जल से समृद्ध नदियाँ प्रवाहित होती हैं। उस समय इन्द्रदेव के पीने के लिए श्रेष्ठ गुणों से युक्त मधुर सोमरस लेकर उपस्थित हों ॥२०,९२.७॥

अपादिन्द्रो अपादग्निर्विश्वे देवा अमत्सत ।
वरुण इदिह क्षयत्तमापो अभ्यनूषत वत्सं संशिश्वरीरिव ॥२०,९२.८॥

अग्नि, इन्द्र तथा विश्वेदेवा सोमपान करके हर्षित हुए । वरुणदेव भी यहाँ उपस्थित रहें । जिस प्रकार गौएँ अपने बच्चे को प्राप्त करने के लिए शब्द करती हैं, उसी प्रकार हमारे स्तोत्र उन वरुणदेव की प्रार्थना करते हैं ॥२०,९२.८॥

सुदेवो असि वरुण यस्य ते सप्त सिन्धवः ।
अनुक्षरन्ति काकुदं सूर्यं सुषिरामिव ॥२०,९२.९॥

हे वरुणदेव ! जिस प्रकार किरणें सूर्य की ओर गमन करती हैं, उसी प्रकार आपके ओज से सातों सरिताएँ समुद्र की ओर प्रवाहित होती हैं ॥२०,९२.९॥

यो व्यतींरफाणयत्सुयुक्तामुप दाशुषे ।
तक्वो नेता तदिद्वपुरुपमा यो अमुच्यत ॥२०,९२.१०॥

जो इन्द्रदेव द्रुतगामी अश्वों को रथ में नियोजित करके हविप्रदाता यजमान के पास जाते हैं, वे विशाल शरीर वाले नायक इन्द्रदेव यज्ञशाला में प्रमुख स्थान प्राप्त करते हैं ॥२०,९२.१०॥

अतीदु शक्र ओहत इन्द्रो विश्वा अति द्विषः ।
भिनत्कनीन ओदनं पच्यमानं परो गिरा ॥२०,९२.११॥

समर्थ इन्द्रदेव सभी विद्वेषियों को दूर हटाते हैं। उन्होंने अपनी छोटी सी आवाज से बादलों को नष्ट कर दिया ॥२०,९२.११॥

अर्भको न कुमारकोऽधि तिष्ठन्न् अवं रथम् ।
स पक्षन् महिषं मृगं पित्रे मात्रे विभुक्रतुम् ॥२०,९२.१२॥

ये इन्द्रदेव अपने विशाल शरीर से नूतन रथ पर सुशोभित होते हैं। वे विविध श्रेष्ठ कर्मों को सम्पन्न करते हुए बादलों को जल बरसाने के लिए प्रेरित करते हैं ॥२०,९२.१२॥

आ तू सुशिप्र दंपते रथं तिष्ठा हिरण्ययम् ।
अध द्युक्षं सचेवहि सहस्रपादमरुषं स्वस्तिगामनेहसम् ॥२०,९२.१३॥

हे सुन्दर आकृति वाले दम्पते (इन्द्रदेव) ! सहस्रों रश्मियों से आलोकित, द्रुतगामी स्वर्णिम रथ पर आप भली प्रकार आरूढ़ हों (यहाँ आएँ; तब हम दोनों एक साथ मिलेंगे ॥२०,९२.१३॥

तं घेमित्था नमस्विन उप स्वराजमासते ।
अर्थं चिदस्य सुधितं यदेतवे आवर्तयन्ति दावने ॥२०,९२.१४॥

उन स्वप्रकाशित इन्द्रदेव की वन्दना करने वाले याजक साधना करते हैं। उसके बाद वे श्रेष्ठ सम्पत्ति तथा सद्बुद्धि ग्रहण करते हैं ॥२०,९२.१४॥

अनु प्रत्नस्यौकसः प्रियमेधास एषाम् ।
पूर्वामनु प्रयतिं वृक्तबर्हिषो हितप्रयस आशत ॥२०,९२.१५॥

कुश- आसन फैलाने वाले तथा यज्ञों में हविष्यान्न प्रदान करने वाले 'प्रियमेध' ऋषि अथवा श्रेष्ठ बुद्धि या यज्ञ युक्त साधकों) ने पूर्वकाल के अनुरूप शाश्वत निवास स्थल (स्वर्ग) को प्राप्त किया ॥२०,९२.१५॥

यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः ।
विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठो यो वृत्रहा गृणे ॥२०,९२.१६॥

मानवों के अधिपति, वेगवान्, शत्रुसेना के संहारक, वृत्रहन्ता, श्रेष्ठ इन्द्रदेव की हम स्तुति करते हैं ॥२०,९२.१६॥

इन्द्रं तं शुम्भ पुरुहन्मन्न् अवसे यस्य द्विता विधर्तरि ।
हस्ताय वज्रः प्रति धायि दर्शतो महो दिवे न सूर्यः ॥२०,९२.१७॥

नकिष्टं कर्मणा नशद्यश्चकार सदावृधम् ।
इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्ण्वोजसम् ॥२०,९२.१८॥

हे साधक ! अपनी रक्षा के लिए देवराज इन्द्र की उपासना करो । जिनके संरक्षण में (देवत्व की रक्षा एवं (असुरता के) विनाश की दोहरी शक्ति है । वे इन्द्रदेव, सूर्य के समान तेजस्वी वज्र को हाथ में धारण करते हैं ॥२०,९२.१७॥

अषाल्हमुग्रं पृतनासु सासहिं यस्मिन् महीरुरुज्रयः ।
सं धेनवो जायमाने अनोनवुर्द्यावः क्षामो अनोनवुः ॥२०,९२.१९॥

स्तुत्य, महाबलशाली, समृद्ध, अपराजित, शत्रुओं का दमन करने वाले इन्द्रदेव को जो साधक यज्ञादि कर्मों द्वारा अपना सहचर (अनुकूल) बना लेता है, उसके कर्मों को कोई नष्ट नहीं कर सकता ॥२०,९२.१८॥

यद्द्याव इन्द्र ते शतं शतं भूमीरुत स्युः ।
न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी ॥२०,९२.२०॥

जिन इन्द्रदेव के प्राकट्य पर महान् वेगवाली गौएँ (किरणें) और पृथ्वी तथा आकाश भी उनके समक्ष झुककर अभिवादन करते हैं, उन उग्र, शत्रु विजेता और पराक्रमी इन्द्रदेव की हम स्तुति करते हैं ॥२०,९२.१९॥

आ पप्राथ महिना वृष्ण्या वृषन् विश्वा शविष्ठ शवसा ।
अस्मामव मघवन् गोमति व्रजे वज्रिं चित्राभिरूतिभिः ॥२०,९२.२१॥

है इन्द्रदेव ! पृथ्वी एवं द्युलोक सैकड़ों गुना विस्तार कर लें, सूर्य हजारों गुना विस्तार कर ले, तो भी आपकी समानता नहीं कर सकते । द्यावा- पृथिवी में (कोई भी) आपकी बराबरी करने वाला नहीं है ॥२०,९२.२०॥

उत्त्वा मन्दन्तु स्तोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः ।
अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥२०,९३.१॥

हे बलशाली इन्द्रदेव ! आप अपनी सामर्थ्य से सभी की इच्छा पूरी करते हैं । हे बलवान्, धनवान्, वज्रधारी इन्द्रदेव ! आप गौयुक्त (पोषण साधनों सहित) हमें संरक्षण प्रदान करें ॥२०,९२.२१॥

सूक्त-९३

हे इन्द्रदेव ! आपको ये स्तोत्र आनन्द प्रदान करने वाले हों । हे वज्रधारी इन्द्रदेव ! आप हमें ऐश्वर्य प्रदान करें तथा ज्ञान के साथ द्वेष रखने वालों का संहार करें ॥२०,९३.१॥

पदा पणींरराधसो नि बाधस्व महामसि ।
नहि त्वा कश्चन प्रति ॥२०,९३.२॥

हे इन्द्रदेव ! आप महान् हैं। आपके समान सामर्थ्य किसी में नहीं है । आप यज्ञादि कर्म न करने वाले कृपणों को पीड़ित करें ॥२०,९३.२॥

त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र त्वमसुतानाम् ।
त्वं राजा जनानाम् ॥२०,९३.३॥

हे इन्द्रदेव ! आप सिद्ध रसयुक्त (सोमरस) पदार्थों एवं निषिद्ध पदार्थों के स्वामी हैं । आप समस्त प्राणियों के शासक हैं ॥२०,९३.३॥

ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते ।

भेजानासः सुवीर्यम् ॥२०,९३.४॥

इन्द्रदेव के समीप जाकर उनकी सेवा करने वाली, यज्ञादि सत्कर्म करने में संलग्न माताएँ उनकी ही उपासना अर्चना करती हैं। उनसे सुखकारी श्रेष्ठ धन प्राप्त करती हैं ॥२०,९३.४॥

त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः ।
त्वं वृषन् वृषेदसि ॥२०,९३.५॥

हे बलवर्द्धक इन्द्रदेव ! आप शत्रुओं को पराजित करने वाली सामर्थ्य और धैर्य से प्रख्यात हुए हैं। आप सर्वाधिक सामर्थ्यशाली और साधकों की कामनाओं को पूर्ण करने वाले हैं ॥२०,९३.५॥

त्वमिन्द्रासि वृत्रहा व्यन्तरिक्षमतिरः ।
उद्द्यामस्तभ्ना ओजसा ॥२०,९३.६॥

हे इन्द्रदेव ! आप वृत्रहन्ता और अन्तरिक्ष का विस्तार करने वाले हैं। आपने अपनी सामर्थ्य से द्युलोक (स्वर्गलोक) को स्थायित्व प्रदान किया है ॥२०,९३.६॥

त्वमिन्द्र सजोषसमर्कं बिभर्षि बाह्वोः ।

वज्रं शिशान ओजसा ॥२०,९३.७॥

हे इन्द्रदेव ! अपने कार्यों में सहयोगी (सखा) सूर्य को अपने दोनों हाथों से अन्तरिक्ष में स्थापित किया हैं। आप अपनी सामर्थ्य से वज्र को तीक्ष्णता प्रदान करते हैं ॥२०,९३.७॥

त्वमिन्द्राभिभुरसि विश्वा जातान्योजसा ।
स विश्वा भुव आभवः ॥२०,९३.८॥

हे इन्द्रदेव !आप अपनी शक्ति से सभी प्राणियों को वशीभूत करते हैं ।समस्त स्थानों पर आपका प्रभुत्व है॥२०,९३.८॥

सूक्त-९४

आ यात्विन्द्रः स्वपतिर्मदाय यो धर्मणा तूतुजानस्तुविष्मान् । प्रत्वक्षाणो अति विश्वा सहांस्यपारेण महता वृष्ण्येन ॥२०,९४.१॥

जो शारीरिक दृष्टि से स्थूल हैं और जो अपनी विशाल तथा पराक्रमी सामर्थ्य से सम्पूर्ण शक्तिशाली पदार्थों को शक्तिहीन कर देते हैं, वे ऐश्वर्य-सम्पन्न इन्द्रदेव रथारूढ़ होकर, यहाँ आकर हर्ष को प्राप्त करें ॥२०,९४.१॥

सुष्ठामा रथः सुयमा हरी ते मिम्यक्ष वज्रो नृपते गभस्तौ । शीभं राजन् सुपथा याह्यर्वाङ्वर्धाम ते पपुसो वृष्ण्यानि ॥२०,९४.२॥

हे मनुष्यों के पालक इन्द्रदेव ! आपका रथ उत्तम रीति से विनिर्मित है, आपके रथ के दोनों अश्व भली प्रकार से नियंत्रित हैं और आप हाथ में वज्र को धारण किये हुए हैं । हे अधिपति इन्द्रदेव ! ऐसे सुशोभित आप श्रेष्ठ मार्ग से शीघ्रतापूर्वक हमारे समीप आएँ । सोमरस पीने की इच्छा वाले आपकी वीरता का हम संवर्द्धन करेंगे ॥२०,९४.२॥

एन्द्रवाहो नृपतिं वज्रबाहुमुग्रमुग्रासस्तविषास एनम् ।
प्रत्वक्षसं वृषभं सत्यशुष्ममेमस्मत्रा सधमादो वहन्तु
॥२०,९४.३॥

मनुष्यों के पालक, हाथ में वज्रधारणकर्ता, शत्रु सैन्यबल को क्षीण करने वाले, अभीष्टवर्धक तथा सत्यनिष्ठ वीर इन्द्रदेव के रथवाहक, उग्र, बलिष्ठ तथा अति उत्साहित अश्व उन्हें हमारे समीप लेकर आएँ ॥२०,९४.३॥

एवा पतिं द्रोणसाचं सचेतसमूर्ज स्कम्भं धरुण आ वृषायसे
।
ओजः कृष्व सं गृभाय त्वे अप्यसो यथा केनिपानामिनो वृधे
॥२०,९४.४॥

है इन्द्रदेव ! जिस सोमरस द्वारा शरीर परिपुष्ट होता है, जो कलश में मिश्रित होकर बल को संचारित करने वाला है, उसे आप अपने अन्दर समाहित करें तथा हमारी सामर्थ्य-शक्ति में वृद्धि करें। आप हमें अपना आत्मीय जन बना लें; क्योंकि आप ज्ञानशीलों की धन- सम्पदा को समृद्ध करने वाले हैं ॥२०,९४.४॥

गमन्न् अस्मे वसून्या हि शंसिषं स्वाशिषं भरमा याहि सोमिनः ।
त्वमीशिषे सास्मिन्न् आ सत्सि बर्हिष्यनाधृष्या तव पात्राणि धर्मणा ॥२०,९४.५॥

हे इन्द्रदेव ! हम स्तोताओं को आप विपुल सम्पदा प्रदान करें, सोम से युक्त हमारे यज्ञ में शुभाशीर्वाद देते हुए आएँ, क्योंकि आप ही सबके स्वामी हैं। आप हमारे यज्ञ में कुशा के आसन पर विराजमान हों। आपके सेवनार्थ सज्जित सोमपात्र को बलपूर्वक छीनने की सामर्थ्य किसी में नहीं है ॥२०,९४.५॥

पृथक्प्रायन् प्रथमा देवहूतयोऽकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा ।
न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुहमिर्मैव ते न्यविशन्त केपयः ॥२०,९४.६॥

हे इन्द्रदेव ! जो श्रेष्ठ लोग पुरातनकाल से ही देवताओं को आमन्त्रित करते रहे हैं, उन्होंने यशस्वी तथा दुष्कर कार्यों को सम्पन्न करते हुए भिन्न-भिन्न देव लोकों को प्राप्त किया; परन्तु जो यज्ञ- उपासना रूपी नौका पर आरूढ़ न हो पाए, वे दुष्कृत्य रूपी पापों में फंसकर, ऋण-बोझ से दबकर दुर्गतिग्रस्त होकर पड़े रहते हैं ॥२०,९४.६॥

एवैवापागपरे सन्तु दूध्योऽश्वा येषां दुर्युग आयुयुज्रे ।
इत्था ये प्रागुपरे सन्ति दावने पुरूणि यत्र वयुनानि भोजना ॥२०,९४.७॥

इस समय जो भी दुर्बुद्धिग्रस्त, यज्ञ विरोधी लोग हैं, जिनके (जीवन रूपी) रथ में पतन मार्ग में घसीटने वाले अश्व जोते गये हैं, वे अधोगामी होते हैं- नरकगामी होते हैं। जो मनुष्य पहले से ही देवताओं के निमित्त हविष्यान्न समर्पित करने में संलग्न हैं, वे वानव में स्वर्गधाम को प्राप्त करते हैं, जहाँ पर प्रचुर मात्रा में आश्चर्यप्रद उपभोग्य सामग्रियाँ उपलब्ध हैं ॥२०,९४.७॥

गिरींरज्रान् रेजमानामधारयद्द्यौः क्रन्ददन्तरिक्षाणि कोपयत्।
समीचीने धिषणे वि ष्कभायति वृष्णः पीत्वा मद उक्थानि शंसति ॥२०,९४.८॥

जिस समय इन्द्रदेव सोमपान करके आनन्दित होते हैं, उस समय वे सब जगह घूमने वाले और काँपते हुए बादलों को सुस्थिर करते हैं। वे आकाश को विचलित कर देते हैं, जिससे वह गर्जना करने लगता हैं । जो द्युलोक और पृथ्वी आपस में सम्बद्ध हैं, उन्हें उसी स्थिति में धारण करते हुए वे उत्तम वचन उच्चारित करते हैं ॥२०,९४.८॥

इमं बिभर्मि सुकृतं ते अङ्कुशं येनारुजासि मघवं छफारुजः ।
अस्मिन्त्सु ते सवने अस्त्वोक्त्यं सुत इष्टौ मघवन् बोध्याभगः ॥२०,९४.९॥

हे ऐश्वर्यवान् इन्द्रदेव ! आपके इस श्रेष्ठ ढंग से बनाये गये अंकुश को हम धारण करते हैं, जिससे आप दुष्टजनों को दण्डित करते हैं। आप हमारे इस सोमयाग में पधार कर अपने स्थान पर प्रतिष्ठित हों । हे इन्द्रदेव !आप श्रेष्ठ रीति से सम्पन्न किये गये सोमयज्ञ में हमारी प्रार्थनाओं पर ध्यान दें ॥२०,९४.९॥

गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।
वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम ॥२०,९४.१०॥

हे बहुतों द्वारा आवाहनीय इन्द्रदेव ! आपकी कृपा दृष्टि से हम गोधन के द्वारा दुःख-दारियों से निवृत्त हों तथा जौ आदि अन्नों से क्षुधा की पूर्ति करें। प्रशासकों के स्नेह पात्र बनकर अपनी क्षमता से विपुल सम्पदाओं को हम अपने अधिपत्य में ले सकें ॥२०,९४.१०॥

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघयोः ।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ॥२०,९४.११॥

दुष्कर्मी पापियों से बृहस्पतिदेव हमें पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण से संरक्षित करें । इन्द्रदेव पूर्व दिशा और मध्य भाग के प्रहारक शत्रुओं से हमें बचाएँ । इन्द्रदेव हमारे सखा हैं । हम भी उनके मित्र हैं। वे हमारे अभीष्ट की पूर्ति में सहायक हों ॥२०,९४.११॥

सूक्त-९५

त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृपत्सोममपिबद्विष्णुना सुतं यथावशत्।
स ईं ममाद महि कर्म कर्तवे महामुरुं सैनं सश्चद्देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः ॥२०,९५.१॥

अत्यन्त बली, पूजनीय इन्द्रदेव ने तीनों लोकों में व्याप्त, तृप्तिदायक दिव्यसोम को जौ के सार भाग के साथ मिलाकर विष्णुदेव के साथ इच्छानुसार पान किया। उस (सोम) ने महान् इन्द्रदेव को श्रेष्ठ कार्य करने के लिए प्रेरित किया। उत्तम दिव्य गुणों से युक्त उस दिव्य सोमरस ने इन्द्रदेव को प्रसन्न किया ॥२०,९५.१॥

प्रो ष्वस्मै पुरोरथमिन्द्राय शूषमर्चत ।
अभीके चिदु लोककृत्संगे समत्सु वृत्रहास्माकं बोधि चोदिता नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥२०,९५.२॥

है स्तोताओ ! इन इन्द्रदेव के रथ के सम्मुख रहने वाले बल की उपासना करो । शत्रुसेना के आक्रमण के अवसर पर ये लोकपाल और शत्रुनाशक इन्द्रदेव ही प्रेरणा के आधार

हैं, यह निश्चित जानें । शत्रुओं के धनुष की प्रत्यञ्चा टूट जाए, यही कामना करते हैं ॥२०,९५.२॥

त्वं सिन्धूंरवासृजोऽधराचो अहन्न् अहिम् ।
अशत्रुरिन्द्र जज्ञिषे विश्वं पुष्यसि वार्यं तं त्वा परि ष्वजामहे
नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥२०,९५.३॥

हे इन्द्रदेव ! आप नदियों के प्रवाहों में आये अवरोधों को तोड़ते हैं एवं मेघों को फोड़ते हैं। शत्रु विहीन हुए आप सभी वरणीय पदार्थों के पोषक हैं। हम आपको हविष्यान्न देकर हर्षित करते हैं । शत्रुओं के धनुष की प्रत्यञ्चा टूट जाए, ऐसी कामना करते हैं ॥२०,९५.३॥

वि षु विश्वा अरातयोऽर्यो नशन्त नो धियः ।
अस्तासि शत्रवे वधं यो न इन्द्र जिघांसति या ते रातिर्ददिर्वसु
।
नभन्तामन्यकेषां ज्यका अधि धन्वसु ॥२०,९५.४॥

हम पर आक्रमण करने वाले शत्रु विनष्ट हो जाएँ । हे इन्द्रदेव ! हम पर घात करने वाले जघन्य दुष्टों को आप अपने शवों से मारते हैं। हमारी बुद्धि आपकी ओर प्रेरित हो। आपके धन आदि के दान हमें प्राप्त हों । हमारे शत्रुओं

के धनुष की प्रत्यञ्चा टूट जाए, ऐसी कामना करते हैं ॥२०,९५.४॥

सूक्त-९६

तीव्रस्याभिवयसो अस्य पाहि सर्वरथा वि हरी इह मुञ्च ।
इन्द्र मा त्वा यजमानासो अन्ये नि रीरमन् तुभ्यमिमे सुतासः
॥२०,९६.१॥

हे इन्द्रदेव ! आप तीव्र प्रभाव वाले इस सोमरस का सेवन करें । गतिशील रथ से योजित किये गये अश्वों को यहाँ आकर मुक्त कर दें । अन्य यजमान आपको हर्षित न कर सकें, हम स्वयं आपको सन्तुष्ट करेंगे। आपके निमित्त ही यह सोमाभिषव किया गया है ॥२०,९६.१॥

तुभ्यं सुतास्तुभ्यमु सोत्वासस्त्वां गिरः श्वात्र्या आ ह्वयन्ति ।
इन्द्रेदमद्य सवनं जुषाणो विश्वस्य विद्वामिह पाहि सोमम्
॥२०,९६.२॥

हे इन्द्र !आपके निमित्त ही सोम तैयार किया गया है, आगे भी आपके लिए ही प्रस्तुत होगा। ये सभी स्तुतियाँ आपका ही आवाहन करती हैं । हे इन्द्रदेव ! शीघ्र ही उपस्थित होकर आप हमारे इस यज्ञ में सोमपान करें ॥२०,९६.२॥

य उशता मनसा सोममस्मै सर्वहृदा देवकामः सुनोति ।
न गा इन्द्रस्तस्य परा ददाति प्रशस्तमिच्चारुमस्मै कृणोति ॥२०,९६.३॥

जो साधक भावनापूर्वक इन्द्रदेव के लिए सोमरस अभिषुत करते हैं, इन्द्रदेव उनकी गौओं को भी क्षीण नहीं करते। उन्हें श्रेष्ठ और प्रशंसनीय ऐश्वर्य प्रदान करते हैं ॥२०,९६.३॥

अनुस्पष्टो भवत्येषो अस्य यो अस्मै रेवान् न सुनोति सोमम् ।
निररत्नौ मघवा तं दधाति ब्रह्मद्विषो हन्त्यनानुदिष्टः ॥२०,९६.४॥

जो धनवान् लोग इन्द्रदेव के निमित्त सोमरस प्रस्तुत करते हैं, उन्हें वे प्रत्यक्ष लाभ प्रदान करते हैं । इन्द्रदेव अपनी भुजाओं से उन्हें संरक्षण प्रदान करते हैं। उत्तम कर्मों से विद्वेष करने वालों को इन्द्रदेव बिना कहे ही नष्ट करते हैं ॥२०,९६.४॥

अश्वायन्तो गव्यन्तो वाजयन्तो हवामहे त्वोपगन्तवा उ ।
आभूषन्तस्ते सुमतौ नवायां वयमिन्द्र त्वा शुनं हुवेम ॥२०,९६.५॥

सुखदाता हे इन्द्रदेव ! अश्वों, गौओं और ऐश्वर्य की अभिलाषा से प्रेरित होकर हम आपके आगमन की प्रार्थना करते हैं । आपके निमित्त नवीन और श्रेष्ठ स्तोत्रों की रचना करके आपका आवाहन करते हैं ॥२०,९६.५॥

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञातयक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्।
ग्राहिर्जग्राह यद्येतदेतस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम् ॥२०,९६.६॥

हे रोगिन् ! यज्ञ के हविर्द्रव्य से हम आपको अज्ञात रोगों और राजयक्ष्मा से मुक्त करते हैं । जो घेर कर जकड़ लेने वाले (राक्षस या व्याधि विषाणु हैं, उनसे इन्द्रदेव और अग्निदेव हमें मुक्ति दिलाएँ ॥२०,९६.६॥

यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव ।
तमा हरामि निर्ऋतेरुपस्थादस्पार्शमेनं शतशारदाय ॥२०,९६.७॥

यदि रोगी की आयु क्षीण हो गयी है, यदि वह मृत्यु के समीप गया हुआ है, तो भी हम उसे (मृत्युदेव) निति के समीप से वापस ला सकते हैं। (रोग निवारण विद्या के जानकार)

हमने उसका स्पर्श किया है, जिससेवह सौ वर्ष तक जीवित रहेगा ॥२०,९६.७॥

सहस्राक्षेण शतवीर्येण शतायुषा हविषाहार्षमेनम् ।
इन्द्रो यथैनं शरदो नयात्यति विश्वस्य दुरितस्य पारम् ॥२०,९६.८॥

सहस्र अक्ष (नेत्र या पहलुओं) वाली, शतवीर्य (प्राणवान् तत्त्व) वाली तथा शतायु बनाने वाली आहुतियाँ हमने प्रदान की हैं। उनसे जीवन को सुरक्षित किया है । सम्पूर्ण दुःखों का निवारण करके इन्द्रदेव इन्हें सौ वर्षकी आयु प्रदान करें ॥२०,९६.८॥

शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्तान् छतमु वसन्तान् ।
शतं त इन्द्रो अग्निः सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषाहार्षमेनम् ॥२०,९६.९॥

हे रोगमुक्त मनुष्य ! नित्यमेव वृद्धिशील होते हुए आप एक सौ शरद, एक सौ हेमन्त और एक सौ वसन्त तक सुखपूर्वक जीवित रहें । इन्द्रदेव, अग्निदेव, सवितादेव और बृहस्पतिदेव हविष्यान्न द्वारा परितृप्त होकर आपको सौ वर्ष तक के लिए जीवनी शक्ति प्रदान करें ॥२०,९६.९॥

आहार्षमविदं त्वा पुनरागाः पुनर्णवः ।
सर्वाङ्ग सर्वं ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम् ॥२०,९६.१०॥

हे रोगी मनुष्य ! हम आपको मृत्यु के पास से लौटाकर लाये हैं । यह आपका पुनर्जीवन है । हे सर्वाङ्गस्वस्थ ! आपके लिए समर्थ नेत्रों और आयुष्य को हमने उपलब्ध किया है ॥२०,९६.१०॥

ब्रह्मणाग्निः सम्विदानो रक्षोहा बाधतामितः ।
अमीवा यस्ते गर्भं दुर्णामा योनिमाशये ॥२०,९६.११॥

हमारे स्तोत्रों से प्रसन्न होकर अग्निदेव शरीर की सभी बाधाओं (रोगों) का निवारण करें । हे नारी ! आपके शरीर में जो भी विकार (रोग) प्रत्यक्ष या गोपनीय रूप से विद्यमान हैं, उन सबको अग्निदेव दूर करें ॥२०,९६.११॥

यस्ते गर्भममीवा दुर्णामा योनिमाशये ।
अग्निष्टं ब्रह्मणा सह निष्क्रव्यादमनीनशत्॥२०,९६.१२॥

हे नारी ! जिन असुरों (रोगों) ने आपको पीड़ित किया हैं तथा आपकी सृजन एवं धारण करने की क्षमता को विनष्ट किया है, अग्निदेव उन सबको समाप्त करें, हम उनकी स्तुति करते हैं ॥२०,९६.१२॥

यस्ते हन्ति पतयन्तं निषत्स्नुं यः सरीसृपम् ।
जातं यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि ॥२०,९६.१३॥

हे स्त्री ! विभिन्न रोगों के रूप में जो भी पैशाचिक शक्तियाँ आपके गर्भ को पीड़ित करना चाहती हैं, जो आपकी सन्तानों को पीड़ा पहुँचाती हैं, उन सबको आपके पास से दूर करके नष्ट करते हैं ॥२०,९६.१३॥

यस्त ऊरू विहरत्यन्तरा दम्पती शये ।
योनिं यो अन्तरारेल्हि तमितो नाशयामसि ॥२०,९६.१४॥

हे नारी ! जो विकार (रोग) जाने-अनजाने तुम्हारे शरीर में प्रवेश कर गये हैं तथा जो तुम्हारी सन्तानों को नष्ट करना चाहते हैं, अग्निदेव की सहायता से हम उन सबका विनाश करते हैं ॥२०,९६.१४॥

यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा जारो भूत्वा निपद्यते ।
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि ॥२०,९६.१५॥

हे स्त्री ! जो रोग आपके पास छलपूर्वक भातारूप से, पतिरूप से अथवा उपपति बनकर आता है और आपकी

सन्तति को विनष्ट करने की कामना करता है, उसे हम यहाँ से दूर भगाते हैं ॥२०,९६.१५॥

यस्त्वा स्वप्नेन तमसा मोहयित्वा निपद्यते ।
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि ॥२०,९६.१६॥

हे नारी ! जो रोग स्वप्नवेला और निद्रावस्था में आपको मोह-मुग्ध करके समीप आता है और जो आपकी सन्तति को विनष्ट करने की कामना करता है, उसे हम यहाँ से दूर करते हैं ॥२०,९६.१६॥

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि ।
यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया वि वृहामि ते ॥२०,९६.१७॥

हे रोगिन् ! आपके दोनों नेत्रों, दोनों कानों, दोनों नासिका रन्धों, ठोढ़ी, सिर, मस्तिष्क और जिह्वा से हम रोग को दूर करते हैं ॥२०,९६.१७॥

ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनूक्यात्।
यक्ष्मं दोषण्यमंसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते ॥२०,९६.१८॥

हे रोगिन् ! आपके गर्दन की नाड़ियों, ऊपरी-स्नायुओं, अस्थियों के संधि भागों, कन्धों, भुजाओं और अन्तर्भाग से यक्ष्मारोग का निवारण करते हैं ॥२०,९६.१८॥

हृदयात्ते परि क्लोम्नो हलीक्ष्णात्पार्श्वाभ्याम् ।
यक्ष्मं मतस्नाभ्यां प्लीह्नो यक्नस्ते वि वृहामसि ॥२०,९६.१९॥

(हे मनुष्य !) हम आपके हृदय, फेफड़ों, क्लोम ग्रन्थि (पित्ताशया, दोनों पार्श्व (पसलियों) गुर्दो, तिल्ली, जिगर (लीवर) आदि से रोगों का निवारण करते हैं ॥२०,९६.१९॥

आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोरुदरादधि ।
यक्ष्मं कुक्षिभ्यां प्लाशेर्नाभ्या वि वृहामि ते ॥२०,९६.२०॥

आपकी आँतो, गुदा, नाड़ियों, हृदयस्थान, मूत्राशय, यकृत् और अन्यान्य पाचन तन्त्र के अवयवों से हम रोगों का निवारण करते हैं ॥२०,९६.२०॥

ऊरुभ्यां ते अष्ठीवद्भ्यां पार्ष्णिभ्यां प्रपदाभ्याम् ।
यक्ष्मं भसद्यं श्रोणिभ्यां भासदं भांससो वि वृहामि ते ॥२०,९६.२१॥

हे रोगिन् ! आपकी दोनों जंघाओं, जानुओं, एड़ियों, पंजों, नितम्ब भागों, कटिभागों और गुदाद्वार से हम यक्ष्मा रोग का निवारण करते हैं ॥२०,९६.२१॥

मेहनाद्वनंकरणाल्लोमभ्यस्ते नखेभ्यः ।
यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं वि वृहामि ते ॥२०,९६.२२॥

हम आपके केशों, नखों तथा समस्त शरीर से रोगों का निवारण करते हैं ॥२०,९६.२२॥

अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः स्नावभ्यो धमनिभ्यः ।
यक्ष्मं पाणिभ्यामङ्गुलिभ्यो नखेभ्यो वि वृहामि ते ॥२०,९६.२२॥

हे रोगिन् ! आपकी अस्थियों, मज्जा, नाड़ियों और शरीर के प्रत्येक सन्धि भाग में जहाँ कहीं भी रोगों का निवास है, वहाँ से हम उन्हें दूर करते हैं ॥२०,९६.२३॥

अङ्गेअङ्गे लोम्निलोम्नि यस्ते पर्वणिपर्वणि ।
यक्षं त्वचस्यं ते वयं कश्यपस्य वीबर्हेण विष्वञ्चं वि वृहामसि ॥२०,९६.२३॥

शरीर के प्रत्येक अंग, रोमों (रोमकूपों) शरीर की सभी संधियों, जहाँ भी रोग का प्रभाव है, उन सभी स्थानों से हम उसका निवारण करते हैं ॥२०,९६.२४॥

अपेहि मनसस्पतेऽप काम परश्चर ।
परो निर्ऋत्या आ चक्ष्व बहुधा जीवतो मनः ॥२०,९६.२४॥

हे दुःस्वप्न ! आपने हमारे मन को अपने अधीन कर लिया है। आप यहाँ से दूर भाग जाएँ। दूर देश में जाकर इच्छानुसार विचरण करें । निति देवता जो यहाँ से दूर रहते हैं, उनसे जाकर कहें कि जीवित व्यक्तियों के मनोरथ विस्तृत होते हैं, अतएव वे मनोरथों के विनाशक दुःस्वप्न दर्शन को विनष्ट करें ॥२०,९६.२५॥

सूक्त-९७

वयमेनमिदा ह्योपीपेमेह वज्रिणम् ।
तस्मा उ अद्य समना सुतं भरा नूनं भूषत श्रुते ॥२०,९७.१॥

हम याजकों ने इन्द्रदेव को कल सोमरस से तृप्त किया था, उन्हें आज के यज्ञ में भी सोमरस प्रदान करते हैं। हे याजको ! इस समय स्तोत्रों का गान करके इन्द्रदेव को अलंकृत करें ॥२०,९७.१॥

वृकश्चिदस्य वारण उरामथिरा वयुनेषु भूषति ।
सेमं नः स्तोमं जुजुषाण आ गहीन्द्र प्र चित्रया धिया ॥२०,९७.२॥

भेड़िये जैसे क्रूर शत्रु भी इन्द्रदेव के समक्ष अनुकूल हो जाते हैं । वे (इन्द्रदेव) हमारी प्रार्थनाओं को स्वीकार करते हुए हमें उत्कृष्ट चिन्तन, संयुक्त विवेक- बुद्धि प्रदान करें ॥२०,९७.२॥

कदु न्वस्याकृतमिन्द्रस्यास्ति पौंस्यम् ।
केनो नु कं श्रोमतेन न शुश्रुवे जनुषः परि वृत्रहा ॥२०,९७.३॥

ऐसा कौन सा पुरुषार्थ है, जिसको इन्द्रदेव ने (प्रभावित नहीं किया तथा उनकी वीरता की गाथाएँ किसने नहीं सुनी? वृत्र का संहार करने वाले इन्द्रदेव बचपन से ही विख्यात हैं ॥२०,९७.३॥

सूक्त-९८

त्वामिद्धि हवामहे साता वाजस्य कारवः ।
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः ॥२०,९८.१॥

हे इन्द्रदेव ! हम स्तोतागण अन्न प्राप्ति की कामना से आपका आवाहन करते हैं। आप सज्जनों के रक्षक हैं । शत्रु को जीतने के निमित्त आपका आवाहन करते हैं ॥२०,९८.१॥

स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया मह स्तवानो अद्रिवः ।
गामश्वं रथ्यमिन्द्र सं किर सत्रा वाजं न जिग्युषे ॥२०,९८.२॥

विपुल पराक्रमी, वज्रधारी, बलधारक हे इन्द्रदेव ! अपनी असुरजयी शक्ति से महान् हुए आप हमारी स्तुतियों से प्रसन्न होकर हम साधकों को पशुधन तथा ऐश्वर्य प्रदान करें ॥२०,९८.२॥

सूक्त-९९

अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिरायवः ।
समीचीनास ऋभवः समस्वरन् रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम् ॥२०,९९.१॥

हे इन्द्रदेव ! प्राचीनकाल से ही ऋभुगणों तथा रुद्रों (उग्रवीरों) द्वारा आपकी स्तुति की जाती रही है। याजकगण स्तुति करते हुए सोमपान के लिए सर्वप्रथम आपको ही बुलाते हैं ॥२०,९९.१॥

अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्यं शवो मदे सुतस्य विष्णवि ।
अद्या तमस्य महिमानमायवोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा ॥२०,९९.२॥

वे इन्द्रदेव सोमरस का सेवन करके अत्यधिक आनन्दित होकर यजमान के वीर्य और बल को बढ़ाते हैं, अतएव स्तोतागण आज भी उनकी महिमा का वर्णन करते हैं ॥२०,९९.२॥

सूक्त-१००

अधा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा कामान् महः ससृज्महे ।
उदेव यन्त उदभिः ॥२०,१००.१॥

स्तोत्रों से पूजित हे इन्द्रदेव ! आपके पास हम लोग बड़ी-बड़ी कामनाएँ लेकर उसी प्रकार आते हैं, जैसे जल स्वभावत: जल भण्डारों की ओर (नाले नदी की ओर तथा नदियाँ समुद्र की ओर) प्रवाहित होता है ॥२०,१००.१॥

वार्ण त्वा यव्याभिर्वर्धन्ति शूर ब्रह्माणि ।
वावृध्वांसं चिदद्रिवो दिवेदिवे ॥२०,१००.२॥

वज्रधारी, शूरवीर हे इन्द्रदेव ! जैसे नदियों के जल से समुद्र की गरिमा बढ़ती है, उसी तरह हम अपनी स्तुतियों से आपकी गरिमा का विस्तार करते हैं ॥२०,१००.२॥

युञ्जन्ति हरी इषिरस्य गाथयोरौ रथ उरुयुगे ।
इन्द्रवाहा वचोयुजा ॥२०,१००.३॥

गमनशील इन्द्रदेव के महान् रथ में संकेत मात्र से ही दो श्रेष्ठ घोड़े नियोजित हो जाते हैं। स्तोतागण उन्हें स्तोत्रों से नियोजित करते हैं ॥२०,१००.३॥

सूक्त-१०१

अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥२०,१०१.१॥

हे सर्वज्ञाता अग्निदेव ! आप यज्ञ के विशेषज्ञ हैं, समस्त देवशक्तियों को तुष्ट करने की सामर्थ्य रखते हैं। आप यज्ञ की विधि-व्यवस्था के स्वामी हैं। ऐसे समर्थ आपको देवदूत रूप में हम स्वीकार करते हैं ॥२०,१०१.१॥

अग्निमग्निं हवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम् ।
हव्यवाहं पुरुप्रियम् ॥२०,१०१.२॥

प्रजापालक, देवों तक हवि पहुँचाने वाले, परमप्रिय, कुशल नेतृत्व प्रदान करने वाले हे अग्निदेव ! हम याजकगण हवनीय मंत्रों से आपको सदा बुलाते हैं ॥२०,१०१.२॥

अग्ने देवामिहा वह जज्ञानो वृक्तबर्हिषे ।
असि होता न ईड्यः ॥२०,१०१.३॥

हे स्तुत्य अग्निदेव ! आप अरणिमन्थन से उत्पन्न हुए हैं। विस्तृत कुशाओं पर बैठे हुए यजमान पर अनुग्रह करने हेतु आप (यज्ञ की) हवि ग्रहण करने वाले देवताओं को इस यज्ञ में बुलाएँ ॥२०,१०१.३॥

सूक्त-१०२

ईलेन्यो नमस्यस्तिरस्तमांसि दर्शतः ।
समग्निरिध्यते वृषा ॥२०,१०२.१॥

स्तुत्य, प्रणम्य, अन्धकार नाशक, दर्शनीय और शक्तिशाली हे अग्निदेव ! आप आहुतियों द्वारा भली प्रकार प्रज्वलित तथा संवर्द्धित किये जाते हैं ॥२०,१०२.१॥

वृषो अग्निः समिध्यतेऽश्वो न देववाहनः ।
तं हविष्मन्तः ईलते ॥२०,१०२.२॥

बलशाली अश्व जैसे राजा के वाहन को खींचकर ले जाते हैं, उसी प्रकार अग्निदेव देवताओं तक हवि पहुँचाते हैं। उत्तम प्रकार से प्रदीप्त हुए अग्निदेव यजमान की स्तुतियों को प्राप्त करते हैं ॥२०,१०२.२॥

वृषणं त्वा वयं वृषन् वृषणः समिधीमहि ।
अग्ने दीद्यतं बृहत्॥२०,१०२.३॥

हे अग्ने ! घृतादियुक्त हवि प्रदान करने वाले हम, शक्तिशाली, तेजस्वी और महान् आपको प्रदीप्त करते हैं ॥२०,१०२.३॥

सूक्त-१०३

अग्निमीलिष्वावसे गाथाभिः शीरशोचिषम् ।
अग्निं राये पुरुमील्ह श्रुतं नरोऽग्निं सुदीतये छर्दिः ॥२०,१०३.१॥

हे स्तोताओ !विस्तृत-विकराल ज्वालाओं वाले अग्निदेव की स्तुति करो। उद्गातागण उन प्रसिद्ध अग्निदेव से धन तथा श्रेष्ठ प्रकाशयुक्त आवास-प्राप्ति हेतु प्रार्थना करते हैं ॥२०,१०३.१॥

अग्न आ याह्यग्निभिर्होतारं त्वा वृणीमहे ।
आ त्वामनक्तु प्रयता हविष्मती यजिष्ठं बर्हिरासदे ॥२०,१०३.२॥

हे अग्निदेव ! आप देवों को बुलाने वाले हैं, हमारी प्रार्थना सुनकर अपनी अग्नियों (विशिष्ट शक्तियों) सहित यहाँ पधारें । हे पूज्य अग्निदेव ! अध्वर्यु के द्वारा प्रदत्त आसन पर आपके प्रतिष्ठित होने पर, हम आपका पूजन करें ॥२०,१०३.२॥

अछ हि त्वा सहसः सूनो अङ्गिरः स्रुचश्चरन्त्यध्वरे ।
ऊर्जो नपातं घृतकेशमीमहेऽग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् ॥२०,१०३.३॥

बल से उत्पन्न सर्वत्र गमनशील हे अग्निदेव ! आप तक हविष्यान्न पहुँचाने के लिए यह हवि पात्र सक्रिय है । शक्ति का ह्रास रोकने वाले अभीष्टदाता, तेजस्वी, ज्वालाओं से युक्त आपकी म यज्ञस्थल पर प्रार्थना करते हैं ॥२०,१०३.३॥

सूक्त-१०४

इमा उ त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम ।
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभि स्तोमैरनूषत ॥२०,१०४.१॥

हे ऐश्वर्यवान् इन्द्रदेव ! हमारी स्तुतियाँ आपकी कीर्ति को बढ़ाएँ। अग्नि के समान प्रखर पवित्रात्मा और विद्वान् साधक स्तोत्रों द्वारा आपकी प्रार्थना करते हैं ॥२०,१०४.१॥

अयं सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्र इव पप्रथे ।
सत्यः सो अस्य महिमा गृने शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये ॥२०,१०४.२॥

ये इन्द्रदेव हजारों ऋषियों के स्तुतिबल को पाकर प्रख्यात और समुद्र की तरह विस्तृत हुए हैं। इनकी सत्यनिष्ठा और शक्ति प्रसिद्ध है। यज्ञों में स्तोत्रगान करते हुए इनका सम्मान किया जाता है ॥२०,१०४.२॥

आ नो विश्वासु हव्य इन्द्रः समत्सु भूषतु ।
उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहा परमज्या ऋचीषमः ॥२०,१०४.३॥

संग्राम में रक्षा के लिए बुलाने योग्य, वृत्रहन्ता, धनुष की श्रेष्ठ प्रत्यंचा के समान, उत्तम मंत्रों से स्तुत्य हे इन्द्रदेव ! हमारे (तीनों) सवनों एवं स्तोत्रों को आप सुशोभित करें ॥२०,१०४.३॥

त्वं दाता प्रथमो राधसामस्यसि सत्य ईशानकृत्।
तुविद्युम्नस्य युज्या वृणीमहे पुत्रस्य शवसो महः ॥२०,१०४.४॥

हे इन्द्रदेव ! आप सर्वप्रथम धनदाता हैं । ऐश्वर्य प्रदान करने वाले हैं । आपसे हम पराक्रमी एवं श्रेष्ठ संतानों की कामना करते हैं ॥२०,१०४.४॥

सूक्त-१०५

त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः ।
अशस्तिहा जनिता विश्वतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः ॥२०,१०५.१॥

हे इन्द्रदेव ! आप संग्राम में शत्रुओं को पराजित करने वाले हैं। सबके जन्मदाता आप, पालन न करने वालों एवं असुरों को नष्ट करने वाले हैं ॥२०,१०५.१॥

अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुं न मातरा ।
विश्वास्ते स्पृधः श्नथयन्त मन्यवे वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि ॥२०,१०५.२॥

हे इन्द्रदेव ! जिस प्रकार माता-पिता अपने शिशु की रक्षा में तत्पर रहते हैं। आकाश और पृथ्वी उसी प्रकार शत्रुसंहारक आपके बलों के संरक्षक होते हैं। जब आप वृत्रासुर का वध करते हैं, तब आपके क्रोध के समक्ष युद्ध के लिए तत्पर शत्रुपक्ष कमजोर पड़ जाता है ॥२०,१०५.२॥

इत ऊती वो अजरं प्रहेतारमप्रहितम् ।

आशुं जेतारं हेतारं रथीतममतूर्तं तुग्र्यावृधम् ॥२०,१०५.३॥

हे साधको ! शत्रुसंहारक, सर्वप्रेरक, वेगवान्, यज्ञस्थल पर जाने वाले, उत्तम रथी, अहिंसनीय, जलवृष्टि करने वाले तथा अजर-अमर इन्द्रदेव का अपने संरक्षण के लिए आवाहन करो ॥२०,१०५.३॥

यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः ।
विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठो यो वृत्रहा गृणे ॥२०,१०५.४॥

मानवों के अधिपति, वेगवान्, शत्रु-सेना के संहारक, वृत्रहन्ता, श्रेष्ठ इन्द्रदेव की हम स्तुति करते हैं ॥२०,१०५.४॥

इन्द्रं तं शुम्भ पुरुहन्मन्न् अवसे यस्य द्विता विधर्तरि ।
हस्ताय वज्रः प्रति धायि दर्शतो महो दिवे न सूर्यः ॥२०,१०५.५॥

हे साधको ! अपनी रक्षा के लिए देवराज इन्द्र की उपासना करो। जिनके संरक्षण में (देवत्व की रक्षा एवं (असुरता के विनाश की दोहरी शक्ति है । वे इन्द्रदेव, सूर्य के समान तेजस्वी वज्र को हाथ में धारण करते हैं ॥२०,१०५.५॥

सूक्त-१०६

तव त्यदिन्द्रियं बृहत्तव शुष्ममुत क्रतुम् ।
वज्रं शिशाति धिषणा वरेण्यम् ॥२०,१०६.१॥

हे इन्द्र ! हमारी प्रार्थनाएँ आपके शौर्य, सामर्थ्य, कुशलता, पराक्रम और श्रेष्ठ वज्र को तेजस्वी बनाती हैं॥२०,१०६.१॥

तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं पृथिवी वर्धति श्रवः ।
त्वामापः पर्वतासश्च हिन्विरे ॥२०,१०६.२॥

हे इन्द्रदेव ! अन्तरिक्ष से आपकी शक्ति-सामर्थ्य का और पृथ्वी से आपके यशस्वी स्वरूप का विस्तार है। जल प्रवाह और पर्वत (मेघ) आपको अपना अधिपति मानकर आपके पास पहुँचते हैं ॥२०,१०६.२॥

त्वां विष्णुर्बृहन् क्षयो मित्रो गृणाति वरुणः ।
त्वां शर्धो मदत्यनु मारुतम् ॥२०,१०६.३॥

हे इन्द्रदेव ! महान् आश्रयदाता मान करके विष्णु, मित्र और क्रुणादि देवता आपका स्तुतिगान करते हैं। मरुद्गणों के बल से आप हर्षित होते हैं ॥२०,१०६.३॥

सूक्त-१०७

समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः ।
समुद्रायेव सिन्धवः ॥२०,१०७.१॥

समस्त प्रजाएँ उग्र इन्द्रदेव के प्रति नमनपूर्वक उसी प्रकार आकर्षित होती हैं, जैसे सभी नदियाँ समुद्र में मिलने के लिए वेग से जाती हैं ॥२०,१०७.१॥

ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत्समवर्तयत्।
इन्द्रश्चर्मेव रोदसी ॥२०,१०७.२॥

इन्द्रदेव का वह ओजस्(बल) अत्यन्त प्रभावयुक्त है, जिससे वे द्युलोक से पृथ्वी लोक तक आवरण के समान फैलकर सुरक्षा करते हैं ॥२०,१०७.२॥

वि चिद्वृत्रस्य दोधतो वज्रेण शतपर्वणा ।
(शिरो बिभेद्वृष्णिना ॥२०,१०७.३॥

संसार को भयभीत करने वाले (कम्पित करने वाले) वृत्रासुर के सिर को शक्ति सम्पन्न इन्द्रदेव ने अपने तीक्ष्ण प्रहार वाले वज्र से अलग कर दिया ॥२०,१०७.३॥

तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेषनृम्णः ।
सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रून् अनु यदेनं मदन्ति विश्व ऊमाः ॥२०,१०७.४॥

संसार का कारणभूत ब्रह्म स्वयं ही सब लोकों में प्रकाशरूप में संव्याप्त हुआ, जिससे प्रचण्ड तेजस्वी बल से युक्त (इन्द्रदेव देव का प्राकट्य हुआ। जिनके प्रकट होते ही शत्रु नष्ट हो जाते हैं। उन्हें देखकर सभी प्राणी हर्षित हो उठते हैं ॥२०,१०७.४॥

वावृधानः शवसा भूर्योजाः शत्रुर्दासाय भियसं दधाति ।
अव्यनच्च व्यनच्च सस्नि सं ते नवन्त प्रभृता मदेषु ॥२०,१०७.५॥

अपनी सामर्थ्य से वृद्धि को प्राप्त हुए, अनन्त शक्तियों से युक्त, दुष्टों के शत्रु इन्द्रदेव शत्रुओं के अन्त:करण में भय उत्पन्न करते हैं। वे सभी चर-अचर प्राणियों को संचालित करते हैं । ऐसे देव की हम(याजकगण) सम्मिलित रूप से,

एक साथ स्तुति करके उन्हें तथा स्वयं को आनन्दित करते हैं ॥२०,१०७.५॥

त्वे क्रतुमपि पृञ्चन्ति भूरि द्विर्यदेते त्रिर्भवन्त्यूमाः ।
स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः ॥२०,१०७.६॥

हे इन्द्रदेव ! सभी यजमान आपके लिए ही अनुष्ठान करते हैं। जब यजमान विवाहोपरान्त दो तथा एक सन्तान के बाद तीन होते हैं , प्रिय लगने वाले (सन्तान) को प्रिय (धन या गुणों) से युक्त करें। बाद में इस प्रिय सन्तान को पुत्र-पौत्रादि की मधुरता से युक्त करें ॥२०,१०७.६॥

यदि चिन् नु त्वा धना जयन्तं रणेरणे अनुमदन्ति विप्राः ।
ओजीयः शुष्मिन्त्स्थिरमा तनुष्व मा त्वा दभन् दुरेवासः कशोकाः ॥२०,१०७.७॥

कभी पराजित न होने वाले हे इन्द्रदेव ! युद्धों में आप सदैव अपने पराक्रम से धन-सम्पदाओं पर विजय प्राप्त करते हैं । ब्रह्मनिष्ठ साधक (याजको ऐसे अवसरों पर आपकी स्तुति करते हैं। आप स्तोताओं को तेजस्विता प्रदान करें । दुस्साहसी असुर कभी आपको पराभूत न कर सकें ॥२०,१०७.७॥

त्वया वयं शाशद्महे रणेषु प्रपश्यन्तो युधेन्यानि भूरि ।
चोदयामि त आयुधा वचोभिः सं ते शिशामि ब्रह्मणा वयांसि
॥२०,१०७.८॥

हे इन्द्रदेव ! आपके सहयोग से हम रणभूमि में दुष्ट शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हैं। युद्ध की इच्छा से प्रेरित अनेक शत्रुओं पर हम दृष्टि रखते हैं। आपके वज्रादि आयुधों को हम स्तोत्रों द्वारा प्रोत्साहित करते हैं । स्तुति मंत्रों से हम आपकी तेजस्विता को तीक्ष्ण करते हैं ॥२०,१०७.८॥

नि तद्दधिषेऽवरे परे च यस्मिन्न् आविथावसा दुरोणे ।
आ स्थापयत मातरं जिगत्नुमत इन्वत कर्वराणि भूरि
॥२०,१०७.९॥

है इन्द्रदेव ! आप जिस यजमान के घर में हविरूप अन्न से परितृप्त होते हैं, उसे दिव्य और भौतिक सम्पदाएँ प्रदान करते हैं। समस्त प्राणियों के निर्माता, गतिशील द्‌युलोक और पृथ्वीलोक को आप ही सुस्थिर करते हैं। उस समय आपको अनेक कार्यों का निर्वाह करना पड़ता है ॥२०,१०७.९॥

स्तुष्व वर्ष्मन् पुरुवर्त्मानं समृभ्वाणमिनतममाप्तमाप्त्यानाम् ।
आ दर्शति शवसा भूर्योजाः प्र सक्षति प्रतिमानं पृथिव्याः ॥२०,१०७.१०॥

स्तुत्य, विभिन्न स्वरूपों वाले, दीप्तिमान्, सर्वेश्वर और सर्वश्रेष्ठ इन्द्रदेव की हम स्तुति करते हैं । वे अपनी सामर्थ्य से आसुरी वृत्तियों का विनाश करें तथा पृथ्वी पर यज्ञीय प्रतिमानों को प्रतिष्ठित करें ॥२०,१०७.१०॥

इमा ब्रह्म बृहद्दिवः कृणवदिन्द्राय शूषमग्रियः स्वर्षाः ।
महो गोत्रस्य क्षयति स्वराजा तुरश्चिद्विश्वमर्णवत्तपस्वान् ॥२०,१०७.११॥

ऋषियों में श्रेष्ठ और स्वर्गलोक के आकांक्षी बृहद्दिव (बृहद् आकाश तक गति वाले) ऋषि इन्द्रदेव को सुख प्रदान करने के लिए ही इन वैदिक मन्त्रों का पाठ करते हैं। वे तेजस्वी, दीप्तिमान् इन्द्रदेव विशाल पर्वतों (अवरोध)को हटाते हैं तथा शत्रुपुरियों के सभी द्वारों के उद्घाटक हैं ॥२०,१०७.११॥

एवा महान् बृहद्दिवो अथर्वावोचत्स्वां तन्वमिन्द्रमेव ।

स्वसारौ मातरिभ्वरी अरिप्रे हिन्वन्ति चैने शवसा वर्धयन्ति च ॥२०,१०७.१२॥

अथर्वा ऋषि के पुत्र महाप्राज्ञ बृहद्दिव ने इन्द्रदेव के लिए अपनी बृहद् स्तुतियों का उच्चारण किया। माता सदृश भूमि पर उत्पन्न पवित्र नदियाँ, पारस्परिक भगिनी तुल्य स्नेह से जल प्रवाहित करती हैं तथा अन्नबल से लोगों का कल्याण करती हैं ॥२०,१०७.१२॥

चित्रं देवानां केतुरनीकं ज्योतिष्मान् प्रदिशः सूर्य उद्यन् । दिवाकरोऽति द्युम्नैस्तमांसि विश्वातारीद्दुरितानि शुक्रः ॥२०,१०७.१३॥

वीर पराक्रमी, पूजनीय, तेजस्वी प्रकाश किरणों से सम्पन्न, सभी दिशाओं को प्रकाशित करने वाले तथा अन्धकार को दूर करने वाले सूर्यदेव (इन्द्रदेव) समस्त पापों को विनष्ट कर डालते हैं ॥२०,१०७.१३॥

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आप्राद्द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥२०,१०७.१४॥

जंगम, स्थावर जगत् के आत्मारूप सूर्यदेव, दैवी शक्तियों के अद्भुत तेज के समूह सहित उदित हो गये हैं। मित्र, वरुण आदि के चक्षु रूप इन सूर्यदेव ने उदय होते ही द्युलोक, पृथ्वीलोक तथा अन्तरिक्ष को अपने तेज से भर दिया है ॥२०,१०७.१४॥

सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां मर्यो न योषामभ्येति पश्चात्।
यत्रा नरो देवयन्तो युगानि वितन्वते प्रति भद्राय भद्रम् ॥२०,१०७.१५॥

प्रथम दीप्तिमान् और तेजस्विता युक्त देवी उषा के पीछे सूर्यदेव उसी प्रकार अनुगमन करते हैं, जिस प्रकार पुरुष नारी का अनुगमन करते हैं। जहाँ देवत्व के उच्च लक्ष्य को पाने के लिए साधक यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म सम्पन्न करते हैं, वहाँ उन साधकों एवं कल्याणकारी यज्ञीय कर्मों को सूर्यदेव अपने प्रकाश से प्रकाशित करते हैं ॥२०,१०७.१५॥

सूक्त-१०८

त्वं न इन्द्रा भरमोजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे ।
आ वीरं पृतनाषहम् ॥२०,१०८.१॥

अनेक कार्यों के सम्पादनकर्ता, ज्ञानी, हे इन्द्रदेव ! आप हमें शक्ति एवं ऐश्वर्य से परिपूर्ण करें तथा शत्रुओं को जीतने वाला पुत्र भी प्रदान करें ॥२०,१०८.१॥

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ ।
अधा ते सुम्नमीमहे ॥२०,१०८.२॥

सबको आश्रय देने वाले शतकर्मा हे इन्द्रदेव ! आप पिता तुल्य पालन करने वाले और माता तुल्य धारण करने वाले हैं। हम आपके पास सुख माँगने के लिए आते हैं ॥२०,१०८.२॥

त्वां शुष्मिन् पुरुहूत वाजयन्तमुप ब्रुवे शतक्रतो ।
स नो रास्व सुवीर्यम् ॥२०,१०८.३॥

असंख्यों द्वारा स्तुत्य, बलवान्, प्रशंसित, शक्तिशाली हे इन्द्रदेव ! हम आपकी स्तुति करते हुए कामना करते हैं कि हमें उत्तम, तेजस्वी सामर्थ्य प्रदान करें ॥२०,१०८.३॥

सूक्त-१०९

स्वादोरित्था विषुवतो मध्वः पिबन्ति गौर्यः ।
या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभसे वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥२०,१०९.१॥

भक्तों पर कृपावृष्टि करने वाले इन्द्र (सूर्य) देव के साथ गौएँ (किरणे) आनन्दपूर्वक शोभायमान हैं। वे भूमि पर स्वराज्य की मर्यादा के अनुरूप उत्पन्न सुस्वाद मधुर रस का पान करती हैं ॥२०,१०९.१॥

ता अस्य पृशनायुवः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः ।
प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रं हिन्वन्ति सायकं वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥२०,१०९.२॥

इन्द्रदेव (सूर्य) का स्पर्श करने वाली धवल गौएँ (किरणें) दूध (पोषण प्रदान करती हैं तथा उनके वज्र को प्रेरणा देती हुई स्वराज्य में ही रहती हैं ॥२०,१०९.२॥

ता अस्य नमसा सहः सपर्यन्ति प्रचेतसः ।

व्रतान्यस्य सश्चिरे पुरूणि पूर्वचित्तये वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥२०,१०९.३॥

ज्ञानयुक्त वे (किरणें) इन्द्रदेव के प्रभाव का पूजन करती हैं। पूर्व में हो चुके को समझने वाली वे किरणें इन्द्रदेव द्वारा पहले किये गये कार्यों का स्मरण दिलाती हैं और स्वराज्य के अनुशासन में ही रहती हैं ॥२०,१०९.३॥

सूक्त-११०

इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः ।
अर्कमर्चन्तु कारवः ॥२०,११०.१॥

हम स्तोतागण स्तुतियों द्वारा, इन्द्रदेव के निमित्त निकाले गये आनन्दमयी प्रकृति वाले दिव्य सोमरस की प्रशंसा करते हैं ॥२०,११०.१॥

यस्मिन् विश्वा अधि श्रियो रणन्ति सप्त संसदः ।
इन्द्रं सुते हवामहे ॥२०,११०.२॥

उन कान्तिमान् इन्द्रदेव का हम सोमयज्ञ में आवाहन करते हैं, जिनकी स्तुति यज्ञ के सातों श्रुत्व करते हैं॥२०,११०.२॥

त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत ।
तमिद्वर्धन्तु नो गिरः ॥२०,११०.३॥

प्रेरणादायीं, उत्साह बढ़ाने वाले, तीन चरणों में सम्पन्न होने वाले यज्ञ का विस्तार देवगण करते हैं । साधकगण उस यज्ञ की प्रशंसा करते हैं ॥२०,११०.३॥

सूक्त-१११

यत्सोममिन्द्र विष्णवि यद्वा घ त्रित आप्त्ये ।
यद्वा मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः ॥२०,१११.१॥

हे इन्द्रदेव ! यज्ञों में विष्णु के उपस्थित होने के बाद आपने सोमपान किया था । त्रितआप्त्य एवं मरुद्गणों के साथ सोमरस के सेवन से आनन्दित होने वाले आप हमारे यज्ञ में भी सोमपान करके आनन्दित हों ॥२०,१११.१॥

यद्वा शक्र परावति समुद्रे अधि मन्दसे ।
अस्माकमित्सुते रणा समिन्दुभिः ॥२०,१११.२॥

हे इन्द्रदेव ! जिस प्रकार सुदूर क्षेत्र में सोमरस पान करके आप हर्षित होते हैं, उसी प्रकार हमारे यज्ञ में भी सोमपान करके हर्षित हों ॥२०,१११.२॥

यद्वासि सुन्वतो वृधो यजमानस्य सत्पते ।
उक्थे वा यस्य रण्यसि समिन्दुभिः ॥२०,१११.३॥

हे सत्य के पालक इन्द्रदेव ! आप जिस याजक के यज्ञ में विधिवत् सोमपान करके आनन्दित होते हैं । उस याजक को आप बढ़ाते हैं ॥२०,१११.३॥

सूक्त-११२

यदद्य कच्च वृत्रहन्न् उदगा अभि सूर्य ।
(सर्वं तदिन्द्र ते वशे ॥२०,११२.१॥

वृत्र संहारक हे इन्द्रदेव ! आपसे प्रकाशित होने वाला सब कुछ (सम्पूर्ण जगत् आपके ही अधिकार में है॥२०,११२.१॥

यद्वा प्रवृद्ध सत्पते न मरा इति मन्यसे ।
उतो तत्सत्यमित्तव ॥२०,११२.२॥

प्रगति करने वाले तथा सज्जनों का पालन करने वाले हैं इन्द्रदेव ! आप स्वयं को अमर मानते हैं, आपका ऐसा मानना ही यथार्थ है ॥२०,११२.२॥

ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे ।
सर्वांस्तामिन्द्र गछसि ॥२०,११२.३॥

हे इन्द्रदेव ! जो सोमरस दूर या निकट के स्थानों पर अभिषुत किया जाता है, आप उन समस्त स्थानों पर पधारते हैं ॥२०,११२.३॥

सूक्त-११३

उभयं श‍ृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः ।
सत्राच्या मघवा सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत्॥२०,११३.१॥

धनवान् और बलवान् हे इन्द्रदेव ! हमारी दोनों प्रकार की प्रार्थनाओं को समीप आकर सुनें । सामूहिक उपासना से प्रसन्न होकर आप सोमपान के लिए यहाँ पधारें ॥२०,११३.१॥

तं हि स्वराजं वृषभं तमोजसे धिषणे निष्टतक्षतुः ।
उतोपमानां प्रथमो नि षीदसि सोमकामं हि ते मनः ॥२०,११३.२॥

आकाश और पृथ्वी नै वृष्टिकर्ता, समर्थ और तेजस्वी इन्द्रदेव को प्रकट या नियुक्त किया है । हे इन्द्रदेव ! आप उपमानों में सर्वश्रेष्ठ । आप सोमपान की इच्छा से यज्ञवेदी पर विराजमान होते हैं ॥२०,११३.२॥

सूक्त-११४

अभ्रातृव्योऽना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि ।
युधेदापित्वमिछसे ॥२०,११४.१॥

हे इन्द्रदेव ! आप जन्म से ही भातृ संघर्ष से मुक्त हैं। आप पर शासन करने वाला कोई नहीं है और न ही सहायता करने वाला कोई मित्र । आप युद्ध (जन संरक्षण) द्वारा अपने सहयोगियों (मित्रों) और भक्तों को पाने की कामना करते हैं ॥२०,११४.१॥

नकी रेवन्तं सख्याय विन्दसे पीयन्ति ते सुराश्वः ।
यदा कृणोषि नदनुं समूहस्यादित्पितेव हूयसे ॥२०,११४.२॥

है इन्द्रदेव ! आप (यज्ञ, दान आदि से रहित) धनाभिमानी को मित्र नहीं बनाते हैं। सुरा पीकर मदान्ध (अमर्यादित लोग) आपको दुखी करते हैं। ज्ञान एवं गुण-सम्पन्नों को मित्र बनाकर आप उन्नति पथ पर चलाते हैं, जिससे आप पिता तुल्य सम्मान प्राप्त करते हैं ॥२०,११४.२॥

सूक्त-११५

अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ ।
अहं सूर्य इवाजनि ॥२०,११५.१॥

हमने यज्ञरूप इन्द्र की बुद्धि को अपनी ओर आकर्षित कर लिया है, इससे सूर्य सदृश तेजोयुक्त हो गये हैं॥२०,११५.१॥

अहं प्रत्नेन मन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत्।
येनेन्द्रः शुष्ममिद्दधे ॥२०,११५.२॥

कण्व ऋषि के सदृश हमने इन्द्र को उन स्तोत्रों से सुशोभित किया, जिनके प्रभाव से वे शक्तिसम्पन्न बनते हैं॥२०,११५.२॥

ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुर्ऋषयो ये च तुष्टुवुः ।
ममेद्वर्धस्व सुष्टुतः ॥२०,११५.३॥

हे इन्द्रदेव ! आपकी स्तुति न करने वाले तथा आपके निमित्त स्तुति करने वाले ऋषिगणों के मध्य भी हमारे स्तोत्र

प्रशंसनीय हैं। आप उन स्तोत्रों के प्रभाव से भली प्रकार परिपुष्ट हों ॥२०,११५.३॥

सूक्त-११६

मा भूम निष्ट्या इवेन्द्र त्वदरणा इव ।
वनानि नि प्रजहितान्यद्रिवो दुरोषासो अमन्महि ॥२०,११६.१॥

हे इन्द्रदेव ! आपकी कृपा से हमारा पतन न हो और न ही हम दुःखी हों । पतझड़ में शाखाविहीन वृक्षों के समान म सन्तानरहित न हों । हे इन्द्रदेव ! हम आपके घरों में सुरक्षित रहकर आपकी स्तुति करते हैं ॥२०,११६.१॥

अमन्महीदनाशवोऽनुग्रासश्च वृत्रहन् ।
सुकृत्सु ते महता शूर राधसानु स्तोमं मुदीमहि ॥२०,११६.२॥

हे वृत्रहन्ता इन्द्रदेव ! हम हड़बड़ाहट तथा क्रोधरहित होकर आपका स्तवन करें । हे वीर इन्द्रदेव ! आपके निमित्त हम भले ही जीवन में एक बार ही यज्ञ करें, पर प्रचुर धन-धान्य से सम्पन्न होकर करें ॥२०,११६.२॥

सूक्त-११७

पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः ।
सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नार्वा ॥२०,११७.१॥

हे भूरेवर्ण के अश्वों से युक्त इन्द्रदेव ! आप आनन्ददायक सोमरस का पान करें। संचालक के बाहुओं से सुनियंत्रित घोड़े के समान (यज्ञशाला में) सुरक्षित रखे गये पत्थर के द्वारा आपके लिए सोम निकाला जाता है॥२०,११७.१॥

यस्ते मदो युजस्चारुरस्ति येन वृत्राणि हर्यश्व हंसि ।
स त्वामिन्द्र प्रभूवसो ममत्तु ॥२०,११७.२॥

हरि नामक अश्वों के स्वामी हे समृद्धिशाली इन्द्रदेव ! जिस सोमरस के उत्साह द्वारा आप वृत्रासुर (दुष्टों) का हनन करते हैं, वह श्रेष्ठ रस आपको आनंद प्रदान करे ॥२०,११७.२॥

बोधा सु मे मघवन् वाचमेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम् ।
इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व ॥२०,११७.३॥

हे इन्द्रदेव ! विशिष्ट याजक (वसिष्ठ) गुणगान करते हुए, जिस श्रेष्ठ वाणी से आपकी अर्चना कर रहे हैं, उसे आप भली-भाँति विचारपूर्वक स्वीकार करें तथा यज्ञस्थल पर इस (ज्ञानयुक्त) हविष्य को ग्रहण करें ॥२०,११७.३॥

सूक्त-११८

शग्ध्यू षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
भगं न हि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि ॥२०,११८.१॥

हे शचीपति, शूरवीर इन्द्रदेव ! सब प्रकार के रक्षा-साधनों के साथ आप हमें अभीष्ट फल प्रदान करें । सौभाग्ययुक्त धन प्रदान करने वाले आपकी हम आराधना करते हैं ॥२०,११८.१॥

पौरो अश्वस्य पुरुकृद्गवामस्युत्सो देव हिरण्ययः ।
नकिर्हि दानं परिमर्धिषत्त्वे यद्यद्यामि तदा भर ॥२०,११८.२॥

हे इन्द्रदेव ! आप गौओं (इन्द्रियों, पोषण-प्रवाहों) तथा अश्वों (पुरुषार्थ एवं शक्ति प्रवाहों) को बढ़ाने वाले हैं। आप स्वर्ण सम्पदा के स्रोत हैं। आपके अनुदानों को विस्मृत करने की सामर्थ्य किसी में नहीं है, आप हमें अभीष्ट फलों से परिपूर्ण करें ॥२०,११८.२॥

इन्द्रमिद्देवतातये इन्द्रं प्रयत्यध्वरे ।

इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये ॥२०,११८.३॥

दैवी प्रयोजनों के लिए किये गये यज्ञों में हम याजकगण जिस प्रकार यज्ञ के प्रारम्भ और उसकी समाप्ति के समय इन्द्रदेव का आवाहन करते हैं, वैसे ही धन प्राप्ति की कामना से भी बलशाली इन्द्रदेव को आवाहित करते हैं ॥२०,११८.३॥

इन्द्रो मह्ना रोदसी पप्रथच्छव इन्द्रः सूर्यमरोचयत्।
इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिर इन्द्रे सुवानास इन्दवः ॥२०,११८.४॥

ऐश्वर्यशाली इन्द्रदेव ने अपनी सामर्थ्य से द्युलोक और पृथ्वी को विस्तृत किया । इन्द्रदेव ने ही सूर्यदेव को आलोकयुक्त किया। इन्द्रदेव ने ही सभी लोकों को आश्रय प्रदान किया। ऐसे इन्द्रदेव के लिए ही यह सोमरस समर्पित है ॥२०,११८.४॥

सूक्त-११९

अस्तावि मन्म पूर्व्यं ब्रह्मेन्द्राय वोचत ।
पूर्वीर्ऋतस्य बृहतीरनूषत स्तोतुर्मेधा असृक्षत ॥२०,११९.१॥

हे ऋत्विजों ! आपने पूर्व यज्ञों में बृहत छन्द में सामगान किया था। अब आप इन्द्रदेव के लिए सनातन कण्ठस्थ स्तोत्रों का पाठ करें। इससे स्तोताओं की मेधा में वृद्धि होती है ॥२०,११९.१॥

(तुरण्यवो मधुमन्तं घृतश्चुतं विप्रासो अर्कमानृचुः ।
अस्मे रयिः पप्रथे वृष्ण्यं शवोऽस्मे सुवानास इन्दवः ॥२०,११९.२॥

शीघ्र कार्य करने वाले विप्रगण मधुर घृतसक्त (भावयुक्त अथवा तेजस्वी) पूजनीय मन्त्रों का उच्चारण करते हैं। इससे हमारे लिए धन, वीर्य (पौरुष) तथा सोम की सिद्धि होती है ॥२०,११९.२॥

सूक्त-१२०

यदिन्द्र प्रागपागुदङ्न्यग्वा हूयसे नृभिः ।
सिमा पुरू नृषूतो अस्यानवेऽसि प्रशर्ध तुर्वशे ॥२०,१२०.१॥

हे इन्द्रदेव ! आप स्तोताओं द्वारा सहायता के लिए चारों ओर (पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से आवाहित किये जाते हैं। शत्रुनाशक हे इन्द्रदेव ! 'अनु' और 'तुर्वश' (अनुगामियों और दुष्टों को वश में रखने वालों) के लिए आपको प्रार्थनापूर्वक बुलाया जाता है ॥२०,१२०.१॥

यद्वा रुमे रुशमे श्यावके कृप इन्द्र मादयसे सचा ।
कण्वासस्त्वा ब्रह्मभि स्तोमवाहस इन्द्रा यछन्त्या गहि ॥२०,१२०.२॥

हे इन्द्रदेव ! आप रुम, रुशम, श्यावक और कृप (ज्ञानियों, शूरों, धनिकों तथा श्रमशीलों) के लिए प्रसन्न किये जाते हैं । कण्ववंशीय ऋषिगण आपको विभिन्न स्तोत्रों से प्रभावित करने का प्रयास करते हैं। हे इन्द्रदेव ! आप यज्ञार्थ पधारें ॥२०,१२०.२॥

सूक्त-१२१

अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः ।
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः ॥२०,१२१.१॥

हे शूरवीर इन्द्रदेव ! आप इस स्थावर एवं जंगम जगत् के स्वामी हैं। दिव्य दृष्टि-सम्पन्न आपके लिए हम उसी तरह लालायित रहते हैं, जैसे न दुही हुई गौएँ अपने बछड़े के पास जाने के लिए लालायित रहती हैं ॥२०,१२१.१॥

न त्वावामन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते ।
अश्वायन्तो मघवन्न् इन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे ॥२०,१२१.२॥

हे ऐश्वर्यवान् इन्द्रदेव ! आपके समान इस पृथ्वीलोक या दिव्यलोक में न कोई है, न कभी हुआ है और न कभी होगा। हे देव ! अश्व, गौ तथा धन-धान्य की कामना वाले हम (स्तोतागण) आपका आवाहन करते हैं ॥२०,१२१.२॥

सूक्त-१२२

रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः ।
क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥२०,१२२.१॥

जिनकी स्तुति करके हम प्रफुल्लित होते हैं, उन इन्द्रदेव के लिए की गई हमारी प्रार्थनाएँ हमें प्रचुर धन-धान्य प्रदान करने की सामर्थ्य वाली हों ॥२०,१२२.१॥

आ घ त्वावान् त्मनाप्त स्तोतृभ्यो धृष्णवियानः ।
ऋणोरक्षं न चक्रयोः ॥२०,१२२.२॥

हे धैर्यशाली इन्द्रदेव ! आप कल्याणकारी बुद्धि से स्तुति करने वाले स्तोताओं को अभीष्ट पदार्थ अवश्य प्रदान करें। आप स्तोताओं को धन देने के लिए रथ के चक्रों को मिलाने वाली धुरी के समान ही सहायक हैं ॥२०,१२२.२॥

आ यद्दुवः शतक्रतवा कामं जरितॄणाम् ।
ऋणोरक्षं न शचीभिः ॥२०,१२२.३॥

हे इन्द्रदेव ! स्तोताओं द्वारा इच्छित धन उन्हें प्रदान करें। जिस प्रकार रथ की गति से उसके अक्ष (धुरे के आधार) को भी गति मिलती है, उसी प्रकार स्तुतिकर्ताओं को धन की प्राप्ति हो ॥२०,१२२.३॥

सूक्त-१२३

तत्सूर्यस्य देवत्वं तन् महित्वं मध्या कर्तोर्विततं सं जभार । यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै ॥२०,१२३.१॥

महान् कार्य ही सूर्यदेव के देवत्व के कारण हैं। जब वे सूर्यदेव अपनी हरणशील किरणों को आकाश से विलग कर केन्द्र में धारण करते हैं, तब रात्रि इस विश्व के ऊपर गहन तमिस्रा का आवरण डाल देती है ॥२०,१२३.१॥

तन् मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे । अनन्तमन्यद्रुशदस्य प्राजः कृष्णमन्यद्धरितः सं भरन्ति ॥२०,१२३.२॥

द्युलोक की गोद में स्थित सूर्यदेव, मित्र और वरुण देवों का वह रूप प्रकट करते हैं, जिससे वे मनुष्यों को सब ओर से देखते हैं। उनकी किरणें अनन्त विश्व में एक ओर प्रकाश और चेतना भर देती हैं, तो दूसरी ओर अन्धकार भर देती हैं ॥२०,१२३.२॥

सूक्त-१२४

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा ।
कया शचिष्ठया वृता ॥२०,१२४.१॥

निरन्तर प्रगतिशील हे इन्द्रदेव ! आप किन-किन तृप्तिकारक पदार्थों के भेंट करने से तथा किस तरह की पूजा विधि से प्रसन्न होंगे? आप किन दिव्य शक्तियों सहित हमारे सहयोगी बनेंगे? ॥२०,१२४.१॥

कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः ।
दृल्हा चिदारुजे वसु ॥२०,१२४.२॥

सत्यनिष्ठों को आनन्द प्रदान करने वालों में सौम सर्वोपरि है; क्योंकि है इन्द्रदेव ! यह आपको दुर्धर्ष शत्रुओं के ऐश्वर्य को नष्ट करने की प्रेरणा देता है ॥२०,१२४.२॥

अभी षु नः सखीनामविता जरितॄणाम् ।
शतं भवास्यूतिभिः ॥२०,१२४.३॥

स्तुतियों से प्रसन्न करने वाले अपने मित्रों के रक्षक हे इन्द्रदेव ! हमारी हर प्रकार से रक्षा करने के लिए आप उच्चकोटि की तैयारी सहित प्रस्तुत हों ॥२०,१२४.३॥

इमा नु कं भुवना सीषधामेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ।
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सह चीकॢपाति ॥२०,१२४.४॥

हम इन समस्त लोकों को शीघ्र ही प्राप्त करें । इन्द्रदेव और सभी देवगण हमारे लिए सुख-शान्ति की प्राप्ति में सहायक हों । इन्द्रदेव और आदित्यगण हमारे यज्ञ को सफल बनाएँ, शरीर को नीरोग बनाएँ और हमारी सन्तानों को सद्व्यवहार के लिए प्रेरित करें ॥२०,१२४.४॥

आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्माकं भूत्वविता तनूनाम् ।
हत्वाय देवा असुरान् यदायन् देवा देवत्वमभिरक्षमाणाः ॥२०,१२४.५॥

इन्द्रदेव आदित्यों और मरुद्गणों के साथ पधारकर हमारे शरीरों को सुरक्षा प्रदान करें । जिस समय देवगण वृत्रादि असुरों का संहार करके अपने स्थान की ओर लौटे, उस समय अमर देवत्व की सुरक्षा हो सकी ॥२०,१२४.५॥

प्रत्यञ्चमर्कमनयं छचीभिरादित्स्वधामिषिरां पर्यपश्यन् ।
अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः
॥२०,१२४.६॥

(इन्द्रदेव ने) शक्तियों सहित सूर्य को प्रकट किया, तब सबने स्वधा (वर्षा या तृप्तिदायक प्रक्रिया) को देखा। इस प्रकार देवों के हित में बल का अर्जन किया गया। (हम याजक) श्रेष्ठवीरों सहित सौ वर्षों तक हर्षित रहें ॥२०,१२४.६॥

सूक्त-१२५

अपेन्द्र प्राचो मघवन्न् अमित्रान् अपापाचो अभिभूते नुदस्व ।
अपोदीचो अप शूराधराच उरौ यथा तव शर्मन् मदेम ॥२०,१२५.१॥

हे ऐश्वर्यवान् एवं शत्रुओं के पराभूतकर्ता इन्द्रदेव ! आप हमारे पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से आने वाले शत्रुओं को दूर हटाएँ। हम आपके समीप सुखपूर्वक रह सकें ॥२०,१२५.१॥

कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय ।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमोवृक्तिं न जग्मुः ॥२०,१२५.२॥

हे इन्द्रदेव ! जिस प्रकार जौं की खेती करने वाले कृषक जौ को बा-बार काटते हैं, उसी प्रकार देवताओं के प्रिय आप दुष्टों का दमन करके श्रेष्ठजनों को पोषण प्रदान कर उनकी रक्षा करें ॥२०,१२५.२॥

नहि स्थूर्यृतुथा यातमस्ति नोत श्रवो विविदे संगमेषु ।

गव्यन्त इन्द्रं सख्याय विप्रा अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः ॥२०,१२५.३॥

एक चक्रवाली गाड़ी कभी भी समय पर नहीं पहुँचती ।युद्धकाल में उससे अन्नलाभ नहीं हो सकता ।अतः हम गौ, वृषभ, अश्व, अन्न तथा बल की कामना करते हुएइन्द्रदेव की मित्रता के लिए उनका भी आवाहन करते हैं ॥२०,१२५.३॥

युवं सुराममश्विना नमुचावासुरे सचा ।
विपिपाना शुभस्पती इन्द्रं कर्मस्वावतम् ॥२०,१२५.४॥

हे अश्विनीकुमारो ! नमुचि नामक असुर के अधिकार में स्थित श्रेष्ठ- मधुर सोमरस भली प्रकार प्राप्त करके उसका पान करते हुए, आप दोनों ने नमुचि वध में इन्द्रदेव की सहायता की ॥२०,१२५.४॥

पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्रावथुः काव्यैर्दंसनाभिः ।
यत्सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्न् अभिष्णाक्॥२०,१२५.५॥

है इन्द्रदेव ! राक्षसों के संसर्ग से अशुद्ध सोम का पान कर (स्वयं को संकट में डालकर) अश्विनीकुमारों ने आपकी

उसी प्रकार की रक्षा की, जैसे पिता पुत्र की रक्षा करता है। आपने नमुचि का वध करके जब प्रसन्नता प्रदान करने वाले सोम का पान किया, तब देवी सरस्वती भी आपके अनुकूल हुईं ॥२०,१२५.५॥

इन्द्रः सुत्रामा स्ववामवोभिः सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः ।
बाधतां द्वेषो अभयं नः कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम ॥२०,१२५.६॥

भली प्रकार से संरक्षण प्रदान करने की सामर्थ्य से युक्त वे इन्द्रदेव हमारी सुरक्षा करें । वे सर्वज्ञ परमेश्वर हमारे शत्रुओं के संहारक हों । हममें निर्भीकता स्थापित करें, जिससे हम उत्तम बलों के स्वामी बनें ॥२०,१२५.६॥

स सुत्रामा स्ववामिन्द्रो अस्मदाराच्चिद्द्वेषः सनुतर्युयोतु ।
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम ॥२०,१२५.७॥

हम यज्ञीय पुरुष की श्रेष्ठ बुद्धि में वास करें तथा कल्याणकारी श्रेष्ठ मन से भी सम्पन्न हों । श्रेष्ठ, संरक्षक और ऐश्वर्यवान् वे इन्द्रदेव हमारे समीपस्थ और दूर छिपे हुए सभी शत्रुओं को सदा के लिए दूर करें ॥२०,१२५.७॥

सूक्त-१२६

वि हि सोतोरसृक्षत नेन्द्रं देवममंसत ।
यत्रामदद्वृषाकपिरर्यः पुष्टेषु मत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०,१२६.१॥

इन्द्रदेव ने स्तोताओं को सोम अभिषव या अन्य कार्य के लिए प्रेरित किया था, तथापि स्तुतिकर्ताओं ने इन्द्रदेव की प्रार्थना नहीं की (अपितु वृषाकपि की प्रार्थना की) । जहाँ सोमप्रवृद्ध यज्ञ में आर्य वृषाकपि (इन्द्रदेव के पुत्र) हमारे मित्र होकर सोमपान से हर्षित हुए, वहाँ भी इन्द्रदेव ही सर्वश्रेष्ठ हैं ॥२०,१२६.१॥

परा हीन्द्र धावसि वृषाकपेरति व्यथिः ।
नो अह प्र विन्दस्यन्यत्र सोमपीतये विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०,१२६.२॥

(इन्द्राणी का कथन) हे इन्द्रदेव ! आप व्यथित होकर वृषाकपि के समीप दौड़ जाते हैं । आप दूसरे स्थान पर सोमपान हेतु नहीं जाते। निश्चय ही इन्द्रदेव सर्वश्रेष्ठ हैं ॥२०,१२६.२॥

किमयं त्वां वृषाकपिश्चकार हरितो मृगः ।
यस्मा इरस्यसीदु न्वर्यो वा पुष्टिमद्वसु विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः
॥२०,१२६.३॥

(इन्द्राणी का कथन) हे इन्द्रदेव ! इस हरित (हरे या हरणशील) मृग (भूमिगामी) वृषकपि ने आपका क्या हित किया है, जिसके कारण आप उदारता के साथ उन्हें पुष्टिकर ऐश्वर्य प्रदान करते हैं ? इन्द्रदेव ही वास्तव में सर्वोत्तम हैं ॥२०,१२६.३॥

यमिमं त्वं वृषाकपिं प्रियमिन्द्राभिरक्षसि ।
श्वा न्वस्य जम्भिषदपि कर्णे वराहयुर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः
॥२०,१२६.४॥

(इन्द्राणी का कथन) हे इन्द्रदेव ! आप जिस प्रिय वृषाकपि को सुरक्षित करते हैं, वाराह पर आक्रमण करने वाला श्वान उसका कान काट ले। इन्द्रदेव ही वास्तव में सर्वेत्तम हैं ॥२०,१२६.४॥

प्रिया तष्टानि मे कपिर्व्यक्ता व्यदूदुषत्।
शिरो न्वस्य राविषं न सुगं दुष्कृते भुवं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः
॥२०,१२६.५॥

(इन्द्राणी का कथन) आपको तुष्ट करने वाले पदार्थों को वृषाकपि ने दूषित कर दिया। मेरी अभिलाषा है। कि इसके मस्तक को काट डालें । इस दुष्कर्म में संलग्न (वृषाकपि) की कभी हितैषी नहीं बनूंगी । इन्द्रदेव सबसे श्रेष्ठ और महान् हैं ॥२०,१२६.५॥

न मत्स्त्री सुभसत्तरा न सुयाशुतरा भुवत्।
न मत्प्रतिच्यवीयसी न सक्थ्युद्यमीयसी विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०,१२६.६॥

(इन्द्राणी का कथन) कोई दूसरी स्त्री मुझसे बढ़कर सौभाग्यशालिनी नहीं और न कोई दूसरी अतिसुखी और सुसन्तति युक्त है । मुझसे अधिक कोई भी स्त्री अपने पति को सुख देने में सक्षम भी नहीं होगी । इन्द्रदेव ही वास्तव में सर्वश्रेष्ठ हैं ॥२०,१२६.६॥

उवे अम्ब सुलाभिके यथेवाङ्ग भविष्यति ।
भसन् मे अम्ब सक्थि मे शिरो मे वीव हृष्यति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०,१२६.७॥

(वृषाकपि का कथन) हे इन्द्राणी माता ! आप सभी सुखों का लाभ प्राप्त करने वाली हैं। आपके अंग, जंघा, मस्तक

आदि आवश्यकतानुसार स्वरूप धारण करने या कार्य करने में सक्षम हैं। आप पिता इन्द्रदेव के लिए स्नेहसिक्त सुख-प्रदात्री हों । इन्द्रदेव ही सर्वोत्तम हैं ॥२०,१२६.७॥

किं सुबाहो स्वङ्गुरे पृथुष्टो पृथुजाघने ।
किं शूरपत्नि नस्त्वमभ्यमीषि वृषाकपिं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०,१२६.८॥

(इन्द्र का कथन) हे वीर पत्नी इन्द्राणी ! आप श्रेष्ठ भुजाओं से युक्त, सुन्दर अँगुलियों वाली, श्रेष्ठ शिवती तथा विशाल जंघाओं से युक्त हैं । आप वृषाकपि पर क्यों क्रोधित हो रही हैं ? इन्द्रदेव विश्व में सर्वोत्तम हैं ॥२०,१२६.८॥

अवीरामिव मामयं शरारुरभि मन्यते ।
उताहमस्मि वीरिणीन्द्रपत्नी मरुत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०,१२६.९॥

(इन्द्राणी का कथन) यह घातक वृषाकपि मुझे पति-पुत्रादि से रहित के समान ही मानता है; परन्तु इन्द्रपली सन्तानादि से सम्पन्न हैं तथा मरुद्गण उसके सहायक हैं । इन्द्रदेव विश्व में सर्वोत्तम हैं ॥२०,१२६.९॥

संहोत्रं स्म पुरा नारी समनं वाव गछति ।

वेधा ऋतस्य वीरिणीन्द्रपत्नी महीयते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०,१२६.१०॥

प्राचीन काल से ही नारी श्रेष्ठ यज्ञों और महोत्सवों में भाग लेती आई है। यज्ञ विधान सम्पन्न करने वाली और वीर पुत्रों की जन्म प्रदात्री होने से इन्द्रपत्नी (इन्द्राणी) की स्तुति सभी जगहू होती है। इन्द्रदेव ही सर्वश्रेष्ठ हैं ॥२०,१२६.१०॥

इन्द्राणीमासु नारिषु सुभगामहमश्रवम्।
नह्यस्या अपरं चन जरसा मरते पतिर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०,१२६.११॥

सभी स्त्रियों में इन्द्राणी को मैं सर्वाधिक सौभाग्यशालिनी मानता हूँ। दूसरी स्त्रियों के पति के समान इन्द्राणी के पति इन्द्र, वृद्धावस्था में मृत्यु को प्राप्त नहीं होते, (अपितु इन्द्र अमर हैं) इन्द्र ही वस्तुतः सर्वोत्तम हैं ॥२०,१२६.११॥

नाहमिन्द्राणि रारण सख्युर्वृषाकपेर्ऋते।
यस्येदमप्यं हविः प्रियं देवेषु गछति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०,१२६.१२॥

हे इन्द्राणी ! हमारे मित्र (मरुद्गण) वृषाकपि के बिना हर्षित नहीं रहते। वृषाकपि का ही अति प्रीतियुक्त द्रव्य (हव्यादि)

देवों के समीप पहुँचता है, इन्द्रदेव ही सर्वोत्तम हैं ॥२०,१२६.१२॥

वृसाकपायि रेवति सुपुत्र आदु सुस्नुषे ।
घसत्त इन्द्र उक्षणः प्रियं काचित्करं हविर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०,१२६.१३॥

हे वृषाकपायि !(वृषाकपि की माता या पत्नी) आप धनवती, श्रेष्ठ पुत्रवती और सुन्दर पुत्रवधू वाली हैं। आपके उक्षाओं का इन्द्रदेव शीघ्र सेवन करें । आपके प्रिय और सुखप्रद हविष्यान्न का भी वे सेवन करें। इन्द्रदेव ही वास्तव में सर्वोत्तम हैं ॥२०,१२६.१३॥

उक्ष्णो हि मे पञ्चदश साकं पचन्ति विंसतिम् ।
उताहमद्मि पीव इदुभा कुक्षी पृणन्ति मे विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०,१२६.१४॥

(इन्द्र का कथन) मेरे लिए (शची द्वारा प्रेरित) पन्द्रह-बीस उक्षा (सेचन सामर्थ्य, इन्द्रियों तथा प्राण-उपप्राण आदि) एक साथ परिपक्व होते हैं, उनका सेवन करके मैं पुष्ट होता हूँ। मेरे दोनों पार्श्व उससे भर जाते हैं। विश्व में इन्द्रदेव ही सर्वोपरि हैं ॥२०,१२६.१४॥

वृषभो न तिग्मशृङ्गोऽन्तर्यूथेषु रोरुवत्।
मन्थस्त इन्द्र शं हृदे यं ते सुनोति भावयुर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०,१२६.१५॥

(इन्द्राणी का कथन) तीखे सींगों से युक्त वृषभ जैसे गो-समूह में गर्जनशील होकर (रँभाते हुए) विचरते हैं, वैसे आप भी हमारे साथ रमण करें। हे इन्द्र ! आपके हृदय का भावमंथन कल्याणप्रद हों ।आपके निमित्त भावना पूर्वक आकांक्षी इन्द्राणी जिस सोम का अभिषव करती है, वह भी कल्याणकारी हो ।इन्द्रदेव विश्व में सर्वोत्तम हैं॥२०,१२६.१५॥

न सेशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्या कपृत्।
सेदीशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०,१२६.१६॥

(प्राणिसंदर्भ में इन्द्राणी कहती हैं) जिसके सक्थ (भारवाहक दो अवयवों के बीच) कुख्याति प्रदायक(विकार) शब्द करते (अपनी अभिव्यक्ति करते हैं। वे शासन करने में समर्थ नहीं होते। (वह विकार) जिसके रोमों से क्षरण का यत्न करते हैं, वह (विकारयुक्त होकर) शासन करने में समर्थ होता है । वास्तव में इन्द्रदेव ही सर्वश्रेष्ठ हैं ॥२०,१२६.१६॥

न सेशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते ।
सेदीशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्या कपृत्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०,१२६.१७॥

(प्रकृति के संदर्भ में इन्द्र कहते हैं) जिसके कुरूप-विस्तार वाले (मेघादि) दो धारक (आकाश एवं पृथ्वी के बीच अंतरिक्ष में शब्दायमान होते हैं, वहीं शासन करता है । जिसके विकिरणयुक्त अंग (अथवा अंकुरों) से विकार प्रकट होते हैं, वह शासन नहीं करता । इन्द्रदेव ही सर्वश्रेष्ठ हैं ॥२०,१२६.१७॥

अयमिन्द्र वृषाकपिः परस्वन्तं हतं विदत्।
असिं सूनां नवं चरुमादेधस्यान आचितं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०,१२६.१८॥

हैं इन्द्रदेव ! वृषाकपि दूरवर्ती, अलभ्य पदार्थ भी प्राप्त करें । खड्ग (विकारनाशक), पाकस्थल, नये चरु और काष्ठों से परिपूर्ण यह शकट ग्रहण करें । इन्द्रदेव ही वास्तव में सर्वोत्तम है ॥२०,१२६.१८॥

अयमेमि विचाकशद्विचिन्वन् दासमार्यम् ।

पिबामि पाकसुत्वनोऽभि धीरमचाकशं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०,१२६.१९॥

मैं (इन्द्र) यजमानों का निरीक्षण करते हुए, शत्रुओं को दूर करते हुए तथा आर्यों का अन्वेषण करते हुए यज्ञ में उपस्थित होता हूँ। सोम अभिषवणकर्ताओं और हविष्यान्न तैयार करने वालों द्वारा समर्पित किये गये सोम का सेवन करता हूँ। बुद्धिमान् यजमान की श्रेष्ठ रीति से रक्षा करता हूँ। इन्द्रदेव ही सर्वश्रेष्ठ हैं ॥२०,१२६.१९॥

धन्व च यत्कृन्तत्रं च कति स्वित्ता वि योजना।
नेदीयसो वृषाकपेऽस्तमेहि गृहामुप विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०,१२६.२०॥

जल रहित मरुस्थल (उर्वरता रहित क्षेत्र) और काटने योग्य बन (जहाँ आवश्यकता से अधिक उत्पादन हो रहा हो) में कितना अन्तर है ?(दोनों को ठीक करना होगा) अतएव हे वृषाकपे ! आप समीप ही स्थित हमारे घर में आश्रय ग्रहण करें। इन्द्रदेव सर्वश्रेष्ठ हैं ॥२०,१२६.२०॥

पुनरेहि वृषाकपे सुविता कल्पयावहै।
य एष स्वप्ननंशनोऽस्तमेषि पथा पुनर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०,१२६.२१॥

हे वृषाकपे ! आप पुनः वापस आएँ । आपके निमित्त हम (इन्द्र-इन्द्राणी) सुखदायी श्रेष्ठ कर्मों को सम्पादित करते हैं ।आप निद्रा एवं स्वप्ननाशक सूर्य के समान सुगम मार्ग से हमारे घर में पुन: आएँ ।इन्द्र ही सर्वोत्तम हैं॥२०,१२६.२१॥

यदुदञ्चो वृषाकपे गृहमिन्द्राजगन्तन ।
क्व स्य पुल्वघो मृगः कमगं जनयोपनो विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०,१२६.२२॥

हे वृषाकपि और इन्द्रदेव ! आप ऊपर से घूमकर हमारे घर में प्रविष्ट हों । बहुभोक्ता और लोगों के लिए आनन्ददायक विचरणशील आप कहाँ गये थे?इन्द्रदेव ही वास्तव में सर्वश्रेष्ठ हैं ॥२०,१२६.२२॥

पर्शुर्ह नाम मानवी साकं ससूव विंशतिम् ।
भद्रं भल त्यस्या अभूद्यस्या उदरमामयद्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥२०,१२६.२३॥

मनु की पुत्री पर्श (स्पर्श नाम वाली हैं, जिनने बीस पुत्रों (दस इन्द्रियों, पाँच तन्मात्राओं और पंच प्राणों) को एक साथ जन्म दिया। जिन पशु का उदर विशाल हुआ था, उनका सदैव कल्याण हो ।इन्द्र ही सर्वश्रेष्ठ हैं ॥२०,१२६.२३॥

सूक्त-१२७

इदं जना उप श्रुत नराशंस स्तविष्यते ।
षष्टिं सहस्रा नवतिं च कौरम आ रुशमेषु दद्महे ॥२०,१२७.१॥

हे जन-लोगो ! नरों (इन्द्रादि देवों) की प्रशंसा में स्तवन किये जाते हैं, उन्हें सुनो। हे कौरम(कर्मठ-नायक) ! हम छह हजार नब्बे रुशमों (वीरों) को पाते या नियुक्त करते हैं ॥२०,१२७.१॥

उष्ट्रा यस्य प्रवाहणो वधूमन्तो द्विर्दश ।
वर्ष्मा रथस्य नि जिहीडते दिव ईषमाणा उपस्पृशः ॥२०,१२७.२॥

बीस ऊँट अपनी वधुओं (शक्तियों) सहित उस (नर) के रथ को खींचते हैं। उस रथ के सिर द्युलोक को स्पर्श करने की इच्छा के साथ चलते हैं ॥२०,१२७.२॥

एष इषाय मामहे शतं निष्कान् दश स्रजः ।
त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रा दश गोनाम् ॥२०,१२७.३॥

इस (नर श्रेष्ठ ने) मामह ऋषि को सौ स्वर्ण मुद्राओं, दस हारों, तीन सौ अयों तथा दस हजार गौओं का दान दिया ॥२०,१२७.३॥

वच्यस्व रेभ वच्यस्व वृक्षे न पक्वे शकुनः ।
नष्टे जिह्वा चर्चरीति क्षुरो न भुरिजोरिव ॥२०,१२७.४॥

हे स्तोता (रेभो ! बोलो-पाठ करो। (पाठ के समय ओष्ठ और जिह्वा जल्दी-जल्दी चलते हैं, जैसे पके फल वाले वृक्ष पर पक्षी (की चोंच) और कैचियों के फल चलते हैं ॥२०,१२७.४॥

प्र रेभासो मनीषा वृषा गाव इवेरते ।
अमोतपुत्रका एषाममोत गा इवासते ॥२०,१२७.५॥

स्तोता शक्तिसम्पन्न वृषभों के समान गतिमान हो रहे हैं, इनके गृह, सुसन्तति एवं गवादि पशुओं से युक्त हैं ॥२०,१२७.५॥

प्र रेभ धीं भरस्व गोविदं वसुविदम् ।
देवत्रेमां वाचं स्त्रीणीहीषुर्नावीरस्तारम् ॥२०,१२७.६॥

हे स्तोतागण ! आप गोधन उपलब्ध करने वाली और ऐश्वर्य सम्पदा की प्राप्तिभूत प्रेरक बुद्धि को धारण करें । जिस प्रकार बाण के संधानकर्ता मनुष्य का संरक्षण करते हैं, उसी प्रकार वाणी आपको संरक्षण प्रदान करे । देवताओं के समीप आप इन स्तोत्रों का गायन करें ॥२०,१२७.६॥

राज्ञो विश्वजनीनस्य यो देवोमर्त्यामति ।
वैश्वानरस्य सुष्टुतिमा सुनोता परिक्षितः ॥२०,१२७.७॥

सर्वहितकारी, सभी पर शासन करने वाले एवं भली प्रकार परीक्षित राजा की श्रेष्ठ स्तुतियों का श्रवण करें; क्योंकि मनुष्यों में श्रेष्ठ होने के कारण राजा देवतुल्य होता है ॥२०,१२७.७॥

परिच्छिन्नः क्षेममकरोत्तम आसनमाचरन् ।
कुलायन् कृण्वन् कौरव्यः पतिर्वदति जायया ॥२०,१२७.८॥

कौरव (कर्मठ) पुत्र गृह निर्माण करते हुए अपनी पत्नी से कहते हैं कि शोभन राज सिंहासन पर आसीन होकर परीक्षित राजा (अथवा अग्नि) ने हमारा कल्याण किया ॥२०,१२७.८॥

कतरत्त आ हराणि दधि मन्थां परि श्रुतम् ।

जायाः पतिं वि पृछति राष्ट्रे राज्ञः परिक्षितः ॥२०,१२७.९॥

परीक्षित (विश्वस्त राजा अथवा यज्ञाग्नि) राष्ट्र (क्षेत्र या प्रकाश) में स्त्री पति से पूछती है कि दही, मट्ठा या रस आदि में आपके लिए कौन सी वस्तु प्रस्तुत की जाए ? ॥२०,१२७.९॥

अभीवस्वः प्र जिहीते यवः पक्वः पथो बिलम् ।
जनः स भद्रमेधति राष्ट्रे राज्ञः परिक्षितः ॥२०,१२७.१०॥

जिस प्रकार पक्व जौ उदररूपी स्थल में जाता है, उसी प्रकार परीक्षित के राज्य में सभी प्राणी कल्याण को प्राप्त होते हैं ॥२०,१२७.१०॥

इन्द्रः कारुमबूबुधदुत्तिष्ठ वि चरा जनम् ।
ममेदुग्रस्य चर्कृधि सर्व इत्ते पृणादरिः ॥२०,१२७.११॥

इन्द्रदेव ने स्तोता को प्रेरित किया कि वे उठ खड़े हों, जन – जागरण हेतु समाज में विचरें, (अनीति के प्रति) उग्र स्वभाव वाले मुझ इन्द्र की स्तुति करें । सभी शत्रु तुम्हारे समीप आत्मसमर्पण करेंगे ॥२०,१२७.११॥

इह गावः प्र जायध्वमिहाश्वा इह पूरुषाः ।
इहो सहस्रदक्षिणोपि पूषा नि षीदति ॥२०,१२७.१२॥

यहाँ मनुष्य, सन्तति और अश्व प्रचुर संख्या में उत्पन्न हों, गौएँ अपने गोवंश को बढ़ाएँ। हजारों प्रकार के अनुदानों के दाता पूषादेव यहाँ प्रतिष्ठित हैं ॥२०,१२७.१२॥

नेमा इन्द्र गावो रिषन् मो आसां गोप रीरिषत्।
मासाममित्रयुर्जन इन्द्र मा स्तेन ईशत ॥२०,१२७.१३॥

हे इन्द्रदेव ! गौएँ यहाँ हानिरहित हों, गोपालक भी हानिरहित हों, शत्रु और चोर भी इनके स्वामी न बनें ॥२०,१२७.१३॥

उप नो न रमसि सूक्तेन वचसा वयं भद्रेण वचसा वयम् ।
वनादधिध्वनो गिरो न रिष्येम कदा चन ॥२०,१२७.१४॥

हे इन्द्रदेव ! हम आपको कल्याणकारी वाणी से हर्षित करते हैं, हम आपको सूक्त द्वारा भी हर्षित करते हैं। आप हमारे स्तोत्रों का (अन्तरिक्ष से) श्रवण करें, हम कभी विनष्ट न हों ॥२०,१२७.१४॥

सूक्त-१२८

यः सभेयो विदथ्यः सुत्वा यज्वाथ पूरुषः ।
सूर्यं चामू रिशादसस्तद्देवाः प्रागकल्पयन् ॥२०,१२८.१॥

जो सभासद हैं, जो विदथ (विद्वान् सभा के सदस्य हैं, जो सोम निष्पादक पुरुष हैं, उन्हें तथा सूर्य को देवों ने अग्रगामी बनाया है ॥२०,१२८.१॥

यो जाम्या अप्रथयस्तद्यत्सखायं दुधूर्षति ।
ज्येष्ठो यदप्रचेतास्तदाहुरधरागिति ॥२०,१२८.२॥

जो बहिन के साथ दुर्व्यवहार करते , मित्र को हानि पहुँचाते और ज्येष्ठ होने पर दुष्ट स्वभाव वाले होते हैं, ऐसे मनुष्य पतित कहलाते हैं ॥२०,१२८.२॥

यद्भद्रस्य पुरुषस्य पुत्रो भवति दाधृषिः ।
तद्विप्रो अब्रवीदु तद्गन्धर्वः काम्यं वचः ॥२०,१२८.३॥

जिस भद्रपुरुष का पुत्र धर्षणशील (पराक्रमी) होता है, ऐसा विप्र अभीष्ट वाणी प्रयुक्त करने में सक्षम होता है, ऐसा गन्धर्व ने कहा है ॥२०,१२८.३॥

यश्च पणि रघुजिष्ठ्यो यश्च देवामदाशुरिः ।
धीराणां शश्वतामहं तदपागिति शुश्रुम ॥२०,१२८.४॥

जो वणिक् स्वयं उपभोग करने के साथ देवों के निमित्त हविष्यान्न देने की भावना से रहित होता है । वह समस्त धीर पुरुषों में निम्नकोटि का होता है, ऐसा हमने सुना है ॥२०,१२८.४॥

ये च देवा अयजन्ताथो ये च परादर्दिः ।
सूर्यो दिवमिव गत्वाय मघवा नो वि रप्शते ॥२०,१२८.५॥

जो स्तोतागण देवों का यजन करते हैं और दूसरों को दान देते हैं, वे सूर्य के समान स्वर्गलोक में जाते हैं और वे ऐश्वर्यवान् (अथवा इन्द्र) की तरह शोभा पाते हैं ॥२०,१२८.५॥

योऽनाक्ताक्षो अनभ्यक्तो अमणिवो अहिरण्यवः ।
अब्रह्मा ब्रह्मणः पुत्रस्तोता कल्पेषु संमिता ॥२०,१२८.६॥

अञ्जनरहित आँख, उबटनरहित शरीर, रत्न एवं स्वर्णरहित आभूषण तथा ब्रह्मज्ञानरहित ब्राह्मणपुत्र, ये सब एक जैसे (दोषपूर्ण होते हैं ॥२०,१२८.६॥

य आक्ताक्षः सुभ्यक्तः सुमणिः सुहिरण्यवः ।
सुब्रह्मा ब्रह्मणः पुत्रस्तोता कल्पेषु संमिता ॥२०,१२८.७॥

अञ्जनयुक्त आँख, उबटनयुक्त शरीर, श्रेष्ठ रत्न और सुन्दर सोने के आभूषण तथा ब्रह्म ज्ञान सम्पन्न विप्र पुत्र, ये सभी कल्पों में समान (श्रेष्ठ) माने गये हैं ॥२०,१२८.७॥

अप्रपाणा च वेशन्ता रेवामप्रतिदिश्ययः ।
अयभ्या कन्या कल्याणी तोता कल्पेषु संमिता ॥२०,१२८.८॥

जो तालाब पेयजल से रहित हैं, जो धनवान् होते हुए दानभाव से रहित हैं तथा रमणीय होने पर भी जो कन्याएँ गृहस्थ धर्म के आयोग्य हैं, वे सभी कल्पों में समान (दोषपूर्ण माने जाते हैं ॥२०,१२८.८॥

सुप्रपाणा च वेशन्ता रेवान्त्सुप्रतिदिश्ययः ।
सुयभ्या कन्या कल्याणी तोता कल्पेषु संमिता ॥२०,१२८.९॥

तालाबों का पेयजल से परिपूर्ण होना, धनवान् होने पर श्रेष्ठ दानकर्ता होना तथा सुन्दर कन्या होने के साथ गृहस्थ धर्म के निर्वाह योग्य होना, ये बातें सभी कल्पों में समान रूप से (श्रेष्ठ) मानी जाती हैं ॥२०,१२८.९॥

परिवृक्ता च महिषी स्वस्त्या च युधिं गमः ।
अनाशुरश्चायामी तोता कल्पेषु संमिता ॥२०,१२८.१०॥

महारानी का परित्याग करना, स्वस्थ होने पर संग्राम क्षेत्र में न जाना, तीव्रगति से रहित घोड़ा अथवा चलने वाला घोड़ा अथवा न चलने वाला घोड़ा, ये सभी बातें कल्पों में समान (दोषपूर्ण) मान्य हैं ॥२०,१२८.१०॥

वावाता च महिषी स्वस्त्या च युधिं गमः ।
श्वाशुरश्चायामी तोता कल्पेषु संमिता ॥२०,१२८.११॥

प्रिय राजमहिषी होना, स्वस्थ होने पर युद्ध क्षेत्र में गमन और श्रेष्ठ गतिशील घोड़े, ये बातें सभी कल्पों में एक सी (श्रेष्ठो मान्य होती हैं ॥२०,१२८.११॥

यदिन्द्रादो दाशराज्ञे मानुषं वि गाहथाः ।
विरूपः सर्वस्मा आसीत्सह यक्षाय कल्पते ॥२०,१२८.१२॥

है इन्द्रदेव ! दाशराज के युद्ध में प्रवेश करके आपने मनुष्यों को मथ डाला। (इस पराक्रम से आप सभी के लिए सम्माननीय हुए। आप यक्षों के साथ प्रकट हुए थे ॥२०,१२८.१२॥

त्वं वृषाक्षुं मघवन्न् अम्रं मर्याकरो रविः ।
त्वं रौहिणं व्यास्यो वि वृत्रस्याभिनच्छिरः ॥२०,१२८.१३॥

(हे इन्द्र !) आप विजयशील हैं। आपने मनुष्यों के लिए सूर्य को नम्र (नीचे की ओर संचरित किया। आपने ही ऊपर चढ़ते हुए वृत्र के सिर को काट गिराया ॥२०,१२८.१३॥

यः पर्वतान् व्यदधाद्यो अपो व्यगाहथाः ।
इन्द्रो यो वृत्रहान्महं तस्मादिन्द्र नमोऽस्तु ते ॥२०,१२८.१४॥

जिन्होंने पर्वत श्रृंखलाओं को स्थापित किया है और जल को प्रवाहित किया है । जो महान् इन्द्रदेव वृत्रासुर के संहारक हैं, ऐसे में इन्द्रदेव ! आपके लिए नमस्कार है ॥२०,१२८.१४॥

पृष्ठं धावन्तं हर्योरौच्चैः श्रवसमब्रुवन् ।
स्वस्त्यश्व जैत्रायेन्द्रमा वह सुस्रजम् ॥२०,१२८.१५॥

अंग्रगामी उच्चैःश्रवा घोड़ों से (याजकों ने) कहा- हे अश्व !आप जीतने के लिए मालाधारी इन्द्र को यहाँ लाएँ॥२०,१२८.१५॥

ये त्वा श्वेता अजैश्रवसो हार्यो युञ्जन्ति दक्षिणम् ।
पूर्वा नमस्य देवानां बिभ्रदिन्द्र महीयते ॥२०,१२८.१६॥

दक्षिण (अनुकूलता से) योजित अजश्रवा अश्वो ! प्रथम नमनीय इन्द्र को धारण करके आपकी शुभ्रता और महान् (श्रेष्ठ) हो जाती है ॥२०,१२८.१६॥

सूक्त-१२९

एता अश्वा आ प्लवन्ते ॥२०,१२९.१॥

प्रतीपं प्राति सुत्वनम् ॥२०,१२९.२॥

यह अश्वाएँ (शक्तियाँ या प्रवृत्तियाँ) उमड़ रही हैं। प्रतिकूल (आत्मिक अनुशासन के विपरीत नश्वर) ऐश्वर्य प्राप्त कर रही हैं ॥२०,१२९.१-२०,१२९.२॥

तासामेका हरिक्निका ॥२०,१२९.३॥

हरिक्निके किमिछासि ॥२०,१२९.४॥

उन (शक्तियों-प्रवृत्तियों) में एक हरि उन्मुख है ।हे हरिक्निके (चित्शक्ति) !तुम क्या चाहती हो? ॥२०,१२९.३-२०,१२९.४॥

साधुं पुत्रं हिरण्ययम् ॥२०,१२९.५॥

क्वाहतं परास्यः ॥२०,१२९.६॥

(हरिक्निका की ओर से कथन) मैं साधु (सज्जन) पुत्र हिरण्य (पदार्थ के पूर्व की स्थिति में तेजस् तत्त्व) को चाहती हूँ । (उससे पुनः प्रश्न) उसे तुमने कहाँ छोड़ा? ॥२०,१२९.५-२०,१२९.६॥

यत्रामूस्तिस्रः शिंशपाः ॥२०,१२९.७॥

परि त्रयः ॥२०,१२९.८॥

जहाँ वे तीन छायाकार वृक्ष (तीन गुण या तीन संरक्षक माता-पिता एवं गुरु) हैं, उन्हीं तीन के आस-पास उन्हें छोड़ा है ॥२०,१२९.७-२०,१२९.८॥

पृदाकवः ॥२०,१२९.९॥

शृङ्गं धमन्त आसते ॥२०,१२९.१०॥

पृदाकू (अजगर या विशाल सर्प अथवा त्रिदोष या वासना, तृष्णा, अहंतारूप दोष) श्रृंगी फेंकते विजय वाद्य बजाते हुए स्थित हैं ॥२०,१२९.९-२०,१२९.१०॥

अयन्महा ते अर्वाहः ॥२०,१२९.११॥

स इछकं सघाघते ॥२०,१२९.१२॥

यह तुम्हारा वहन करने वाला (अश्व) आ गया। यह इच्छा करने वालों की सहायता करता है ॥२०,१२९.११-२०,१२९.१२॥

सघाघते गोमीद्या गोगतीरिति ॥२०,१२९.१३॥

पुमां कुस्ते निमिछसि ॥२०,१२९.१४॥

गौ (वाणी) की शक्ति गौओं (इन्द्रियों) की गति की मदद करती है ।हे पुरुष तुम कौन सी गति चाहते हो ?॥२०,१२९.१३-२०,१२९.१४॥

पल्प बद्ध वयो इति ॥२०,१२९.१५॥

बद्ध वो अघा इति ॥२०,१२९.१६॥

सीमा में बद्ध आयु है। बँधा होना तुम्हारे लिए पाप है ॥२०,१२९.१५-२०,१२९.१६॥

अजागार केविका ॥२०,१२९.१७॥

अश्वस्य वारो गोशपद्यके ॥२०,१२९.१८॥

अजा (प्रकृति) के इस गृह में (इन्द्रियाँ) सेविकाएँ हैं। तुम अश्व (शक्तियों) के सवार (नियन्त्रको हो । गौओं (इन्द्रियों) के खुरों (चरणों) में पड़े हो ? ॥२०,१२९.१७-२०,१२९.१८॥

श्येनीपती सा ॥२०,१२९.१९॥

अनामयोपजिह्विका ॥२०,१२९.२०॥

वह (बुद्धि-प्रकृति) गतिशील शक्तियों (प्रवृत्तियों) की स्वामिनी है ।आरोग्य को उपजीविका देने वाली है॥२०,१२९.१९-२२०,१२९.०॥

॥अथर्ववेद – विंश काण्डम्॥

सूक्त-१३०

को अर्य बहुलिमा इषूनि ॥२०,१३०.१॥

कौन आर्य (श्रेष्ठ पुरुष) बहुत प्रकार के बाण रखता हैं ? ॥२०,१३०.१॥

को असिद्याः पयः ॥२०,१३०.२॥

को अर्जुन्याः पयः ॥२०,१३०.३॥

कः काष्र्ण्याः पयः ॥२०,१३०.४॥

असिद् (असित् अर्थात् सत् से भिन्न रजोगुणी प्रकृति) का पय (पोषक तत्त्व) क्या है ? अर्जुनी (सत् प्रकृति) का पय क्या है? तथा काष्र्णी (तमोगुणी प्रकृति का पय क्या है ? ॥२०,१३०.२-२०,१३०.४॥

एतं पृछ कुहं पृछ ॥२०,१३०.५॥

कुहाकं पक्वकं पृछ ॥२०,१३०.६॥

यह (जानते नहीं हो तो) पूछो । किसी चमत्कारी व्यक्ति से पूछो । किसी अद्भुत कौशलयुक्त तथा परिपक्व व्यक्ति से पूछो ॥२०,१३०.५-२०,१३०.६॥

यवानो यतिष्वभिः कुभिः ॥२०,१३०.७॥

अकुप्यन्तः कुपायकुः ॥२०,१३०.८॥

यत्न करने वालों तथा धन-धान्य युक्त भूमि से (जानो), (प्रकृतिका मर्म न जानने वालों से) भूरक्षक कुपित हुए ॥२०,१३०.७-२०,१३०.८॥

आमणको मणत्सकः ॥२०,१३०.९॥

देव त्वप्रतिसूर्य ॥२०,१३०.१०॥

हे आमणक ! हे मणत्सक देव ! आप सूर्य के प्रतिरूप हैं ॥२०,१३०.९-२०,१३०.१०॥

एनश्चिपङ्क्तिका हविः ॥२०,१३०.११॥

प्रदुद्रुदो मघाप्रति ॥२०,१३०.१२॥

यह पापनाशक हवि है । (यह) ऐश्वर्य के प्रति गति देने वाली हो ॥२०,१३०.११-२०,१३०.१२॥

श‍ृङ्ग उत्पन्न ॥२०,१३०.१३॥

मा त्वाभि सखा नो विदन् ॥२०,१३०.१४॥

हे प्रकट हुए शृंग(सींग अर्थात् पीड़ादायक-हिंसक उपकरण ! हमारे मित्रों का तुमसे पाला न पड़े ॥२०,१३०.१३-२०,१३०.१४॥

वशायाः पुत्रमा यन्ति ॥२०,१३०.१५॥

इरावेदुमयं दत ॥२०,१३०.१६॥

वशा (प्रकृति) के पुत्र को लाते हैं । ज्ञानमयी इरा (वाणी या भूमि) इसे दो ॥२०,१३०.१५-२०,१३०.१६॥

अथो इयन्नियन् इति ॥२०,१३०.१७॥

अथो इयन्निति ॥२०,१३०.१८॥

अब (वह) चलने वाला हो, चलने वाला ही हो, अब चलने वाला ही हो ॥२०,१३०.१७-२०,१३०.१८॥

अथो श्वा अस्थिरो भवन् ॥२०,१३०.१९॥

उयं यकांशलोकका ॥२०,१३०.२०॥

अब (वह) श्वान (जैसे स्वभाव वाला) अस्थिर होकर निश्चय ही कष्टप्रद लोक वाला हो ॥२०,१३०.१९-२०,१३०.२०॥

सूक्त-१३१

आमिनोनिति भद्यते ॥२०,१३१.१॥

तस्य अनु निभञ्जनम् ॥२०,१३१.२॥

वरुणो याति वस्वभिः ॥२०,१३१.३॥

वह (परमतत्त्व) विभक्त हुआ ऐसा कहा गया है। उसका पुनः (सतत) विभाजन हुआ। वरुण (वरणशील देव) धन (सम्पत्तियों) के साथ चलते (गतिशील होते) हैं ॥२०,१३१.१-२०,१३१.३॥

शतं वा भारती शवः ॥२०,१३१.४॥

शतमाश्वा हिरण्ययाः ।
शतं रथ्या हिरण्ययाः ।
शतं कुथा हिरण्ययाः । ॥२०,१३१.५॥

(इस प्रक्रिया में) सौ(सैकड़ों) भारती (विद्याओं) के बल (प्रवृत्त) हैं। (उस प्रक्रिया से) हिरण्य तेजस् तत्त्व के

सौ(सैकड़ों) अश्व, सैकड़ों रथ, सैकड़ों गद्दे तथा सैकड़ों हिरण्ययुक्त हार (प्रकट होते हैं ॥२०,१३१.४-२०,१३१.५॥

अहुल कुश वर्त्तक ॥२०,१३१.६॥

शफेन इव ओहते ॥२०,१३१.७॥

वह (परमतत्त्व) बिना हल के ही कुश का वर्तन (प्रयोग) करने वाला है। खुर की तरह वह (अनायास) ही खोदता है ॥२०,१३१.६-२०,१३१.७॥

आय वनेनती जनी ॥२०,१३१.८॥

वनिष्ठा नाव गृह्यन्ति ॥२०,१३१.९॥

इदं मह्यं मदूरिति ॥२०,१३१.१०॥

(हे परमसत्ता !) आप (बच्चों के लिए) झुकने वाली माता की तरह आएँ। निष्ठावान् (दायित्व को देखकर) रुकते नहीं। यह (ऊपर लिखे अनुसार किया जाना) हमारे लिए आनन्ददायक है ॥२०,१३१.८-२०,१३१.१०॥

ते वृक्षाः सह तिष्ठति ॥२०,१३१.११॥

पाक बलिः ॥२०,१३१.१२॥

शक बलिः ॥२०,१३१.१३॥

(वे) वृक्षों (पेड़ों अथवा रक्षण या वरण करने वालों के पास स्थित रहते हैं; (कौन ?) परिपक्व बलि (भोज्य पदार्थ) एवं समर्थ (शक्तियुक्त) बलि ॥२०,१३१.११-२०,१३१.१३॥

अश्वत्थ खदिरो धवः ॥२०,१३१.१४॥

अरदुपरम ॥२०,१३१.१५॥

शयो हत इव ॥२०,१३१.१६॥

अश्वत्थ (अश्व-इन्द्रियों पर आरूढ़ जो है वह) स्थिर दृढ़ स्वामी होता हैं । जो शौर्यहीन है, वह शयन (नींद) की स्थिति में मारे जाने वाले की तरह (दुर्गति पाता) है ॥२०,१३१.१४-२०,१३१.१६॥

व्याप पूरुषः ॥२०,१३१.१७॥

अदूहमित्यां पूषकम् ॥२०,१३१.१८॥

(विश्व में) व्याप्त पुरुष (परमात्मा) बिना दहे ही पोषण प्रदानकर्ता है ॥२०,१३१.१७-२०,१३१.१८॥

अत्यर्धर्च परस्वतः ॥२०,१३१.१९॥

अति स्तुत्य एवं पालक (उस परमात्मा) का अर्चन-पूजन करो ॥२०,१३१.१९॥

दौव हस्तिनो दृती ॥२०,१३१.२०॥

हाथी के दो दृति (चर्म या विदारण करने वाले दो दाँत) हैं ॥२०,१३१.२०॥

सूक्त-१३२

आदलाबुकमेककम् ॥२०,१३२.१॥

अलाबुकं निखातकम् ॥२०,१३२.२॥

कर्करिको निखातकः ॥२०,१३२.३॥

तद्वात उन्मथायति ॥२०,१३२.४॥

(यह) अलाबुक (न डूबने वाले पोले तुम्बे की तरह) एक ही है । यह एक निखात (खोदे गये गड्) की तरह है । क्रियाशील (परमात्मा उस गर्त का) खोदने वाला है ।उस (तुम्बे) को वात (वायु या प्राण) हिलाता- डुलाता है ॥२०,१३२.१-२०,१३२.४॥

कुलायं कृणवादिति ॥२०,१३२.५॥

उग्रं वनिषदाततम् ॥२०,१३२.६॥

न वनिषदनाततम् ॥२०,१३२.७॥

क एषां कर्करी लिखत्॥२०,१३२.८॥

(वह जीव या ब्रह्म) अपना स्थान गढ़ लेता है । वह उग्र (तेजोयुक्त) और विस्तृत दिखता है । जो विस्तृत नहीं हुआ, वह नहीं दिखाई देता ॥२०,१३२.५-२०,१३२.८॥

क एषां दुन्दुभिं हनत्॥२०,१३२.९॥

यदीयं हनत्कथं हनत्॥२०,१३२.१०॥

किसने इस कर्करी (नीचे छिद्र वाले जलपात्र अर्थात् बादलों की रचना की ? कौन इस नगाड़े को बजाता (मेघ गर्जन करता है ॥२०,१३२.९-२०,१३२.१०॥

देवी हनत्कुहनत्॥२०,१३२.११॥

पर्यागारं पुनःपुनः ॥२०,१३२.१२॥

देवी (दिव्य चेतना उस नगाड़े को) बजाती है, (तो) कहाँ बजाती है ? सभी आवासों (स्थानों) के चारों ओर बार-बार बजाती है ॥२०,१३२.११-२०,१३२.१२॥

त्रीण्युष्ट्रस्य नामानि ॥२०,१३२.१३॥

हिरण्य इत्येके अब्रवीत्॥२०,१३२.१४॥

उष्ट्र के तीन नाम हैं। इनमें से एक नाम हिरण्य कहा गया है॥२०,१३२.१३-२०,१३२.१४॥

द्वौ वा ये शिशवः ॥२०,१३२.१५॥

नीलशिखण्डवाहनः ॥२०,१३२.१६॥

दो ही ये शिशु हैं, नील शिखण्ड (नीली शिखा वाला मोर या अग्नि) उनका वाहन है ॥२०,१३२.१५-२०,१३२.१६॥

सूक्त-१३३

वितततौ किरणौ द्वौ तावा पिनष्टि पूरुषः ।
न वै कुमारि तत्तथा यथा कुमारि मन्यसे ॥२०,१३३.१॥

फैली हुई दो किरणों को यह पुरुष पीसता रहता है । हे कुमारि ! जैसा तुम मानती हो, वैसा यह नहीं है ॥२०,१३३.१॥

मातुष्टे किरणौ द्वौ निवृत्तः पुरुषानृते ।
न वै कुमारि तत्तथा यथा कुमारि मन्यसे ॥२०,१३३.२॥

तुम्हारी माता से (यह) दोनों किरणें किसी पुरुष के बिना ही निवृत्त-निःसृत हुई हैं। हे कुमारि ! जैसा तुम मानती हो, वैसा यह नहीं है ॥२०,१३३.२॥

निगृह्य कर्णकौ द्वौ निरायच्छसि मध्यमे ।
न वै कुमारि तत्तथा यथा कुमारि मन्यसे ॥२०,१३३.३॥

हे मध्यमे (जड़ एवं चेतन को संयुक्त करने वाली सत्ता !) आप दोनों कर्णो (छोरों) को अपने वश में करके उन्हें

नियोजित कर देती हैं। हे कुमारि ! जैसा तुम मानती हो, वैसा यह नहीं है ॥२०,१३३.३॥

उत्तानायै शयानायै तिष्ठन्ती वाव गूहसि ।
न वै कुमारि तत्तथा यथा कुमारि मन्यसे ॥२०,१३३.४॥

(यह प्रकृति) खड़े हुए या सोये(लेटे) हुए (सभी) को ढककर स्थित है । हे कुमारि ! जैसा तुम मानती हो, वैसा यह नहीं है ॥२०,१३३.४॥

श्लक्ष्णायां श्लक्ष्णिकायां श्लक्ष्णमेवाव गूहसि ।
न वै कुमारि तत्तथा यथा कुमारि मन्यसे ॥२०,१३३.५॥

स्नेहयुक्त (यह प्रकृति) स्नेह करने वालों से अपने स्नेह को ढंक कर रखती है । हे कुमारि ! जैसा तुम मानती हो, वैसा यह नहीं है ॥२०,१३३.५॥

अवश्लक्ष्णमिव भ्रंशदन्तर्लोममति ह्रदे ।
न वै कुमारि तत्तथा यथा कुमारि मन्यसे ॥२०,१३३.६॥

उस तैलीय पदार्थ की तरह जो नीचे उतर कर लोमराशि के हृदय में समा जाता है । हे कुमारि ! जैसा तुम मानती हो, वैसा यह नहीं हैं ॥२०,१३३.६॥

सूक्त-१३४

इहेत्थ प्रागपागुदगधरागरालागुदभर्त्सथ ॥२०,१३४.१॥

यहाँ (संसार में) इस प्रकार पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण (दिशाओं में-सभी ओ) द्वेष की भर्त्सना करने वाला (आदिदेव) स्थित है ॥२०,१३४.१॥

इहेत्थ प्रागपागुदगधराग्वत्साः पुरुषन्त आसते ॥२०,१३४.२॥

यहाँ इस प्रकार पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण में बच्चे पुरुषत्व के लिए स्थित हैं ॥२०,१३४.२॥

इहेत्थ प्रागपागुदगधराक्स्थालीपाको वि लीयते ॥२०,१३४.३॥

यहाँ इस प्रकार पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण में स्थालीपाक (थाली में स्थित पके पदार्थ) विलीन हो जाते हैं॥२०,१३४.३॥

इहेत्थ प्रागपागुदगधराक्स वै पृथु लीयते ॥२०,१३४.४॥

यहाँ इस प्रकार पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण में वह (पके पदार्थ बड़ी मात्रा में प्राप्त हो जाते हैं ॥२०,१३४.४॥

इहेत्थ प्रागपागुदगधरागास्ते लाहणि लीशाथी ॥२०,१३४.५॥

यहाँ इस प्रकार पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण में प्रेरकशक्ति (या बुद्धि) विस्तार पाती है ॥२०,१३४.५॥

इहेत्थ प्रागपागुदगधरागक्ष्लिली पुछिलीयते ॥२०,१३४.६॥

यहाँ इस प्रकार पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण में व्यावहारिक (शक्ति या बुद्धि) पूछी जाती है ॥२०,१३४.६॥

सूक्त-१३५

भुगित्यभिगतः शलित्यपक्रान्तः फलित्यभिष्ठितः ।
दुन्दुभिमाहननाभ्यां जरितरोथामो दैव ॥२०,१३५.१॥

भुक्(भोक्ता) अभिगत (प्रत्यक्ष सामने रहने वाला) है । (गतिशील-जीव अपक्रान्त (शरीर) को छोड़कर निकल जाने वाला) है तथा फल (कर्म फल) अभितिष्ठ(चारों ओर स्थिर रहने वाला) है । हे जरितः (स्तोता) । दैव(नियन्ता) की

दुन्दुभि बजाने (प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए हम दो (वाणी और कर्म के डंके उठाएँ ॥२०,१३५.१॥

कोशबिले रजनि ग्रन्थेर्धानमुपानहि पादम् ।
उत्तमां जनिमां जन्यानुत्तमां जनीन् वर्त्मन्यात्॥२०,१३५.२॥

कोश के बिल (खोह) में रखे धन की तरह, उत्तम जननी में, गाँठ में बँधे धन की तरह उत्पन्न होने वाले (मनुष्यों) में तथा जूते में पैर की तरह उत्पन्न पदार्थों में (वह दिव्य परमात्म चेतना स्थित) हैं ॥२०,१३५.२॥

अलाबूनि पृषातकान्यश्वत्थपलाशम् ।
पिपीलिकावतश्वसो विद्युत्स्वापर्णशफो गोशफो जरितरोथामो दैव ॥२०,१३५.३॥

तुम्बी, घृतबिन्दु, पीपल और पलाश, चींटी, वट की कोंपलें, (जल में) बिजली एवं किरणें (आकाश में), गोखुर आदि (पृथ्वी पर जैसे ऊपर ही रहते हैं, वैसे ही) स्तोतागण (स्तोत्रों द्वारा) देव शक्तियों को उठाए रखते हैं॥२०,१३५.३॥

वीमे देवा अक्रंसताध्वर्यो क्षिप्रं प्रचर ।
सुसत्यमिद्गवामस्यसि प्रखुदसि ॥२०,१३५.४॥

(यज्ञ के समय) देवगण विशेष गतिशील (सक्रिय हैं, हे अध्वर्यो ! शीघ्रता करो। तुम्हारी सुसत्य वाणियाँ (इन्हें या तुम्हें) आनन्द देने वाली हैं ॥२०,१३५.४॥

पत्नी यद्दृश्यते पत्नी यक्ष्यमाणा जरितरोथामो दैव ।
होता विष्टीमेन जरितरोथामो दैव ॥२०,१३५.५॥

(इस समय) पत्नी (पालनकर्त्र प्रकृति) पत्नी (पोषिका) रूप में ही परिलक्षित हो रही है । हे स्तोताओ ! देवों को उठाओ, (परमात्मा) इनमें प्रविष्ट है, हे होता ! देवों को (आहुतियों और स्तोत्रों से) उन्नत करो ॥२०,१३५.५॥

आदित्या ह जरितरङ्गिरोभ्यो दक्षिणामनयन् ।
तां ह जरितः प्रत्यायंस्तामु ह जरितः प्रत्यायन् ॥२०,१३५.६॥

आदित्यों ने ही स्तुति करने वाले अंगिराओं को दक्षिणा प्रदान की। उस दक्षिणा को स्तोताओं ने ही प्राप्त किया, उसे उन्होंने स्वीकार किया ॥२०,१३५.६॥

तां ह जरितर्नः प्रत्यगृभ्णंस्तामु ह जरितर्नः प्रत्यगृभ्णः ।
अहानेतरसं न वि चेतनानि यज्ञान् एतरसं न पुरोगवामः ॥२०,१३५.७॥

उस (दक्षिणा) को जरिता (स्तोताओं) ने हमारे लिए पाया और स्वीकार किया। हम प्राप्त (पदार्थों) में बल संचार करने वाली तथा यज्ञ में बल संचार करने वाली चेतना को आगे बढ़कर स्वीकार करें ॥२०,१३५.७॥

उत श्वेत आशुपत्वा उतो पद्याभिर्यविष्ठः ।
उतेमाशु मानं पिपर्ति ॥२०,१३५.८॥

यह श्वेत (तेजस्वी) बलवान् पदों से शीघ्र गमन करने वाला है। यह निश्चित रूप से शीघ्रतापूर्वक (कार्य या लक्ष्य की निर्धारित मात्रा) को पूरा करता हैं ॥२०,१३५.८॥

आदित्या रुद्रा वसवस्त्वेनु त इदं राधः प्रति गृभ्णीह्यङ्गिरः ।
इदं राधो विभु प्रभु इदं राधो बृहत्पृथु ॥२०,१३५.९॥

हे अंगिरा ! आदित्य, वसु, रुद्र आदि आपको अनुदान देते हैं, आप इस धन को स्वीकार करें ।यह धन प्रभु (प्रभावयुक्त) विभु (विभूतियुक्त) बृहत् (बड़ा) और पृथु (विस्तार वाला) है ॥२०,१३५.९॥

देवा ददत्वासुरं तद्वो अस्तु सुचेतनम् ।
युष्मामस्तु दिवेदिवे प्रत्येव गृभायत्॥२०,१३५.१०॥

(हे अंगिराओ या मनुष्यो !) देवगण तुम्हें जो बल दें, वह सुचेतना सम्पन्न हो तथा तुम्हें प्रतिदिन प्राप्त हो । तुम उसे प्रत्यक्ष रूप से स्वीकार करो ॥२०,१३५.१०॥

त्वमिन्द्र शर्मरिणा हव्यं पारावतेभ्यः ।
विप्राय स्तुवते वसुवनिं दुरश्रवसे वह ॥२०,१३५.११॥

हे इन्द्रदेव ! आपने (प्राणियों के लिए) आश्रय और हव्य(आहार) पहुँचाया है । विप्रों (याजकों) एवं स्तोताओं के लिए भी धनादि का वहन करें ॥२०,१३५.११॥

त्वमिन्द्र कपोताय छिन्नपक्षाय वञ्चते ।
श्यामाकं पक्वं पीलु च वारस्मा अकृणोर्बहुः ॥२०,१३५.१२॥

है इन्द्रदेव ! आपने पंख से ही चलने वाले कपोत (कबूतर या सहनशीलों) के लिए भी अनेक बार दान, पक्व अन्न, फल, जल आदि बहुत बार (प्रकट या पैदा किया है ॥२०,१३५.१२॥

अरंगरो वावदीति त्रेधा बद्धो वरत्रया ।
इरामह प्रशंसत्यनिरामप सेधति ॥२०,१३५.१३॥

तीन प्रकार से तीन लड़ों (वाले पाश) से बँधे हुए अंगिरा बार-बार कहते हैं कि वे श्रेष्ठ अन्न की प्रशंसा करते हैं तथा निन्दित अन्न को परे (दूर) हटाते हैं ॥२०,१३५.१३॥

सूक्त-१३६

यदस्या अंहुभेद्याः कृधु स्थूलमुपातसत्।
मुष्काविदस्या एजतो गोशफे शकुलाविव ॥२०,१३६.१॥

जब इस (वेदिका या धरा) के सूक्ष्म, स्थूल (भाग नष्ट किये जाते हैं, तो इसके मुष्कविद् (दोषनाशक विशेषज्ञ) गाय के खुर (जितने स्थल में) दो मछलियों की तरह कम्पित होते हैं ॥२०,१३६.१॥

यदा स्थूलेन पससाणौ मुष्का उपावधीत्।
विष्वञ्चा वस्या वर्धतः सिकतास्वेव गर्दभौ ॥२०,१३६.२॥

जब स्थूल पस (पापनाशक) द्वारा मुष्क (विषनाशक) अणुओं का प्रहार किया जाता है, तो धूलि भरे क्षेत्रों में गर्दभों की तरह इसकी दोनों प्रकार की सन्तति का विकास होता है ॥२०,१३६.२॥

यदल्पिकास्वल्पिका कर्कधूकेवषद्यते ।
वासन्तिकमिव तेजनं यन्त्यवाताय वित्पति ॥२०,१३६.३॥

जब झरबेरी की तरह छोटे से छोटे (अति सूक्ष्म कण) गमन करते हैं, तो वे वायुरहित क्षेत्र के लिए वसन्त ऋतु जैसी तेजस्विता (उर्वरता) को प्राप्त करते हैं ॥२०,१३६.३॥

यद्देवासो ललामगुं प्रविष्टीमिनमाविषुः ।
सकुला देदिश्यते नारी सत्यस्याक्षिभुवो यथा ॥२०,१३६.४॥

जब देवतुल्य प्रवाह, प्रधानतायुक्त उत्तम या कोमल क्षेत्र में प्रविष्ट होते हैं, तो नारी (स्त्री, वेदिका या धरा) आँखों देखे सत्य की तरह कुल सम्पन्न हो जाती है ॥२०,१३६.४॥

महानग्न्यतृप्नद्वि मोक्रददस्थानासरन् ।
शक्तिकानना स्वचमशकं सक्तु पद्यम ॥२०,१३६.५॥

महान् अग्नि स्थिर भाव से आकर दोनों (नर-नारी या पृथ्वी-आकाश) को तृप्त करें । हम शक्ति के कानन (उपवन) से अपने चमस आदि में खाद्य पदार्थ, सत्तू आदि प्राप्त करें ॥२०,१३६.५॥

महानग्न्युलूखलमतिक्रामन्त्यब्रवीत्।
यथा तव वनस्पते निरघ्नन्ति तथैवेति ॥२०,१३६.६॥

महान् अग्नि ने उलूखल (हव्य कूटने वाली ओखली) का अतिक्रमण करते हुए कहा हे वनस्पते ! तुम्हें जिस लिए कूटा जाता है, वह (यज्ञ) ही सम्पन्न हो ॥२०,१३६.६॥

महानग्न्युप ब्रूते भ्रष्टोथाप्यभूभुवः ।
यथैव ते वनस्पते पिप्पति तथैवेति ॥२०,१३६.७॥

महान् अग्निदेव ने कहा हे वनस्पते ! तुम नष्ट होकर भी पुनः उत्पन्न हो जाती हो, अत: तुम्हें पीसते हैं, वहायज्ञीय प्रयोग वैसा ही हो ॥२०,१३६.७॥

महानग्न्युप ब्रूते भ्रष्टोथाप्यभूभुवः ।
यथा वयो विदाह्य स्वर्गे नमवदह्यते ॥२०,१३६.८॥

महान् अग्नि ने कहा हे वनस्पते ! तुम नष्ट होकर भी पुन: उत्पन्न हो जाती हो। जैसे जीवन तापित होकर स्वर्ग को प्राप्त होता है, वैसे ही नमनपूर्वक (हविरूप में) तुम्हें होमा जाता है ॥२०,१३६.८॥

महानग्न्युप ब्रूते स्वसावेशितं पसः ।
इत्थं फलस्य वृक्षस्य शूर्पे शूर्पं भजेमहि ॥२०,१३६.९॥

महान् अग्नि ने कहा बहिन (विश्व या काया में संव्याप्त अग्नि) ने पस (पापनाशक) को आवेशित किया है। हम इस प्रक्रिया में उत्पन्न) वृक्ष के फल का (सूपों द्वारा शोधित करके) सेवन करें ॥२०,१३६.९॥

महानग्नी कृकवाकं शम्यया परि धावति ।
अयं न विद्म यो मृगः शीर्ष्णा हरति धाणिकाम् ॥२०,१३६.१०॥

महान् अग्नि 'कृक' ध्वनि के साथ शमी से (अरणी से) दौड़ते हैं। यह पता नहीं कौन सा मृग (भूचर) अपने सिर पर धाणिका (अन्न के भंडार) का वहन करता है ॥२०,१३६.१०॥

महानग्नी महानग्नं धावन्तमनु धावति ।
इमास्तदस्य गा रक्ष यभ मामद्ध्यौदनम् ॥२०,१३६.११॥

महान् अग्नि, दौड़ते हुए महान् अग्नि के पीछे दौड़ते हैं। आप इन गौओं (इन्द्रियों, भूमियों या वाणियों) की रक्षा करें । हे यम (नियमनकर्ता) ! हमें अन्न खिलाइए ॥२०,१३६.११॥

सुदेवस्त्वा महानग्नीर्बबाधते महतः साधु खोदनम् ।
कुसं पीवरो नवत्॥२०,१३६.१२॥

हे सुदेव ! आपको महान् अग्नि महत्त्वपूर्ण साधु (सराहनीय) ऐश्वर्य के लिए बाध्य करते हैं। वे कृशकाय और स्थूल सभी को झुका लेते हैं ॥२०,१३६.१२॥

वशा दग्धामिमाङ्गुरिं प्रसृजतोग्रतं परे ।
महान् वै भद्रो यभ मामद्ध्यौदनम् ॥२०,१३६.१३॥

वशा (वश में की हुई जीवनी शक्ति) जली हुई अँगुली की तरह उग्रता को परे (दूर) हटा देती है । (यह) महान् कल्याणकारी यम रूप ही है, हमें ओदन (पका हुआ अन्न) खिलाएँ ॥२०,१३६.१३॥

(विदेवस्त्वा महानग्नीर्विबाधते महतः साधु खोदनम् ।
कुमारिका पिङ्गलिका कार्द भस्मा कु धावति ॥२०,१३६.१४॥

हे विशिष्ट देवो ! आप को महान् अग्नि बड़े साधु (सराहनीय) ऐश्वर्य के लिए बाध्य करते हैं। कुमारी पिंगलिका सद्य (अग्नि), कार्द (कीचड़ आदि विकारों) को भस्म करती हुई पृथ्वी पर दौड़ती है ॥२०,१३६.१४॥

महान् वै भद्रो बिल्वो महान् भद्र उदुम्बरः ।
महामभिक्त बाधते महतः साधु खोदनम् ॥२०,१३६.१५॥

कल्याणकारी बिल्व (वृक्ष या भेदक अग्नि) महान् है । कल्याणकारी उदुम्बर (वृक्ष या शक्ति शाली अग्नि) भी महान् है । यह महान् प्रतिष्ठा वाले बड़े साधु (सराहनीय) ऐश्वर्य के लिए बाध्य करते हैं ॥२०,१३६.१५॥

यः कुमारी पिङ्गलिका वसन्तं पीवरी लभेत्।
तैलकुण्डमिमाङ्गुष्ठं रोदन्तं शुदमुद्धरेत्॥२०,१३६.१६॥

जो कुमारी पिंगलिका वसन्त (यौवन को) प्राप्त करे, वह तप्त तेलकुण्ड (व्यसनों) में पीड़ा पाती हुई शुद्धता का उद्धार करे ॥२०,१३६.१६॥

सूक्त-१३७

यद्ध प्राचीरजगन्तोरो मण्डूरधाणिकीः ।
हता इन्द्रस्य शत्रवः सर्वे बुद्बुदयाशवः ॥२०,१३७.१॥

गोले धारण करने वाली जब तुम अग्रिम होकर आगे बढ़ती हो, तो वीर इन्द्रदेव के सभी शत्रु जल के बुद्बुदों के समान विनष्ट हो जाते हैं ॥२०,१३७.१॥

कपृन् नरः कपृथमुद्दधातन चोदयत खुदत वाजसातये ।
निष्टिग्र्यः पुत्रमा च्यावयोतय इन्द्रं सबाध इह सोमपीतये ॥२०,१३७.२॥

हे कर्मशील मनुष्यो ! इन्द्रदेव श्रेष्ठ सुखों के दाता हैं। उन सुखदायक इन्द्रदेव को अपने अन्तरंग में धारण करो और अन्न, बल, ऐश्वर्यादि लाभ के लिए उन्हें प्रेरित करो। उनकी प्रार्थना करो तथा उन्हें शान्ति प्रदान करो। इस भूलोक में संरक्षण, कष्टों के निवारण के लिए तथा सोमपान के निमित्त अदिति पुत्र इन्द्रदेव का आवाहन करो॥२०,१३७.२॥

दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।

सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत्॥२०,१३७.३॥

हम विजय से सम्पन्न, व्यापक तथा वेगवान् दधिक्रादेव की प्रार्थना करते हैं। वे हमारी मुख आदि इन्द्रियों को सुरभित (श्रेष्ठ) बनाएँ तथा आयु की वृद्धि करें ॥२०,१३७.३॥

सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः ।
पवित्रवन्तो अक्षरन् देवान् गछन्तु वो मदाः ॥२०,१३७.४॥

मधुर और हर्ष प्रदायक सोमरस पवित्र होकर इन्द्रदेव के लिए तैयार होता है । हे सोमदेव ! आपका यह आनन्ददायक रस देवगणों के पास पहुँचे ॥२०,१३७.४॥

इन्दुरिन्द्राय पवत इति देवासो अब्रुवन् ।
वाचस्पतिर्मखस्यते विश्वस्येशान ओजसा ॥२०,१३७.५॥

इन्द्र के लिए शास्त्रों के अनुसार सोम शोधित होता है ।वह ज्ञानरक्षक, समर्थ सोम यज्ञ में प्रयुक्त होता है ॥२०,१३७.५॥

सहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमीङ्खयः ।
सोमः पती रयीणां सखेन्द्रस्य दिवेदिवे ॥२०,१३७.६॥

वाणी के प्रेरक, ऐश्वर्यवान्, इन्द्रदेव के मित्र, सोम प्रतिदिन सहस्रों धाराओं से कलश में शोधित होता है ॥२०,१३७.६॥

अव द्रप्सो अंशुमतीमतिष्ठदियानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः ।
आवत्तमिन्द्रः शच्या धमन्तमप स्नेहितीर्नृमणा अधत्त ॥२०,१३७.७॥

त्वरित गतिशील दस हजार सैनिकों सहित आक्रमण करने वाले, सम्पूर्ण संसार को दुःख देने वाले, 'अंशुमती नदी (यमुना) के तट्पर विद्यमान (सबको आकर्षित करके अपने चंगुल में फँसा लेने वाले) कृष्णासुर पर सर्वप्रिय इन्द्रदेव ने प्रत्याक्रमण करके सेनासहित उसे पराजित कर दिया ॥२०,१३७.७॥

द्रप्समपश्यं विषुणे चरन्तमुपह्वरे नद्यो अंशुमत्याः ।
नभो न कृष्णमवतस्थिवांसमिष्यामि वो वृषणो युध्यताजौ ॥२०,१३७.८॥

इन्द्रदेव ने कहा 'अंशुमती नदी के तट पर गुफाओं में घूमते हुए 'कृष्णासुर' को हमने सूर्य के सदृश देख लिया है । हे शक्तिशाली मरुतो ! हम आपके सहयोग की आकांक्षा करते हैं । आप संग्राम में उनका संहार करें ॥२०,१३७.८॥

अध द्रप्सो अंशुमत्या उपस्थेऽधारयत्तन्वं तित्विषाणः ।
विशो अदेवीरभ्याचरन्तीर्बृहस्पतिना युजेन्द्रः ससाहे ॥२०,१३७.९॥

अंशुमती नदी के तट पर शीघ्रगामी कृष्णासुर तेजसम्पन्न होकर निवास करता है । इन्द्रदेव ने बृहस्पतिदेव की सहायता से सभी ओर से आक्रमण के लिए बढ़ती हुई उसकी सेनाओं को परास्त किया ॥२०,१३७.९॥

त्वं ह त्यत्सप्तभ्यो जायमानोऽशत्रुभ्यो अभवः शत्रुरिन्द्र ।
गूल्हे द्यावापृथिवी अन्वविन्दो विभुमद्भ्यो भुवनेभ्यो रणं धाः ॥२०,१३७.१०॥

अजातशत्रु हे इन्द्रदेव ! वृत्रासुर तथा सात राक्षसों के उत्पन्न होते ही आप उनके शत्रु हो गये । (राक्षसों द्वारा स्थापित किये गये) अंधकार से द्युलोक और पृथ्वी को (उद्धार करके) आपने प्रकाशित किया । अब आपने इनके लोकों को भली-भाँति स्थिर करके ऐश्वर्यवान् तथा सौन्दर्यशाली बना दिया ॥२०,१३७.१०॥

त्वं ह त्यदप्रतिमानमोजो वज्रेण वज्रिन् धृषितो जघन्थ ।
त्वं शुष्णस्यावातिरो वधत्रैस्त्वं गा इन्द्र शच्येदविन्दः ॥२०,१३७.११॥

वज्र धारण करने वाले हे इन्द्रदेव ! आप रिपुओं को दबाने वाले हैं। असीमित शक्ति वाले शुष्णासुर को आपने अपने वज्र से विनष्ट किया । राजर्षि 'कुत्स' के निमित्त आपने उसे (शुष्णासुर को) अपने हथियारों द्वारा काट डाली तथा अपने बल से गौओं (किरणों या जल धाराओं) को उत्पन्न किया ॥२०,१३७.११॥

(तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे ।
स वृषा वृषभो भुवत्॥२०,१३७.१२॥

जो वृत्रहन्ता हैं, हम उनकी प्रशंसा और स्तुति करते हैं। वे दानदाता इन्द्रदेव हमें धन-धान्य से परिपूर्ण करें ॥२०,१३७.१२॥

इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स मदे हितः ।
द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः ॥२०,१३७.१३॥

दान देने के लिए ही उत्पन्न हुए इन्द्रदेव बलवान् बनने के लिए सोमपान करते हैं। प्रशंसनीय कार्य करने वाले वे देव, सोम पिलाये जाने योग्य हैं ॥२०,१३७.१३॥

गिरा वज्रो न संभृतः सबलो अनपच्युतः ।

ववक्ष ऋष्वो अस्तृतः ॥२०,१३७.१४॥

वज्रपाणि, स्तुत्य, बलवान्, तेजस्वी और अपराजेय इन्द्रदेव साधकों को ऐश्वर्य देने की इच्छा रखते हैं ॥२०,१३७.१४॥

सूक्त-१३८

महामिन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमामिव ।
स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे ॥२०,१३८.१॥

जल की वृष्टि करने वाले मेघों के सदृश महान् और तेजस्वी वे यशस्वी इन्द्रदेव अपने प्रिय पात्रों की स्तुतियों से समृद्ध होकर व्यापक रूप ग्रहण करते हैं ॥२०,१३८.१॥

प्रजामृतस्य पिप्रतः प्र यद्भरन्त वह्नयः ।
विप्रा ऋतस्य वाहसा ॥२०,१३८.२॥

जब आकाश मार्ग से गमन करने में सक्षम अश्व, यज्ञ में जाने के लिए तत्पर इन्द्रदेव को वेगपूर्वक (यज्ञस्थल पर) ले जाते हैं, तब उद्गातागण यज्ञ में प्रयुक्त होने वाले मंत्रों से उन इन्द्रदेव की स्तुति करते हैं ॥२०,१३८.२॥

कण्वाः इन्द्रं यदक्रत स्तोमैर्यज्ञस्य साधनम् ।
जामि ब्रुवत आयुधम् ॥२०,१३८.३॥

जब कण्व वंशीय ऋषिगण स्तुतियों के माध्यम से इन्द्रदेव को यज्ञ साधक (यज्ञ रक्षक) बना लेते हैं, तब (यज्ञ रक्षार्थ) शस्त्रों की आवश्यकता नहीं रह जाती, ऐसा कहा गया है ॥२०,१३८.३॥

सूक्त-१३९

आ नूनमश्विना युवं वत्सस्य गन्तमवसे ।
प्रास्मै यछतमवृकं पृथु छर्दिर्युयुतं या अरातयः ॥२०,१३९.१॥

हे अश्विनीकुमारो ! आप दोनों वत्स अषि की सुरक्षा के निमित्त निश्चित रूप से पधारें । उन्हें क्रोधी मनुष्यों से सुरक्षित विशाल आवास प्रदान करें । तत्पश्चात् आप दोनों उनके रिषुओं को दूर भगाएँ ॥२०,१३९.१॥

यदन्तरिक्षे यद्दिवि यत्पञ्च मानुषामनु ।
नृम्णं तद्धत्तमश्विना ॥२०,१३९.२॥

हे अश्विनीकुमारो ! जो ऐश्वर्य अन्तरिक्ष, दिव्यलोक तथा (पृथ्वी पर) पाँच प्रकार के मनुष्यों के पास उपलब्ध रहता है, वहीं ऐश्वर्य हमें भी प्रदान करें ॥२०,१३९.२॥

ये वां दंसांस्यश्विना विप्रासः परिमामृशुः ।
एवेत्काण्वस्य बोधतम् ॥२०,१३९.३॥

हे अश्विनीकुमारो ! कण्व पुत्रों ने तथा जिन विद्वान् पुरुषों ने अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा आपके कर्मों को ज्ञात कर लिया है, आप उनकी जानकारी रखें अर्थात् उनकी रक्षा करें ॥२०,१३९.३॥

अयं वां घर्मो अश्विना स्तोमेन परि षिच्यते ।
अयं सोमो मधुमान् वाजिनीवसू येन वृत्रं चिकेतथः ॥२०,१३९.४॥

हे अश्विनीकुमारो ! आपके निमित्त यह घर्म (गर्मी या ऊर्जा उत्पादक यज्ञ अथवा सोम) स्तोत्रों (मंत्रशक्ति) द्वारा सिञ्चित किया जा रहा है । हे बलसम्पन्न देवो ! यही वह मधुर सोम है, जिससे आप वृत्र को देख लेते हैं ॥२०,१३९.४॥

यदप्सु यद्वनस्पतौ यदोषधीषु पुरुदंससा कृतम् ।
तेन माविष्टमश्विना ॥२०,१३९.५॥

हे अश्विनीकुमारो ! जिस शक्ति से आप दोनों ने ओषधियों, विशाल वृक्षों तथा जल को रक्षित किया, उसी बल से हमारी भी रक्षा करें ॥२०,१३९.५॥

सूक्त-१४०

यन् नासत्या भुरण्यथो यद्वा देव भिषज्यथः ।
अयं वां वत्सो मतिभिर्न विन्धते हविष्मन्तं हि गछथः ॥२०,१४०.१॥

हे अश्विनीकुमारो ! आप दोनों जगत् के पालनकर्ता तथा सभी को स्वस्थ रखने वाले हैं केवल ज्ञान के द्वारा ये स्तोतागण आपको नहीं प्राप्त कर सकते, क्योंकि आप तो हवि प्रदान करने वाले याजकों के निकट जाते हैं ॥२०,१४०.१॥

आ नूनमश्विनोर्ऋषि स्तोमं चिकेत वामया ।
आ सोमं मधुमत्तमं घर्मं सिञ्चादथर्वणि ॥२०,१४०.२॥

अश्विनीकुमारों की स्तुतियों को स्तोताओं ने अपनी श्रेष्ठ बुद्धि से सम्पन्न किया। उन्होंने मधुर सोमरस तथा घृत सिञ्चित हवि को समर्पित किया ॥२०,१४०.२॥

आ नूनं रघुवर्तनिं रथं तिष्ठाथो अश्विना ।
आ वां स्तोमा इमे मम नभो न चुच्यवीरत ॥२०,१४०.३॥

हे अश्विनीकुमारो ! आप दोनों तेज चलने वाले रथ पर आरूढ़ होते हैं। नभ की तरह विस्तृत हमारी स्तुतियाँ आपको प्राप्त हों ॥२०,१४०.३॥

यदद्य वां नासत्योक्थैराचुच्युवीमहि ।
यद्वा वाणीभिरश्विनेवेत्कण्वस्य बोधतम् ॥२०,१४०.४॥

हे सत्यनिष्ठ अश्विनीकुमारो ! आज जिस प्रकार शस्त्र वचनों (स्तुतियों) द्वारा आपको बुलाया गया है, उसी प्रकार मुझ कण्व ऋषि द्वारा स्तोत्रों के माध्यम से आपका आवाहन किया जाता है ॥२०,१४०.४॥

यद्वां कक्षीवामुत यद्व्यश्व ऋषिर्यद्वां दीर्घतमा जुहाव ।
पृथी यद्वां वैन्यः सादनेष्वेवेदतो अश्विना चेतयेथाम् ॥२०,१४०.५॥

हे अश्विनीकुमारो ! जिस प्रकार आप दोनों का कक्षीवान्, व्यश्व, दीर्घतमा ने आवाहन किया । जिस प्रकार यज्ञ स्थल पर वेनपुत्र पृथी ने आवाहित किया था, उसी प्रकार हम आपको इस समय आवाहन करते हैं, आप इसे (हृद्गत भाव को) जानें ॥२०,१४०.५॥

सूक्त-१४१

यातं छर्दिष्पा उत परस्पा भूतं जगत्पा उत नस्तनूपा ।
वर्तिस्तोकाय तनयाय यातम् ॥२०,१४१.१॥

सबके घरों की रक्षा करने वाले हे अश्विनीकुमारो ! आप हमारे तथा हमारे घर और समस्त संसार के पालक बनें । आप हमारे पुत्र-पौत्रों के कल्याण के लिए घर पर पधारें ॥२०,१४१.१॥

यदिन्द्रेण सरथं याथो अश्विना यद्वा वायुना भवथः समोकसा ।
यदादित्येभिर्ऋभुभिः सजोषसा यद्वा विष्णोर्विक्रमणेषु तिष्ठथः ॥२०,१४१.२॥

हे अश्विनीकुमारो ! यदि आप इन्द्रदेव के साथ उनके रथ पर आसीन होकर गमन करते हैं, वायुदेव के साथ एक जगह निवास करते हैं, अदिति पुत्रों अथवा ऋभु संज्ञक देवों के साथ प्रेमपूर्वक रहते हैं तथा विष्णु के विशिष्ट पदक्षेप के साथ तीनों लोकों में विराजते हैं, तो हमारे निकट भी पधारें ॥२०,१४१.२॥

यदद्याश्विनावहं हुवेय वाजसातये ।
यत्पृत्सु तुर्वणे सनस्तच्छ्रेष्ठमश्विनोरवः ॥२०,१४१.३॥

अश्विनीकुमारों का संरक्षण उच्च कोटि का है । संग्राम में रिपुओं का विनाश करने में वे पूर्ण सक्षम हैं, अत: अपनी रक्षा के लिए यदि उन्हें हम पुकारें, तो वे निश्चित रूप से पधारेंगे ॥२०,१४१.३॥

आ नूनं यातमश्विनेमा हव्यानि वां हिता ।
इमे सोमासो अधि तुर्वशे यदाविमे कण्वेषु वामथ ॥२०,१४१.४॥

यह सोमरस 'तुर्वश' और 'यद्' के घर पर विद्यमान है, यह कण्व पुत्रों को प्रदान किया गया था। हे अश्विनीकुमारो ! यह हव्यरूष सोमरस आपके लिए प्रस्तुत है, अत: आप (इसका पान करने के लिए) पधारें ॥२०,१४१.४॥

यन् नासत्या पराके अर्वाके अस्ति भेषजम् ।
तेन नूनं विमदाय प्रचेतसा छर्दिर्वत्साय यछतम् ॥२०,१४१.५॥

सत्यनिष्ठ हे अश्विनीकुमारो ! जो ओषधियाँ निकट तथा दूर प्रदेश में उपलब्ध हैं, उनसे संयुक्त रहने हेतु अहंकाररहित वत्स ऋषि के लिए श्रेष्ठ आवास प्रदान करें ॥२०,१४१.५॥

॥अथर्ववेद – विंश काण्डम्॥

सूक्त-१४२

अभुत्स्यु प्र देव्या साकं वाचाहमश्विनोः ।
व्यावर्देव्या मतिं वि रातिं मर्त्येभ्यः ॥२०,१४२.१॥

दोनों अश्विनीकुमारों की दिव्य वाणियों से हम चैतन्य हो गये हैं। हे उषा देवि ! आप अन्धकार को दूर करके सभी मनुष्यों को सद्बुद्धि तथा उपयुक्त ऐश्वर्य प्रदान करें ॥२०,१४२.१॥

प्र बोधयोषो अश्विना प्र देवि सूनृते महि ।
(२०,१४२प्र यज्ञहोतरानुषक्प्र मदाय श्रवो बृहत्॥२०,१४२.२॥

हे प्रकाशमान तथा महान् उषा देवि ! आप अश्विनीकुमारों को प्रेरित करें । हे याजको ! आप अश्विनीकुमारों को आनन्दप्रदायक प्रचुर हव्य प्रदान करें ॥२०,१४२.२॥

यदुषो यासि भानुना सं सूर्येण रोचसे ।
आ हायमश्विनो रथो वर्तिर्याति नृपाय्यम् ॥२०,१४२.३॥

हे उषादेवि ! जब आप स्वर्णिम किरणों से सम्पन्न होकर चलती हैं, सूर्य के तेज से प्रकाशित हो जाती हैं, उस समय

अश्विनीकुमारों का रथ मनुष्यों को स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने के लिए यज्ञ मण्डप में प्रवेश करता है ॥२०,१४२.३॥

यदापीतासो अंशवो गावो न दुह्र ऊधभिः ।
यद्वा वाणीरनुषत प्र देवयन्तो अश्विना ॥२०,१४२.४॥

हे अश्विनीकुमारो !जब पीतवर्ण की सोमलताएँ गौ के थन से दूध निकालने के समान निचोड़ी जाती हैं तथा जब हम देवत्व की कामना से अपने स्तुति वचनों द्वारा आपकी प्रार्थना करते हैं, तब आप हमारे संरक्षक हों ॥२०,१४२.४॥

प्र द्युम्नाय प्र शवसे प्र नृषाह्याय शर्मणे ।
प्र दक्षाय प्रचेतसा ॥२०,१४२.५॥

श्रेष्ठ ज्ञान से सम्पन्न हे अश्विनीकुमारों ! आप हमें ऐसी प्रेरणा प्रदान करें, जिससे हम शक्ति, ऐश्वर्य, सहनशीलता तथा श्रेष्ठ कार्य करने का कौशल प्राप्त कर सकें ॥२०,१४२.५॥

यन् नूनं धीभिरश्विना पितुर्योना निषीदथः ।
यद्वा सुम्नेभिरुक्थ्या ॥२०,१४२.६॥

प्रशंसा के योग्य हे अश्विनीकुमारो ! आप हमारे पिता तुल्य हैं । अतः जिस प्रकार पिता अपने पुत्रों के लिए प्रत्येक सुख-

साधन उपलब्ध कराता है, उसी प्रकार आप हमें हर्ष प्रदान करें ॥२०,१४२.६॥

सूक्त-१४३

तं वां रथं वयमद्या हुवेम पृथुज्रयमश्विना संगतिं गोः ।
यः सूर्यां वहति वन्धुरायुर्गिर्वाहसं पुरुतमं वसूयुम् ॥२०,१४३.१॥

हे अश्विनीकुमारो ! आज हम आपके प्रसिद्ध वेग वाले तथा गौ प्रदान करने वाले रथ को आहूत करते हैं। काष्ठ स्तम्भयुक्त वह रथ सूर्या को भी धारण करता है । वह स्तुतियों को ढोने वाला, विशाल तथा ऐश्वर्यवान् है॥२०,१४३.१॥

युवं श्रियमश्विना देवता तां दिवो नपाता वनथः शचीभिः ।
युवोर्वपुरभि पृक्षः सचन्ते वहन्ति यत्ककुहासो रथे वाम् ॥२०,१४३.२॥

हे द्युलोक (अथवा दिव्यता) का पतन न होने देने वाले अश्विनीकुमारो ! आप दोनों देवता हैं। आप दोनों उस श्रेष्ठता को अपने बल के द्वारा प्राप्त करते हैं। जब विशाल अश्वों वाले रथ आपको वहन करते हैं, तब आप दोनों के शरीर को सोमरस पुष्ट करता है ॥२०,१४३.२॥

को वामद्या करते रातहव्य ऊतये वा सुतपेयाय वार्कैः ।
ऋतस्य वा वनुषे पूर्व्याय नमो येमानो अश्विना ववर्तत्॥२०,१४३.३॥

कौन सोमरस प्रदाता आज अपनी सुरक्षा के लिए अथवा अभिषुत सोमरस को पीने के लिए आपकी प्रार्थना करते हैं ? नमन करने वाले कौन लोग आप दोनों को यज्ञ के लिए प्रवृत्त करते हैं? ॥२०,१४३.३॥

हिरण्ययेन पुरुभू रथेनेमं यज्ञं नासत्योप यातम् ।
पिबाथ इन् मधुनः सोम्यस्य दधथो रत्नं विधते जनाय ॥२०,१४३.४॥

अनेकों प्रकार से अपनी सत्ता को प्रकट करने वाले तथा सत्य का पालन करने वाले हैं। अश्विनीकुमारो ! आप दोनों इस यज्ञ में स्वर्णिम रथ द्वारा पधारें, मधुर सोमरस पिएँ तथा पुरुषार्थी मनुष्यों को मनोहर ऐश्वर्य प्रदान करें ॥२०,१४३.४॥

आ नो यातं दिवो अछ पृथिव्या हिरण्ययेन सुवृता रथेन ।
मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः सं यद्ददे नाभिः पूर्व्या वाम् ॥२०,१४३.५॥

श्रेष्ठ स्वर्णिम रथ द्वारा आप दोनों द्युलोक या भूलोक से हमारी ओर पधारें । आपके अभिलाषी अन्य याजक आपको बीच में ही अवरुद्ध न कर सकें, क्योंकि पुरातनकाल से ही हमने आपके लिए स्तुतियाँ प्रस्तुत की हैं ॥२०,१४३.५॥

नू नो रयिं पुरुवीरं बृहन्तं दस्रा मिमाथामुभयेष्वस्मे ।
नरो यद्वामश्विना स्तोममावन्त्सधस्तुतिमाजमीह्लासो अग्मन् ॥२०,१४३.६॥

हे रिपुओं के संहारक अश्विनीकुमारो ! आप अनेक वीरों से सम्पन्न प्रचुर ऐश्वर्य हम दोनों के लिए प्रदान करें । हे अश्विनीकुमारो ! पुरुमीढ़ के स्तोताओं ने आपको स्तुति द्वारा प्राप्त किया है और अजमीढ़ के स्तोताओं की प्रशंसा भी उसी के साथ सम्मिलित है ॥२०,१४३.६॥

इहेह यद्वां समना पपृक्षे सेयमस्मे सुमतिर्वाजरत्ना ।
उरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवद्रिक् ॥२०,१४३.७॥

शक्तिरूपी अन्न को अपने समीप रखने वाले हे अश्विनीकुमारो ! समान विचारों वाले आप दोनों के लिए हम

स्तुतियाँ समर्पित करते हैं। वे श्रेष्ठ स्तुतियाँ हम याजकों के लिए फल देने वाली हों । हे अश्विनीकुमारो ! आप दोनों हमारी सुरक्षा करें । हमारी कामनायें आपकी ओर गमन करती हैं ॥२०,१४३.७॥

मधुमतीरोषधीर्द्याव आपो मधुमन् नो भवत्वन्तरिक्षम् ।
क्षेत्रस्य पतिर्मधुमान् नो अस्त्वरिष्यन्तो अन्वेनं चरेम ॥२०,१४३.८॥

वनौषधियाँ हमारे लिए मधुरता से पूर्ण हों तथा धुलोक, अन्तरिक्ष और जल हमारे लिए मधुर हों । क्षेत्र के स्वामी हमारे लिए मधु-सम्पन्न हों । हम रिपुओं द्वारा अहिंसित होकर उनका अनुगमन करें ॥२०,१४३.८॥

पनाय्यं तदश्विना कृतं वां वृषभो दिवो रजसः पृथिव्याः ।
सहस्रं शंसा उत ये गविष्टौ सर्वामित्तामुप याता पिबध्यै ॥२०,१४३.९॥

हे अश्विनीकुमारो ! अन्तरिक्ष से पृथ्वी पर जल की वृष्टि करने वाला आपका कार्य अत्यन्त सराहनीय है। गौओं को खोजने जैसे सहस्रों पुण्य कार्यों के समय सोमरस पान करने के लिए आप यहाँ पधारें ॥२०,१४३.९॥

॥इति विंश काण्डम्॥